।।श्री मते रामानुजाय नमः।।

श्री दिव्य ८४ कोस की बृजधाम की परम पावन परिक्रमा



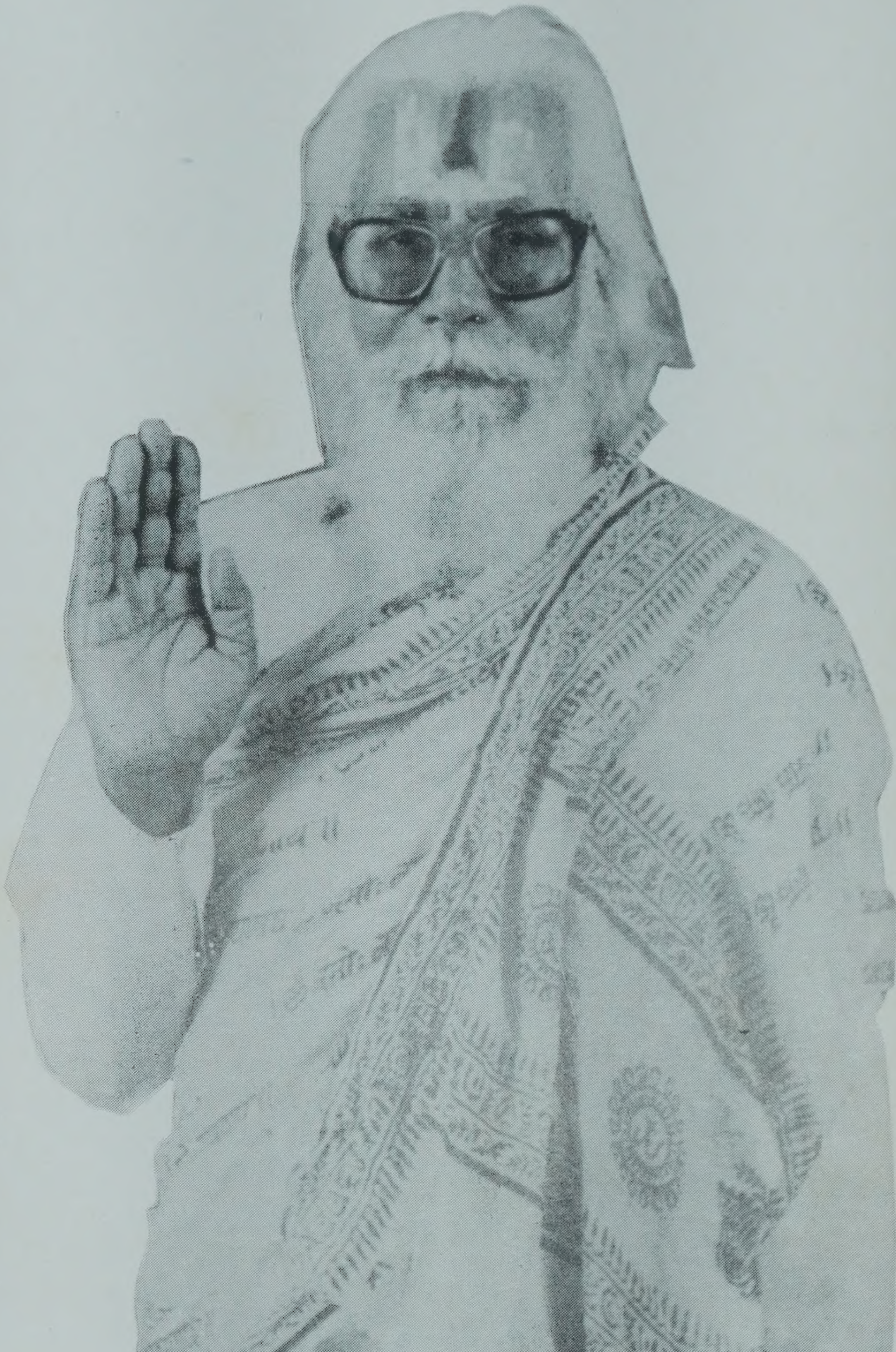
संत के० पी० रामानुजदास

(संतजी)

सन्त निवास – गोवर्धन, मथुरा (यू०पी०)

मूल्य : सप्रेम भेंट

संस्करण प्रथम



संत जी

:श्री हरिः

श्री रामानुजाय नमः

श्री ब्रज मण्डलाय नमः

आमुख

परम पूज्य गुरुदेव अनन्त श्री विभूषित परम पावन संत श्री के०पी० रामानुजदास (श्री सन्तजी) की असीम अनुकम्पा से यह पुस्तक छपवाने की सेवा करते हुए मझे प्रसन्नता है। न तो मैं ब्रज–यात्रा में भाग ले सका और न उसकी व्यवस्था में। बाई पास सर्जरी, पेस मेकर, और पैरालाइसिस से जर्जरित शरीर की जीवन–यात्रा श्री गुरु–कृपा से ही चल रही है।

फिर भी मेरे ताऊजी की प्रेरणा और दामाद श्री राजकुमार सिन्हा व पुत्री श्रीमती अर्पिता सिन्हा के सहयोग से श्री दिव्य ८४ कोस की बृज–धाम की परम–पावन परिक्रमा का वर्णन पुस्तकाकार रूप में प्रस्तुत है।

श्री संतजी का कृपा पात्र शिष्य।

देवेन्द्र श्रीवास्तव

रामानुजदास

(कम्प्यूटर ज्योतिषी, रत्न विशेषज्ञ, भू० पू० प्राचार्य)

बैठक 143 बी, फोन 2256719
निवास 46–ए, फोन : 2253020
2258086

पॉकेट–1
मयूर विहार, फेस–I
दिल्ली–110091

।।श्री।।

वन्दे बृज वसुन्धराम् !

कृष्ठां नाराणं वन्दे, कृष्णं वन्दे बृजप्रियम।
कृष्णं द्वैपायनं वन्दे, कृष्पं वन्दे पृथासुतम्।।
श्री राधारानी की जय, महारानी की जय।

श्री राधारानी जी किसी भाग्यवान् पर ही कृपा करती हैं, जिससे कि उसके मन में इस महान् पवित्र बृजभूमि के प्रति अनुराग उमड़ता है, तीर्थ–स्थलों के दर्शन, सन्त–महात्माओं, वैष्णवों तथा ब्राह्मणों की कृपा–याचना करना और सतत् पुण्य कार्यों में अपना उपार्जित धन लगाना। ऐसा अनेकों बार देखा गया है कि ठाकुर जी ने किसी को प्रेरणा दी कि वह मन्दिर, कुण्ड, सरोवर का निर्माण करे अथवा भण्डारे में अपना पूर्ण सहयोग दें।

इस बार हमारे परमभक्त श्री महेन्द्र कुमार सुशीला रानी अग्रवाल (पेट्रोल वाले) पर युगल सरकार की साक्षात् कृपा हुई। हम सबके सामने यह बड़ी अनूठी बात है कि उनके मन में यह प्रेरणा हुई कि अपने माता–पिता श्रीमती एवं अतर देवी एवं श्री गौरी शंकर जी सर्राफ श्रीमती अतर देवी एवं बिटिया संध्या अग्रवाल (एम०ए०) की स्मृति में "बृज चौरासी कोस की यात्रा" वाहनों द्वारा उठाई जाये और "श्रीमद्भागवत कथा का सप्ताह" परमपूजनीय श्री संतजी महाराज के सान्धिय में प्रारंभ किया जाये।

ऐसे पावन–पुण्यमय कार्य में श्री संतजी महाराज का पूर्ण सहयोग स्वयं तथा अपने सेवकों द्वारा सब प्रकार से सदा ही देने का रहा है। श्री महेन्द्रा जी का परम सौभाग्य है कि उन्होंने, ऐसे महापुरुष की कृपा की अभिलाषा की, जबकि उन्हें सन्त जी के बारे में उनकी शक्तियों का कुछ भी पता न था। यह मानना पड़ेगा कि यह सब हमारी लाड़लीज् की महान् कृपा का अलभ्य फल है, जो महेन्द्र जी सुशीला धर्मपत्नी व उनके परिवार पर, उनके अनजाने में बरस पड़ा है। हममें से हर एक यही चाहेगा कि किशोरी जी की प्रेम–रस की यह बाढ़ उन्हें सदा लपेटे रहे और किंचित् रस हम लोगों को भी प्राप्त होता रहे।

शुभारम्भ-यात्रा का प्रथम दिवस

(२२ दिसम्बर १९९५)

श्री महेन्द्रा जी ने अमावस्या दि० २२ दिसम्बर १९९५ को प्रातः काल श्री गणेश, नवग्रह आदि का पजून कर "श्रीमदभागवत" की पूजा अर्चा सम्पन्न कर, व्यास गद्दी पर विराजमान भागवताचार्य पं० श्री जगदीश चन्द्र शास्त्री (मानगली, सेवाकुंज) श्री वृन्दावनधाम वासी की यथाविधि पूजा की और इसी प्रकार मूलपाठ के गायक सर्वश्री नारायण शास्त्री, श्री नारायण शान्डिल्य, श्री युवराज शास्त्री, श्री माधव शास्त्री, श्री केशव आत्रेय तथा श्री देवराज शास्त्री की सेवा–पूजा की। मूलपाठ के श्लोक साक्षात् मंत्र हैं, जिनका मधुर स्वर में इन महानुभावों ने गायन प्रारम्भ किया। श्री महेन्द्र जी ने परिवार सहित तथा हम सबने मां बृजेश्वरीजू तथा श्री गिरिराज जी को साष्टांग दण्डवत् प्रणाम् करके ८.२५ पर यात्र का शुभारम्भ किया।

इस यात्रा में सब छोटे–बड़े, अनुमानतः २०० यात्री थे। सौभाग्य की बात है कि इस यात्र में ४ भागवताचार्य थे और सज्जनद्वयव श्री सेवक जी तथा श्री रवि शर्मा अपने–अपने कैमरों भी बराबर फोटो लेते जा रहे थे। 'जगत टाइम्स' के संपादक साथ में रहे, जो नित्य यात्रा का वर्ण अपने दैनिक पत्र में प्रकाशित करते रहे। ग्वालियर के शास्त्री जी काव्य–भाषा में वर्णन सुनाते रहे तीन डाक्टर महानुभाव मथुरा व गोवर्धन के भी बराबर साथ रहे।

यह चौरासी कोस की पावन यात्रा पूज्य श्री संतजी महाराज एवं श्री निर्वाण जी महारा के सान्धिय–संरक्षण में वाहनों के द्वारा की गई। प्रथम दिन तीन बसें एवं दस छोटै–बड़े वाहन इ यात्रा में थे। यह यात्रा २२ से २८ दिसम्बर तक चली।

बस में बैठे हुए 'मानसी गंगा' तथा 'ठाकुर हरदेव जी' को दंडवत् प्रणाम् करते हुए, दानघाट पर 'दान बिहारी श्री गिरिराज जी' को दंडवत् करते हुए वाहनों द्वारा 'गोविंद कुण्ड', 'एरावत कुण्ड 'हरिजी कुण्ड' होते हुए 'गुलाल कुण्ड' पहुंचे। वहां पर महाप्रभु जी की बैठक, उनके व्यवहार क वस्तुओं का अवलोकन किया फिर श्याम–ढाक पहुंचे। वहां पर कदम–खंडी, श्याम कुण्ड, राम मन्दिर दिव्य शिवलिंग के दर्शन सपरिवार किए। यहां ढाक के पत्ते दौने के रुप में बने हुए हैं, जिसमें ठाकु जी अपने परिवार के साथ दूध पीते रहे व विविध–प्रकार की लीलाएं करते रहे। यहां पर भक्त ने श्री संतजी से प्रार्थना की कि आगे चलकर हर स्थल का वर्णन–विवरण पहिले से प्राप्त होत जाये तो अच्छा रहेगा। महाराज जी ने कहा कि विशेष वर्णन पुस्तिका के रुप में मिलेगा क्योंकि इसमें समय लगेगा और छोटी नवरात्रि की सेवा के लिए संध्या तक सन्त–निवास पहुंचना आवश्यक है।

अतः ८.२५ पर प्रस्थान कर गुलाल कुण्ड होते हुए वाहन में बैठे हुए ही डींग के सरोवरों क दर्शन किया। काम–वन पहुंचकर सर्वप्रथम विमल कुण्ड पर आचमन किया। सीढ़ियों पर काई जमी होने के कारण हमारे वृद्ध श्री बैरी जी कुण्ड में फिसल गए। ठाकुर जी की कृपा से उन्हें निकाल लिया गया और कोई चोट नहीं आई। पश्चात् 'विमला देवी' के मंदिर में पहुंचकर दर्शन किए। मंदिर के अधिकारी ने बताया कि 'चंपक नगरी' सिंध देश में राजा विमल थे। उनके १६०० पुत्रियां थीं पुत्र नहीं था। ये वे ही कन्यायें थीं जिनके मन में सीता–स्वयंवर के समय राम का रुप देखकर उनसे विवाह की इच्छा उत्पन्न हुई थी। श्री राम जी ने कहा कि, 'द्वापर में तुम लोगों की इच्छा पूर्ण करूंगा।' श्री कृष्ण ने द्वापर में उनका वरण किया। विमला बड़ी पुत्री थी, उसी के नाम पर मंदिर व मूर्ति है।

कामवन के श्री सिद्धबाबा जी महाराज की समाधि के दर्शन किए। उनके उत्सव पर बृज के अनेकों साधु–महात्मा बिना बुलाए आकर प्रसाद पाते हैं। उनके परमशिष्य गोवर्धन के श्री सिद्धबाबा जी महाराज थे और उनके भी सेवक रनवारी के श्री सिद्धबाबा जी महाराज थे, जिनके विरहाग्नि प्रकट होकर शरीर दाह हो गया था।

विमल कुण्ड के चारों ओर का स्थल एक निर्जन स्थान था। इसलिए सिद्धबाबा अपनी कोठरी में बंद रह कर भजन किया करते थे। एक बार कृष्ण, बलराम दोनों भाइयों ने कुटी का दरवाजा खटखटा कर कहा कि "बाबा, बहुत प्यास लग रही है, पानी पिलाय दे।" अंदर से ही बाबा ने कह दिया, "भाग जाओ, हमें भजन करने दो।" फिर भी ठाकुर जी नहीं माने तो बाबा बाहर निकल

कर जल पिलाने लगे। उनके स्वरुप के दर्शन करके विभोर हो गए, उन्हें यह भी ध्यान नहीं रहा कि अभी तो ठाकुर जी कुछ दूरी पर ही हैं। जल धरती पर गिरता जा रहा था और बाबा जी का ध्यान ठाकुर जी की ओर लग रहा था। इतने में ठाकुर जी भाग लिए। इस प्रकार की छेड़–छाड़ बाबा के साथ होती रहती थी।

फिर 'विमल बिहारी जी' के, 'मदन गोपाल जी' के दर्शन कर आनंद विभोर हो गये। विमल बिहारी जी के मंदिर के अधिकारी ने बहुत ही सुन्दर दोहा सुनाया –

"सुत–दारा और लक्ष्मी, सब काहू के होय।
साधु–संगति, हरि कथा, जग में दुर्लभ दोय।।"

भगवान श्री कृष्ण जी ने अपने माता–पिता को तीर्थ कराने हेतु सभी तीर्थों को आमंत्रित किया। पधारे हुए सभी तीर्थों में विमल कुण्ड को सर्वोच्च स्थान दिया। बाद में प्रयाग जी व पुष्कर जी आये। यह विमलकुण्ड कामवन के अंतर्गत है। यहां से प्रस्थान कर १२.३० पर 'केदारनाथ तीर्थ' पहुंचे। तीन सौ सीढ़ियां चढ़कर भोले बाबा के दर्शन गुफा में किए। यहां बाबा भोले नाथ सपरिवार विराजमान हैं।

सामवेद युक्त श्री गणेश जी महाराज़ की प्रार्थना निम्न श्लोकों में की –

"भो गणेश सुरश्रेष्ठः, लम्बोदर परात्परः। हेरम्ब मंगलारंभ, गजवक्त त्रिलोचनः।।
मुक्तिदः शुभदः श्रीदः श्रीधर स्म्रणे रत। परमानंद परम पार्वती–नंदन स्वयम्।।
सर्वत्र पूज्य सर्वेशः, जगतपूज्य महामते। जगद्गुरो, जगन्नाथ, जगदीश नमोऽस्तुते।।

इस प्रार्थना में श्री गणेश जी महाराज के तीन नेत्र दर्शाये गये हैं। त्रिनेत्र महादेव बाबा के भी हैं और तीन नेत्र भगवती मां काली जी के भी हैं। यथा– "पार्वती मुख–प्रगटी काली। मुण्डमाल त्रय–नैन कपाली।।"

गणपति–स्तुति के बाद श्री नारद जी द्वारा गाई गई महादेव बाबा श्री पशुपति नाथ की प्रार्थना की :–

"नमस्तुभ्यं जगन्नाथ, मम नाथ मम प्रभो।
भवरूपतरोर्बीज, फलरुप, फल प्रदः।।
अबीजाज, प्रज्ञः, प्राज्ञः, सर्वबीज नमोऽस्तुते।
सद्भाव, परमाभाव, विभाव, भावनाश्रयः।।
भवेश, भवबन्धेश, भावाब्धिनाविनाक।
सर्वाधार, निराधार, साधार, धरणीधर।।
वेदविद्याधराधार, गंगाधर नमोऽस्तुते।
जयेश, विजयाधार, जयबीज जयात्मक।।
जगदादे, जयानन्द, सर्वानन्द नमोऽस्तुते।
इत्येवमुक्त्वा देवर्षिः शम्भोश्च पुरतः स्थितः।।
प्रसन्नवदनः श्रीमान भगवांस्तमुवाच सः।
दशवार जपेनैव स्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम्।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य, सिद्धस्तोत्रे भवेद्यापि।।

उपर्युक्त इन श्लोकों को केवल १० बार जाप करने से सिद्धि प्राप्त हो जाती है और भो बाबा बड़े प्रसन्न हो जाते हैं।

नीचे उतरकर श्री रामनानुजाचार्य जी की समाधि व मंदिर के दर्शन किए। रास्ते 'चरण–पहाड़ी' पर २७५ सीढ़ी चढ़कर ऊपर जाना न हो सका। अपरान्ह २.५५ पर यहां यात्रा–सम आगे प्रस्थित हुआ और आदि बद्री पहुंचे। इस पावन स्थल का वर्णन अनेक ग्रन्थों में पाया जा है। सतयुग में श्री बद्रीनाराण जी ने तप किया था। यह ध्यान गिर्राज जी से ३ योजन पश्चिम है। मंदिर में, बीच में श्री बद्री नारायण जी हैं, दाईं ओर श्री ऊधो–भगवान और बाईं ओ नर–भगवान् खड़े होकर सेवा कर रहे हैं। मंदिर के बाईं ओर रामेश्वरन् है, जहां पर गणेश ज महाराज आदि की मूर्तियां हैं।

इस स्थल के महंत श्री गोपीदास जी ने इस पावन स्थान की महत्ता पर प्रकाश डाला। य सभी यात्रियों ने प्रेमपूर्वक प्रसाद पाया। पूज्य शास्त्री जी ने श्रीमद्भागवत का प्रवचन करते हुए गंगापु श्री भीष्म जी के बारे में बताया– शर–शैय्या पर लेटे हुए भीष्म जी भगवान के चरणों में किस प्रक मन लगाते रहे और अंत में कैसे उत्तम गति को प्राप्त हुए।

समयाभाव के कारण गंगोत्री, जमुनोत्री व अलकनंदा आदि के दर्शन नहीं कर सके।

एक बार यादवेन्द्र जी रात्रि में लघुशंका के लिए मंदिर के पीछे गये तो लता–पता के बी से आवाज आई कि "हमारी ओर मुंह करके लघु–शंका कर रहा है!" तो उन्होंने प्रार्थना की वि "मां हमें पता नहीं था कि आप बिराज रहीं हैं, क्षमा करें।" फिर शाम होते ही डीग होकर संत–निवा पहुंचे।

यात्रा का द्वितीय-दिवस

(२३ दिसम्बर १९९५)

यात्रा समूह के सभी यात्रीगण सन्त–निवास पर एकत्रित हुए। प्रातः ८.२५ पर नीम गांव व लिए प्रस्थान किया ओर मंदिर पर ५ मिनट में ही पहुंच गये।

यहां पर श्री निम्बकाचार्य महाप्रभु जी की नीम के नीचे तपः स्थली है। कथा है, निम्बकाचा जी की परीक्षा लेने ब्रह्माजी एक दण्डी साधु के रूप में आये। सत्संग में रात्रि हो गई। साधु कहा कि हम सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करते। निम्बकाचार्य को मन में कष्ट हुआ। उन्होंनें भगवा से प्रार्थना की। भगवान् के सुदर्शन चक्र ने नीम के पीछे से प्रकाश किया। आचार्य ने कहा, अभ सूर्यास्त नहीं हुआ, आप भोजन करें। भोजन के पश्चात् जब ब्रह्माजी जाने लगे तो देखा रात्रि क एक प्रहर बीत चुका है। भगवान ने भक्त का मान रख, नीम के पीछे से दर्शन कराया। अतः 'नी गांव' नाम पड़ा।

इन्हीं आचार्य महाप्रभु जी के नाम पर "निम्बार्क–सम्प्रदाय" का प्रचलन हुआ। जिसक अधिकतर प्रचलन महान् गायक श्री स्वामी हरिदास जी महाराज वृन्दावन द्वारा विशाल रूप में चल जिसके सेवकों में मुख्यतः तानसेन रहे। इन्हीं महाप्रभु जी ने अकबर बादशाह को श्री वृन्दावन–धा की यमुना–तट पर एक टूटी सीढ़ी के दर्शन कराये थे। जिसको देखकर सम्राट अकबर ने हा जोड़कर कहा कि, "हमारे जैसे करोड़ों राजा भी इसे नहीं बना सकते।"

एक बार एक सेठ ने आकर बहुत अच्छी इत्र की शीशी स्वामी जी को भेंट की, जो उन्होंने उसी के सामने यमुना रेती में उड़ेल दी। सेठ को तो बहुत बुरा लगा, पर कुछ कह न सका। जब वह बिहारी जी के दर्शन करने गया, तब उसे समझ में आया कि उसकी इत्र की शीशी का इत्र श्री बांके बिहारी जी के वस्त्रों पर उड़ेला गया था।

आचार्य–गद्दी सलेमपुर (राजस्थान) में है। और उस पर विराजमान श्री श्रीजी महाराज हैं, जो सम्प्रदाय के सभी कार्यों को सर्वत्र चलाये रखने में संलग्न रहते हैं। कभी–कभी जब वृन्दावन पधारते हैं, तब वृन्दावन की भूमि में प्रवेश करने पर वाहन छोड़ देते हैं और नंगे पैर चलते हैं।

वहां पर सबने मंदिर के दर्शन किये। ८.५५ पर वहां से प्रस्थान किया। बरसाना पहुंचकर ८.३० पर मोदी भवन से गह्वर–वन की परिक्रमा की।

जिसने एक क्षण भी श्री वृन्दावन में ५ योजन के घेरे में निवास कर लिया, उसने विधाता के विधान को ही मिटा दिया क्योंकि, शंकर–पार्वती जी के इलावृत्त–खण्ड में भूल से जाने वाले पुरुषों को भी बलात् स्त्री बना लेते हैं। उन्हीं भगवान् को इस वृन्दावन–धाम ने तत्काल गोपी बना दिया।

हर प्राणी यही चाहता है कि यदि मुझे कर्मवश् पशु होना पड़े तो इसी वृन्दावन–धाम में कूकर–शूकर होकर विचारूं, यदि पाषाण खण्ड बनना पड़े तो सदा गिर्राज गोवर्धन का ही अंग होकर रहूं, यदि पक्षी बनने का अवसर आये तो वंशीवट पर ही निवास करूं, यदि तृण–घास बनू तो श्री वृन्दावन की कुंज–गलियों में ही फैली रहूं।

श्रीमंदिर जी पहुंचकर श्री युगल–सरकार के दर्शन किये। श्री नारायण भट्टजी ने किशोरी जी की मूर्ति का, पास ही बरसाने की पहाड़ी पर से उद्धार किया। संवत् १६०२ में। मंदिर में उनकी सेवा की रीति, उन्हीं की चलाई हुई परंपरा के अनुसार चलती आ रही है। उनके प्राकट्य के बाद जहां–जहां जो रासलीलायें हुई थीं, वहां के रासधारी उसी स्थल पर ही वही लीला करते चले आ रहे हैं। जब तक लीला होती है तब तक मंदिर में श्रीजी का भोग अरोगने के लिए नहीं रखा जाता क्योंकि, ऐसी प्रथा है कि प्रिया–प्रियतम जू तो रास में मौजूद हैं। जब रास–समाप्ति पर घंटा बजता है, तब अरोगने के लिए भोग पधराया जाता है।

बरसाने के गह्वर–वन में दोपहर का शयन होने के पश्चात् युगल–सरकार गह्वर पधारते हैं और विविध–स्थलों पर नई–नई मधुर लीलाओं का विस्तार करते हैं।

मंदिर का घंटा जब ४ बजे बजता है तब दोनों दौड़कर मंदिर में प्रवेश करते हैं। इसी प्रकार रात्रि का शयन कराने के बाद मन्दिर के कपाट बन्द कर दिए जाते हैं पर, दोनों प्रिया–प्रियतम गह्वर–वन भाग खड़े होते हैं और दोपहर की भांति नई–नई लीलाओं का आस्वादन करते हैं। जब प्रातःकाल ४ बजे घंटा बजता है तो दोनों भागकर मंदिर में प्रवेश कर जाते हैं। ऐसी उनकी नित्य की रीति है।

जब–जब युगल–सरकार गह्वर–वन पधारते हैं, जब चन्द्रसखी उनकी सेवा में लीलाओं के योग कराने में सतत् जुटी रहती हैं। जब गह्वर–वन से ठाकुरजी चले जाते हैं, तब चन्द्रसखी अलक्षित रूप से घोषणा करती हैं जिसको सिद्ध महापुरुष बड़े प्रेम से सुनते रहते हैं। वह कहती हैं–"भाईयों, या ब्रजमंडल की सारी भूमि ठाकुर जी की लीला–स्थली है और यहां के चर–अचर प्राणी उनकी

लीलाओं का योग बढ़ाते रहते हैं। यहां का रहना—सहना, उठना—बैठना, खाना—पीना तथा खेल—कू बड़े विचित्र और अनिर्वचनीय हैं। यहां के सारे कार्य श्रीजी की सेवा—रीति के अनुसार हैं, लोक—री तथा वेद—रीति से भिन्न है और महान् विलक्षण हैं।"

"दासोऽस्मीति वचः श्रुत्वा दूरादेव पलायते
अगौरवे कृते तुष्टौ गौरवादय कुप्यति।"

अगर कोई ठाकुर जी से ये कहे कि मैं आपका दास हूं तो इस वचन को सुनकर दूर ही भाग खड़े होते हैं। गौरव न करने पर प्रसन्न होते हैं और गौरव करने से कुपित हो जाते है

"जगदीश, जगन्नाथ, कोटि ब्रह्माण्डनायक।
ब्रह्मन् स्वामिन्परात्मन, मोश्रुत्वा संकोचमेत्य सौ।।"

जगदीश! जगन्नाथ! कोटिब्रह्माण्डनायक! ब्रह्मन्! स्वामिन! परात्मन्! इत्यादि (ऐश्व तथा गौरव के सूचक) शब्दों को सुनकर वे संकुचित हो जाते हैं।

"लाल्थ ललित, लाल्येन्दो, वत्स, दामोदरादिभिः
तथा मित्र, सखे पृष्ठेत्याद्वानैरति तुष्यति।।"

लाला! लाड़िले! लाल! चांद! वत्स! दामोदर! मित्र! सखे! प्रियतम! आदि नामों वह बहुत सन्तुष्ट होते हैं।

"कितवासिन जिध्वेति और चंचल धृष्ट रे।
अदान्त कुहकेत्यादि समाकर्ण्य प्रमोदते।।"

धूर्त, कलूटे, कुटिल, चोर, चंचल, ढीठ, उदण्ड, कपटी आदि सबोधनों को बड़े चाव से सुन व खूबप्रसन्न होते हैं।

ब्रजवास की कामना से ब्रह्मा आदि के स्तुति करने पर व सत्पुरुषों द्वारा अपनी स्तुति सुनक मौन रह जाते हैं पर, बृज की गौएं हुंकरा भी भर दें, तो उनसे लिपट कर बातें करने लगते हैं इतना ही नहीं, ठाकुर जी की बड़ी टेड़ी बान है। घर का भोजन इन्हें नहीं रुचता, दूसरों के घ में चोरी किया करते हैं, माखन—दही—दूध स्वादिष्ट लगता है। रेंढी, करौंदा, मोरपंख, फूलों की मालाएं मैनसिल, गेरु हरताल सेलखड़ी धारण करके ग्वाल—बातों के साथ गाते—नाचते, युद्ध करते बड़े प्रसन्न होते हैं, खेल में हारने पर गोप बालकों को कन्धे पर चढ़ाकर घोड़ा बनकर चलने में महान सुख अनुभव करते हैं :—

"न दत्तमस्य रुचिरं स्तेयं स्वादु गृहे—गृहे।
फल प्रवाल बर्हस्त्रग्धातुस्त बक भूषणः।
गोपाल बालकैर्गायन् नृत्यन् युध्यन् प्रसीदति
पराजितो वहन् स्कन्धे तानयं मान्यते सुखम्।।"

श्री ठाकुर जी में टेढ़ापन प्रारम्भ से ही है। शरीर टेढ़ो, झुकाव टेढ़ो, दृष्टि टेढ़ी, सब कुछ टेढ़ो ही टेढ़ो है? सम्भवतः उनकी मैय्या यशोदा ने तिरछी होकर इन्हें दूध पिलाया था :—

"बृजन्देनन्दने कृष्णे शैशवादेव वामता।
पायनात्पयसो मातुः कौटिल्येन समागता।।"

बृजमण्डल की रीति ही ऐसी है, जो यहां वास करना चाहे उसे ठाकुर जी की तरह ही टेढ़ो–मेढ़ो होकर चलना पड़ेगा, तभी प्रिया–प्रियतम उसे बड़े प्रेम–भाव से अपने धाम में बसने देंगे।

हमारे ठाकुर जी, श्री राधारानी के सदा आधीन रहते हैं क्योंकि, वे संपूर्ण बृज की अधीश्वरी हैं। उनकी सभी क्रियाएं, श्री राधारानी के आधीन हैं, स्वतंत्र नहीं। देखो ना ! उनके अधीन होकर ही बोलते हैं, देखते हैं, सुनते हैं, हंसते हैं, गीत गाते और नाचते हैं। श्री राधाजी के संकेत के बिना कोई भी अर्पित की हुई वस्तु को स्वीकार नहीं करते हैं –

"राधाधीनः सदा ब्रूते पश्यत्यथ श्रृणोति च।
राधानीश्च हसति गायत्यपिच नृत्यति।।
नादत्तऽपिवस्त्नि राधासंकेत मन्तरा।।"

दूसरे अवतारों में ऐसी विचित्र अनहोनी बाते सुनने में नहीं आतीं हैं, जो दोनों के महाभाव स्वरूपा, महाप्रेम के छलकते रहने पर केवल बृज में ही देखी जाती हैं, मुख्यतः इस गह्वर–वन में, कुसुम–वन में तथा निज वृन्दावन–धाम में।

"मोरकुटी सुन्दर गह्वर–वन, बहिरत श्याम वहां सब निशिदिन।
जहां रहत ऋतु सावन, जै गह्वन–वन, जै गिरि पावन।
दान, मानगढ़, प्रेम सरोवर, पीरी पोखर जै मानोकर।।"

श्रीजी के मंदिर में यदि कोई गोपी–भाव से प्रवेश करे और प्रेम से अश्रु–प्रवाह करे, तो उसे अवश्य कुछ न कुछ उपलब्धि हो ही जाती है क्योंकि, श्रीजी अपनी करुणा की रस–धारा के प्रवाह को रोकने में असमर्थ पाती हैं–ऐसे ऊंचे प्रेम–भाव की धारा अपनों पर उड़ेलती ही रहती हैं।

एक बार बरसाने में अकाल पड़ा, तो बृजवासियों को भोजन पाना कठिन हो गया। जब महात्मा ने देखा कि उनको मधुकरी मिलने में कठिनाई आने लगी तो उन्होंने सोचा कि गिरिराज जी की शरण में चला जाये। संध्या को डंडा लेकर जब गोवर्धन को चले तो रास्ते में एक बालिका ने बाबा को रोका और कहा कि 'अरे बाबा ! तू कहां जाय रह्यो है?' उन्होंने कहा कि – "लाली! मैं गोवर्धन जाय रह्यो हूं क्योंकि, यहां पै तुम लोगन् कों ही पूरो भोजन प्राप्त नहीं होत है तो मोय कों रोटी कहां से मिलेगी?" बालिका ने कहा कि "नहीं बाबा, ऐसा मत कर" और कहा कि "तू मेरे यहां चला जा।" पूरा पता दे दिया और बोली "घर जाकर कहियो कि तेरी लाली ने यह कहा है कि 'आले में दो रोटी रखी हैं वह आपको दे दें।"

बाबा वहां से चलकर बताये पते पर पहुंचे। पिता ने कहा "आओ, थोड़ी देर रुको, ठाकुर जी का भोग बन रहा है, आप प्रसाद पाना।" बाबा ने कहा–"अरे भाई ! तेरी लाली ने कहा है कि आले में दो रोटी रखी हैं, वो तुम मुझे दे दो।" सेठजी ने बहुत सोचा और पत्नी की ओर देखा, पत्नी दो रोटी लेकर आई। सेठजी ने हिचकिचाते हुए कहा कि – "पाओ बाबा।" बड़े प्रेम से पाकर जब बाबा चलने लगे, तो सेठजी ने कहा–"बाबा ! सुन लै, मेरी लाली तो छै महीने से ससुराल में ही है। तेरे ऊपर तो श्रीजी ने महान् कृपा की है।" इतना कहा कि बाबा, सेठ जी और उनकी पत्नी बेसुध हो गए। सेठजी के बड़े पुत्र कोसी कलां चुंगी के चेयरमैन रहे हैं तथा वे १०८ श्री बाबा गौरांगदास जी महाराज के कृपा–पात्र रहे हैं। ऐसी ही अनेक लीलाऐं आए–दिन युगल–सरकार जी भक्तजनों के साथ किया ही करते रहते हैं और उनके ऊपर कृपा–रस उड़ेलते

ही रहते हैं। इन्हीं लीलाओं को लेकर महापुरुष यही कहते रहते हैं कि "जो रस बृजमण्डल में बर
वह रस तीन लोक में नॉय।"

होली के अवसर पर यहां विलक्षण यह होता है कि नन्दगांव वाले बरसाना होली खेलने आ
हैं। बरसाने के (गुंसाईं) गोस्वामी उनकी अगवानी कर तथा उन्हें भेट समर्पित कर मंदिर में ले जा
हैं, वे श्रीजी के प्राकट्य गीत गाते हैं तथा होली खेलते हैं। गोस्वामी नीचे उतरते हैं, वे बरसाने
युवतियों को छेड़ते हैं–अनेकानेक गालियां देते हैं। युवतियां ठुमुक–ठुमुक कर उन पर लाठियां चला
हैं, जिनका बचाव वे अपनी–अपनी ढाल से करते हैं। यदि चोट लग जाती है तो गोपियों
चरण–धूलि मल लेते हैं।

भक्तजनों का समूह बरसाने से चलकर गाजीपुर पहुंचा, वहां प्रेम सरोवर में आचमन किय
कुण्ड के निकट ही ब्रह्मचारीजी की समाधि और मंदिर है। दोनों स्थानों पर सबने दण्डवत् प्रणा
किया और सुदामा–कुटी का बाहर से दर्शन किया। फिर ११.५५ पर कोकिला–वन के लिए प्रस्था
किया। मध्यान्ह १२.१५ पर कोकिला–वन पहुंचे। कोकिला–कुण्ड पर आचमन किया। निकट
मंदिर है जिसमें श्री राधा–कृष्ण विराज रहे हैं, सबने दर्शन किये। इसी मंदिर में पीछे की ओर श
की मूर्ति है, जिस पर तेल व भोग चढ़ाते हैं, सब सामग्री पास में ही उपलब्ध रहती है। मंदिर
कुछ दूरी पर 'शनि–कुण्ड है। इसमें शनि–बाधा ग्रस्त लोग स्नान करके बाधा मुक्त होते है
स्नानोपरांत एक वस्त्र यहां छोड़ना पड़ता है।

राधाकृष्ण के मंदिर की ६० एकड़ जमीन है। कोकिला–वन काफी गहरे में बसा है। एक सम
श्री कृष्ण इस स्थान पर आकर श्री राधारानी को कोकिल–ध्वनि में संकेत देने लगे। संकेत श्रव
कर श्री राधारानी सखियों सहित यहां आई और श्रीकृष्णजी से मिलन किया था। इस कारण इ
स्थान का नाम कोकिला–वन हुआ।

बहुत से यात्रियों ने कोकिला–वन की परिक्रमा दी। बृजमण्डल में वन–उपवनों का बहुत
महत्व रहा है, ये सभी वन–उपवन श्रीकृष्ण की लीला–स्थली रहे हैं। कोकिला–वन बहुत सम्पन
वन है, यह ७२३ एकड़ भूमि में रहा है। ऐसा कहा जाता है। कामर की रक्षा व पियासा तथा करहल
का वन १०० एकड़ भूमि में स्थित रहा है।

श्री बृजमण्डल के वन–उपवन समस्त बृजमण्डल में १३३ वन तथा १६ वट हैं। ६१ यमुना
दाईं ओर व ४२ बायीं ओर। १२ उपवन, १२ प्रतिवन, १२ अधिवन चौरासी कोस परिमित हैं। इ
प्रकार हर वन का अधि देवता है। हर एक का अवाहन मंत्र है, जिसका विस्तार "श्री बृज भक्ति
विलास" में है।

यमुना के दक्षिण तट के वन–समूह तथा वट–समूह श्रीकृष्ण के राज्य हैं तथा उत्तर तट
श्री बलदेव जी के राज्य हैं। बरसाना, संकेत, नन्द गांव, राधाकुण्ड, गोवर्धन, गोपालपुर, अप्सरावन
नारदवन, सुरगीवन, पांडरवन तथा डिंडिम–वन श्री राधा जी के राज्य हैं। (श्री बृजभक्ति विला
२–२१) अन्य वन अन्य सखियों के राज्य हैं। जिसका श्री बृज भक्ति विलास में विस्तृत वर्णन है
इस प्रकार हर वन की परिक्रमा का विस्तार श्लोक ४२ में है।

हर वन श्री ठाकुर जी का लीला–क्षेत्र रहा है। जिसके कारण उनकी पावनता अब तक विद्यमा
है। इन वनों में भांति–भांति के सुवासित तथा फलदार वृक्ष शोभा पाते रहे हैं और कोई–कोई व

तो इतने विशाल रहे हैं कि वहां पर शेर, रीछ जैसे जन्तु विचरते रहे हैं। जिनका वर्णन "मथुरा मेमोयर्स" व "मथुरा गजेटियर" में बहुत छान–बीन के साथ उस समय के जिलाधीश श्री ग्राउस जी ने किया है–

These Natural woods, commonly consist of 'Pilu Chhonkar' and Kadamb trees, among which are always interspersed chimps of 'Karil' with its leafless evergreen & wings and bright coloured flowers and fruits, The 'Pasendu' 'Papri' 'Arni' Hingot, Goude, Baina, and Dho also occur at Basana, the whole of the hillside.

"काबुल में मेवा करो, ब्रज में करो करील" This has been translated as under Kirshna, you see, will even lose his wayword, whims & vapours.

For Kabul teams with lucious fruits, while 'Braj boasts only caper (Karil) श्री ग्राउस साहब ने माना है कि यह वन अभी तक उसी विस्तार में घनापन लिए हैं और उन्होंने भी इसकी पावनता को स्वीकार किया है।

To a very recent period almost the whole of large area was pasture and woodland and many of the villages are still environed with belts of trees. There are curiously designated as Ghana, Jharhi, Rakhya, 'Bari' or Khandi and often are of considerable extent. Thus Kokila ban, at great Bathen, is over 723 acres. 'Rakhya'k at Kamar more than 1000 acres and in the contigurous villages of 'Pisaya' and 'Karanla' the rakshya and Kadamb Khandi together amount the nearly as much".

"Almost every spot is traditionally converted with some event in the life of krishna or of his mythical mistress Radha."

"Till the close of the sixteenth century there was only here and there a scattered hamlet in the midest of unlcaimed woodland."

"The numbher of sacreed places, woods, groves, ponds, wells, hills and temples, all to be visited in fixed order, is very considerable."

There are generally reckoned five kills, eleven rocks, four lakes eighty twelve bans or woods and the 24 up bans or groves, are the characteristic feature of the the Braj Mandal.

उपर्युक्त वर्णन से विदित है कि कोकिला वन 723 एकड़ कामर की रक्ष्या 1000 एकड़ तथा पिसाया व करहला का घना इसकी ही भूमि में स्थित है। यही अवस्था नन्दगांव बरसाना तथा राधाकुण्ड, गोवर्धन के इर्द गिर्द तथा महावन, गोकुल भांडीर वन, भद्रवन व कामवन की रही। परन्तु इन सबको काफी ह्रास हो गया है।

श्री गौस साहब ने स्वीकार किया है कि यात्रा के समय वहीं रास लीलाएं उसी स्थान पर होती है जहां लीलाएं बृज में द्वापर में हुई थीं।

During the time of Banyatra, a series of melas is held at the different woods, where the Ras Lila is celebrated, each, scene being acted on that very spot with which the original event is traditionally connected.

The Kadamb-Khandi of Pisaya is the most beautiful of all, Rakhy as around Nandgaon and Kakilaban at Bathen Kalan are preserved beacause they are sacred places of pilgrimage, others too arε regaqrded all the same with a strong religious feeling, a curse being involved on any one, who breaks up or cultivates the land on which they stand.

At the grove at the Kokilavan trees becoming thicker, towards the centre where a pretty natural lake spreads cool and clear between Kokilvan and the village is another holy place called Kakirvan.

इम्पीरियल गजीटर आफ इण्डिया (1908) में निम्न वर्णन दृष्टव्य है –

The Western side of the district is celebrated as Braj Mandal and almost every groves, mound and tank is associated with some episide in Krishna's life, the peacocks and monkeys with the neighbourhood abounds enjoy special endowments.

श्री टोड साहब ने Annals and aAntiquities of Rajasthan के चैप्टर 1 में लिखा है–

"The groves, the preserved forests the birds, the animal with which the place once abounded and considerable, remains of which are still in existence, have been held in the highest veneration and religious sanctity, from remote antiquity. It has ever been considered the highest form of blessing and live a life of love and peace in Braj Mandal, even as an insect.

उपर्युक्त से यह बात सर्वमान्य है कि वन–उपवन, पशु–पक्षियों से अनादिकाल से भक्त लोग सदा से सदा प्रेम करते चले आऐ हैं और उनकी सदा से यही भावना रही है कि उनका बार–बार ब्रज–मण्डल में जन्म हो, चाहे वह कीड़े–मकोड़े के रूप में ही क्यों ने हो।

मुगल बादशाहों के समय में ३ शाही फरमान जारी हुए थे कि साधु–महात्माओं को न छेड़ा जाये तथा मोर–बन्दर न पकड़े जावें और न मारे जावें। जो ऐसा करेगा उसे कठिन दण्ड दिया जायेगा। यह तीनों फरमान अकबर, जहांगीर और शाहजहां के समय में जारी हुए थे।

रेवेरेण्ड रैजीनेल्ड हेवर ने सन् १८२४–२५ में लिखा था कि होडल से दौताना तक घना जंगल है। इसी प्रकार दौताना से जैत तक घना जंगल है, जहां मोर–बन्दर बहुतायत में हैं।

श्री कृष्णदत्त वाजपेयी (तत्कालीन अध्यक्ष, पुरातत्व संग्रहालय मथुरा) ने अपनी कृति "ब्रज का इतिहार" में लिखाहै कि मथुरा के आस–पास घने जंगल थे और बाग बहुतायत से मिलते थे। अकबर शिकार खेलने मथुरा के जंगल में जाया करते था।

सर्वे के समय यह ज्ञात हुआ कि गोवर्धन व राधाकुण्ड के दोनों ओर घना वन था, जो कुसुम–वन कहलाता था। वह पूर्व के ओर बिसौती और कोनई तक फैला था तथा पश्चिम की ओर संकीतरा तक फैला था। जब कोर्ट ऑफ वार्डस् ने गोवर्धन के झण्डी को राधाकुण्ड में जमीन का पट्टा दिया था, तब राधाकुण्ड–वासियों ने २३–१२–१९१४ को पत्र प्रस्तुत किया था कि कुसुम वन, नारद कुण्ड कुसुम–सरोवर, उद्धव–कुण्ड से प्रारम्भ होकर इन कुण्डों के उत्तर–पश्चिम तक फैला हुआ है व राधा बाग व कदमखण्डी जो उत्तर व पूरब की ओर है, श्री राधा–कृष्ण की लीला–विहार भूमि है, यहां पर साधु लोग भजन–ध्यान करते हैं। यहां के वृक्षों को खेती के लिए काटना वैष्णवों के हृदयों को काटना है। यह जन्म–भूमि सदा गोचर–भूमि रही है और हमारा अधिकार गायों को चराने का यहां रहा है। इस पर जिलाधीश ने पट्टा खारिज कर दिया। परन्तु ७–८ वर्ष पहले राधाकुण्ड–वासियों ने स्वयं ही पट्टा लेकर सारे कदम्ब के पेड़ काट दिए लेकिन बाढ़ के समय जल भरे जाने से समुचित लाभकारी नहीं रहा। इस प्रकार कुसुम वन ही नहीं नष्ट हुआ वरन् अन्य वनों को भी नष्ट कर दिया गया और किया जा रहा है। जैसे कि कुमुद वन, कमोद वन, ढोला वन, ताल–वन, आन्यौर, कोट वन, पाण्डर वन। गोस्वामी बृजाधीश जी महाराज ने अभी हाल में

यात्रा समाप्त कर नागरिकों द्वारा अभिनन्दन के समय बताया कि अनेक वन नष्ट कर दिए गये, यात्रा–मार्ग अवरुद्ध कर दिए गए, यात्रा के स्थलों पर खेती होने लगी है। मंदिरों से प्रतिमास चोरी की जा रही है, इत्यादि। उन्होंने आशा व्यक्त की कि प्रदेश–सरकार को स्थलों के संरक्षण के लिए कुछ करना चाहिए। इस यात्रा में सौराष्ट्र–गुजरात आदि के लगभग ७,००० भक्तजनों ने भाग लिया था।

सभी यात्रियों ने कोकिला वन से १० बजे गाजीपुर के लिए प्रस्थान किया और पुनः श्री राधा–कृष्ण के मंदिर में आए। सभी यात्रियों ने यहां प्रसाद ग्रहण किया। मंदिर के पावनधाम में श्रीमद्भागवत–कथा का रसास्वादन किया। कथा समाप्ति के बाद दर्शन खुल गए। सबने प्रेम–पूर्वक भक्तिभाव से श्री युगल–सरकार के दर्शन किए। ४.३० बजे यात्रा–समूह ने संत–निवास के लिए प्रस्थान किया।

यात्रा का तृतीय दिवस

(२४ दिसम्बर १९९५)

सभी भक्तजनों ने मां ब्रजेश्वरी को प्रणाम कर तीसरे दिन की यात्रा कि लिए सन्त–निवास से लगभग ८ बजे नन्दगांव के लिए प्रस्थान किया। मंदिर में एक ओर नन्दरानी विराज रही हैं, दूसरी ओर नन्दबाबा। उन दोनों के बीच वंशी लिए कृष्ण–बलराम विराज रहे हैं। ससुराल होने के कारण श्री राधाजी एक ओर खड़ी हैं। यहां पर मिश्री का प्रसाद लगाया जाता है।

कुछ सीढ़ियां उतरकर नन्देश्वर महादेव जी के दर्शन किए। ऊपर छत पर चढ़कर समस्त पावन् स्थलों के गोसाईं जी ने छत पर से ही दर्शन कराये और स्थल के बारे में सभी यात्रियों को ज्ञान कराया।

कुछ नीचे उतरने पर श्री अर्धनारीश्वर के दर्शन किए। श्री विग्रह का अर्द्धभाग राधा के रूप में तथा दूसरा भाग कृष्ण के रूप में है। दो शरीर एक रूप में समाहित, एक प्राण दो देह। दुर्गा मां का दर्शन नवीन मंदिर में किया।

जब संकेत से नन्दगांव आते हैं तो गांव के दाईं तरफ ललिता–कुण्ड है और मंदिर में श्री ठाकुर जी विराजमान हैं। मंदिर के कोने में ही एक कश्मीरी संत की समाधि है। यह पहले सन्यासी थे, जब उन्होंने गरुड़–गोविन्द पर बाबा अवधदास जी महाराज की भागवत् सुनी तो उनसे ही दीक्षा देने की प्रार्थना की। इस पर बाबाजी महाराज ने कहा कि "हम तो सन्सासियों को दण्डवत् करते हैं, उलटी रीति कैसे हो सकती है।" तो उन्होंने गेरुआ वस्त्र उतार कर फिर दण्डवत् कर दीक्षा की याचना की, तो बाबाजी महाराज ने उन्हें दीक्षा दी और कहा कि "अब तुम गोपाल मंत्र का भजन करो।" ग्वालियर की पहाड़ियों में एक निर्जन स्थान पर गोपाल–मंत्र का अनुष्ठान किया। कुछ समय पश्चात एक शेर उनकी कोठरी के आगे आकर, दण्डवत् कर के बैठ जाता था। उन्होंने बाबाजी महाराज को सूचना दी, तो बाबाजी ने उन्हें अभी और भजन करने के लिए आदेश दिया। पूरा होने पर वह इसी ललिता–कुण्ड पर आ गए और भजन करते रहे। बीच–बीच में वृन्दावन जाकर बाबाजी महाराज को दण्डवत कर आते। इसी स्थल पर गांव वालों ने उनकी समाधि बना दी।

इस कुण्ड से थोड़ी दूर दायीं तरफ चलकर ऊधो–क्यारी है। श्री ठाकुरजी महाराज के आदेश

से गोपियों को समझाने के लिए ऊधो जी पधारे थे और इसी कदम्ब–क्यारी में बैठकर उनको ठाकु जी का उपदेश सुनाया था तो हंस कर गोपियों ने कह दिया था कि हम तुम्हारा उपदेश कह रखें –

'श्याम तन श्याम मन श्याम है हमारो धन,
आठों जाम ऊधो हमें स्याम ही सों काम है।
स्याम हिए स्याम जिए स्याम बिनु नाहिं तिये,
आंधे की सी लाकरी अधार स्याम नाम है।।
स्याम गति स्याम मति स्याम ही है प्रानपति,
श्याम सुखदाई सों मलाई शोभा धाम है।
ऊधौ तुम भए बौरे पाती लेके आए दौरे,
जोग कहां राखैं यहां रोम–रोम स्याम है।''

यहां तो रोम–रोम श्याम व्याप रहे हैं, बस इसी बात को सुन कर उद्धव जी ने उनकी चरण–रज माथे से लगा ली। कथा तो बहुत बड़ी और महान् रोचक है। यहां पर रासधारी 'ऊधो–लीला' क प्रदर्शन करते हैं।

इसके आगे दो–मिल वन हैं। जहां पर गौर–लता और कृष्ण–लता लिपट कर पेड़ों पर चलती हैं। मंदिर में नृसिंह जी विराजते हैं तथा सामने हनुमानजी विराज रहे हैं। इस मंदिर में एक ब्रह्मचारी जी ने १२ वर्ष मौन रहकर तपस्या की। भण्डारा इतना विशाल हुआ था कि आस–पास के गांवे को प्रसाद ७ दिन तक पवाया गया। इनके पास जो गाय थी वह इतने ऊंचे कद की थी कि मनुष्य का सिर आ जाता था–उसकी पीठ के बराबर। वह किसी भी खेत में छुट्टा चरती थी, उसे कोई नहीं रोकता था।

कुछ साल पहले की बात है कि एक बालक पूर्ब से आकर एक झाड़ी में छुप गया कि जब तक ठाकुर जी दर्शन नहीं देंगे, तब तक मैं कुछ नहीं खाऊंगा। दो–तीन दिन बाद मंदिर के महन्त जी जब झाड़ी के पास से निकले तो कुछ कराहने की आवाज आई। झाड़ी उठाकर देखा तो उस बालक से उन्होंने कहा कि 'यहां तूं क्यों पड़ा है?'' उन्होंने उसे दूध दिया तो बालक ने नहीं पिया उसने अपनी इच्छा बता दी। ठाकुरजी ऐसों पर ही कृपा करते हैं। दूसरे दिन ठाकुर जी ने उस बालक को दर्शन देकर दूध पिलाया और महन्त जी को आदेश मिला कि 'तुम उसे दीक्षा देकर अपने पास रखो।' यही बालक प्रातः पूजा करके बाबा अवधदास जी महाराज के निर्वाण के उपलक्ष में भण्डारे का प्रसाद पाने के लिए वृन्दावन पैदल ही गया और फिर पैदल ही लौटकर ठाकुरजी की संध्या–बेला की सेवा की। यहां से वृन्दावन काफी दूर है। पैदल चलकर लौट कर आना विलक्षण घटना है। वे अब भी विराज रहे हैं।

सड़क के दूसरी तरफ यशोदा कुण्ड है, जहां पर एक महात्मा जी भजन किया करते थे। वे दो दिन के लिए कहीं बाहर चले गए। जब लौट कर आए तो पास वाले वृक्ष से आवाज आई ''बाबा तूं कहाँ चल्यौ गयौ, हम तौ प्यासन मर गए।'' तो बाबा ने पूछा ''तू कौन है?'' तो ऊपर से आवाज आई कि ''हम ब्रह्मराक्षस हैं। आप हमारौ उद्धार कीजिए।'' फिर बाबा ने पूंछा कि –''तुम ब्रह्मराक्षस कैसे हुए?'' उसने बताया कि हम नन्दबाबा के मंदिर के पुजारी हैं, ठाकुर जी को लड्डू

अर्पण करने से पहिले ही उसे हमने सूंघ लिया, इस अपराध पर हमें यह दण्ड मिला। ब्रजवासी होने के नाते हम ब्रज में ही पड़े रहे। फिर कहा कि आप हमारे घर जाओ और हमारी पत्नी से पूंछना कि हम कहां लेटते थे? वहां पलंग के सिरहाने की दायीं तरफ २००रु० गढ़े हैं, उन्हें आप निकाल कर महात्माओं का भण्डारा कर दीजिए। उसे पाने पर मेरा उद्धार हो जायेगा। ऐसा ही किया गया। वह महाप्रसाद पाकर उसका दिव्य शरीर हो गया परन्तु उसका सिंहासन ऊपर नहीं उठा, तो उसने कहा कि "बाबा हम क्या सेवा करें?" तो उन्होंने कहा कि "भाई, हम यहां पर ठाकुर जी के दर्शन को पड़े हुए हैं।" इस पर उस दिव्य–पुरुष ने कहा कि "ठाकुर जी तो यहीं से होकर निलकते हैं–गैय्यन के पीछे–पीछे, जो बहुत चपल होंय, वही ठाकुर हैं।" बाबाजी सांझ को टकटकी लगाय के देखते रहे और जिस बालक को चपल देखा, उसी के पैर पकड़ लिए। बालक बहुत चिल्लाया पर इन्होंने पैर नहीं छोड़े, अन्त में ठाकुर जी के दर्शन प्राप्त किए।

मंदिर जी के दूसरी ओर पावन–सरोवर है। यहां पर भी श्री रूप गोस्वामी और सनातन गोस्वामी जी ने भजन किया।सड़क के दूसरी ओर 'आशेश्वर–कुण्ड' है। वहां आशेश्वर महादेव और पार्वती जी विराज रहीं हैं। हर एक महात्मा वहां ठहर नहीं पाता है। जयपुर के कर्मकाण्डी पंडित अलक्ष्य रूप से वहां विराजते हैं। भिक्षा में वे आटा केवल कलछी से ही लेते थे। एक बार जब मैय्या आटा लाई तो उन पंडित जी ने बालकों को खिचड़ी खाते देखा और उनके साथ कृष्ण–बलराम भी खा रहे थे। पंडित जी ने दौड़कर खिचड़ी उठाई और खा ली, तो मैय्या ने उनकी पीठ पर एक करछी मारी और कहा – "दारी के हमारा विनाश करन कौ आयौ है, बालकन की झूठी खिचड़ी खाली।" तो उन्होंने कहा कि –"मैय्या ऐसी ही खिचड़ी दिया करो।"

भक्तजनों की यह पुनीत–भावभरी यात्रा अब चलती हुई शेषशायी पहुंची। मंदिर में पौड़ानाथ जी का दर्शन किया। शेषशय्या पर विराजमान श्री विष्णु की नाभि से प्रस्फुटितत कमल पर ब्रह्मा जी विराज रहे हैं और सामने श्री लक्ष्मी जी चरण–सेवा कर रहीं हैं। यहां पर श्रीमद्भागवत–कथा में श्री व्यास जी ने पूतना–उद्धार का प्रसंग बड़े ही हृदयग्राही ढंग व विस्तार से सुनाया। गांव के अधिकांश स्त्री–पुरुष भक्त अधिक संख्या में कथा सुनने को आ गये। ठाकुर जी की लीला–कथामृत का सबने अति प्रेम से श्रवण किया तत्पश्चात् महाप्रसाद ग्रहण किया।

क्षीर–सरोवर के दर्शन करके शेषशायी पक्षी विहार को बस से ही देखते हुए २.५५ बजे पर फालौन पहुंचे। यह सबसे बड़ा गांव है। १२०० घर स्थित हैं। यहां के श्री इन्द्रजीत पण्डा जी होली के पांच दिन पूर्व से ही व्रत करते हैं, जब ज्योति सतरंगी हो जाती है तो होली में आग लगाने को कहते हैं। फिर प्रहलाद–कुण्ड में से निकल कर दस डग अंगारों पर चलता हुआ मंदिर में प्रवेशकरता है। इस मंदिर में ज्योतिर्मय विष्णु भगवान्, नृसिंह भगवान और प्रहलाद जी हैं।

यहां से चलते हुए ४.१० पर तरौली पहुंचे। यहां बूढ़े बाबा के मंदिर के दर्शन किए। निकट ही एक कुण्ड है जिसका जल गन्धक–युक्त है, यहां चर्मरोग से ग्रस्त रोगी स्नान करते हैं। कहा जाता है कि इस कुण्ड की गीली रज लगाने से कुष्ठ रोग ठीक हो जाता है।

४.२५ पर तरौली से चलते हुए गरुड़–गोविन्द पहुंचे। यहां पर राधारानी जी के भाई श्री दामा जी को गरुड़ बना कर ठाकुर जी पीठ पर विराजते हैं। यह बात ठाकुर जी ने स्वयं ही उद्धव जी को बताई थी। जब उन्होंने उद्धव जी को गोपियों को समझाने के लिए नन्दगांव भेजा

था। उनसे कहा था कि "गरुड़ गोविन्द के रास्ते सहार होते हुए नन्दगांव पहुंचना। इस मंदिर में श्री गरुड़जी पर आसीन श्री गोविन्द जी की बड़ी ही सुन्दर मूर्ति है। कहावत है "आठ हाथ का मंदिर और बाहर हाथ के ठाकुर जी।" पास में ही गरुड़ कुण्ड है। जिसमें सबने आचमन किया तदुपरांत बस द्वारा सभी ने अपने निवास स्थल के लिए प्रस्थान किया।

यात्रा का चतुर्थ दिवस

(२५ दिसम्बर १९९५)

चतुर्थ दिवस की यात्रा के आरंभ में ८.२५ पर सभी ने भाण्डीर वन के लिए प्रस्थान किया। वहां पहुंचकर सर्वप्रथम वल्लभाचार्य जी की बैठक के दर्शन किए। पास में ही 'राधा–कृष्ण' के मंदिर के दर्शन किए तथा निकट ही स्थित बलिभद्र मंदिर के भी दर्शन किए। इसमें बलराम जी की सुन्दर प्रतिमा सुशोभित है। यहां से थोड़ा–सा आगे बढ़कर उस महान वटवृक्ष के दर्शन किये। जहां ब्रह्माजी ने श्रीराधारानी और श्रीकृष्ण जी का विवाह कराया था। थोड़ी दूर पर एक कूप है जिसका जल गन्धक–युक्त है। सभी यात्रियों ने परमपूज्य श्री सन्तजी के कर–कमलों से उस जल को प्रसाद स्वरुप प्राप्त कर पान किया। इस जल का प्रभाव शारीरिक चर्मगत रोगों को निवारण करने वाला है। कूप के सामने एक शिला का सिंहासन है। कहते है, विवाह के पश्चाताप् श्रीराधा–कृष्ण यहाँ विराजमान हुए थे। यहां की मान्यता है कि हर सोमवती अमावस्या को स्त्रियाँ जिनके पुत्र नहीं होता है, वह पहले गन्दे पानी में नहाती हैं, फिर शुद्ध जल से स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण करती हैं तथा पुराने वस्त्र वहीं छोड़ देती हैं।

भाण्डीर–वन के दूसरी ओर वंशीवट है, यहां पर श्री राधारानी जी के भाई श्रीदामा जी विराजते हैं। इस मन्दिर की सेवा–पूजा का अधिकार श्रृंगार–वट(वृन्दावन) के गोस्वामियों (गुसाई) को है। श्री चैतन्य महाप्रभु तथा श्री नित्यानन्द महाप्रभु जी का श्री विग्रह भी यहीं पर है। श्रृंगार–वट वृन्दावन के गोस्वामी श्री महाप्रभु नित्यानन्द जी के वंशज हैं। उनकी गायें चराने के लिए एक ग्वाला बालक रहता था। वह अपनी गायों को लेकर मांट–वंशीवट तक जाया करता था। एक बार श्री ठाकुर जी भी गौएं चराते हुए उस बालक को मिले। दोनों में सखा–भाव–सम्बन्ध हो गया। एक दिन श्री ठाकुर जी ने कहा कि – "तूंनें कॉख में क्या दबा रखा है?" उसने कहा – "कलेऊ लायो हूं" तो ठाकुरजी ने कहा कि – "कल कलेऊ मत लाइयो बल्कि, आटा, दूध और कुछी मीठा लेते अइयो; दालबाटी बनायेंगे।" वह दूसरे दिन अपने सिर पर रखकर सब सामान तथा चराने के लिए गायें लेकर आया। उसने तथा ठाकुरजी ने गैय्या चरने के लिए छोड़ दीं, फिर दोनों ने मिलकर दाल–बाटी बनाई–खाई। ग्वाल–बालक को उसमें बड़ा ही दिव्य स्वाद का अनुभव हुआ। उसने कहा – "भाई ! जामें से कछु हम अपने गुसाईं (गोस्वामी) जी को भी ले जायेंगे।" ठाकुरजी चुप रहे, उसने वृन्दावन पहुंचकर दाल–बाटी गुसाईं जी को अर्पण की। उन्होंने पूछा–'अरे ! ये कहां सै लायौ है?" तो उसने सारी बातें बता दीं। तब गुसाईं जी ने कहा –"तू अपने ग्वाल–बाल साथी कौ यहीं लिवा ला और दोनों यहीं दाल–बाटी बनाइयो।" उसने जब ठाकुरजी को कहा कि–"हम दूसरे चरवाहों को लेकर वृन्दावन कैसे जा सकते हैं, वहां हमारी राधारानी विराजती हैं, वे इनके सामने कैसे निकलेंगी?" जब यह बात लौटकर ग्वाल–वाले ने वृन्दावन में गुसाईं जी को बताई, तो उन्होंने

कहा कि –"अच्छा तू मुझे अपने साथ ले चल।" फिर वंशीवट पर दालबाटी बनी और सबने आनन्द से पायीं। तभी से प्रत्येक वर्ष श्रृंगार–वट के गुसाईं वंशीवट जाते हैं और दालवाटी बनाकर ठाकुरजी को भोग लगाते हैं। तथा इसी का प्रसाद स्वयं भी पाकर वापिस वृन्दावन चले आते हैं।

मांट गांव का मजरा छायरी है जहां पर यह दोनों पवित्र स्थल स्थित हैं। इस गांव के बाहर उत्तराखण्ड के श्री शंकराचार्य जी महाराज की समाधि है जिस पर सभी यात्रियों ने जाकर भक्तिभाव से दण्डवत की। वह यहीं के वासी थे।

इस पावन स्थल से ८.४० पर चलकर यात्रा–समूह मानसरोवर पर पहुंचा। यह स्थल अत्यन्त दर्शनीय है। सभी ने सरोवर को प्रणाम कर मानसरोवर के स्वच्छ–निर्मल जल का अतीव प्रेम सहित दर्शन तथा आचमन किया। वैष्णवजन कहते हैं कि मानिनी श्री राधारानी जी के अश्रु–प्रवाह से इस सरोवर की सृष्टि हुई। पास में ही स्थित 'श्री राधारानी का मंदिर' व 'मान–विहारी का मंदिर' देखा। मानबिहारी जी के मंदिर में श्री राधारानी व ठाकुर जी विराजमान हैं। मुख्य बात यह है कि मानिनी श्री राधाजी के चरणों को पकड़ कर श्री ठाकुरजी उन्हें मना रहे हैं। यहां पर प्रति पूर्णमासी और एकादशी को पास के गांव के लोग तथा हाथरस, अलीगढ़ आदि स्थानों से गांववासी पहुंचते हैं और दालवाटी का भोजन करते हैं। फाल्गुन मास की कृष्ण–एकादशी को यहां पर दूर–दूर से भक्तजन आते हैं, पूजते हैं, मनौतियां मनाते हैं और मंदिर में होली खेल कर अपने घर जाते हैं।

वैष्णव–भावना से परिपूर्ण सभी यात्रीगण मानसरोवर से चलकर १०.१५ बजे दाऊजी पहुंचे। यहां पर श्री बलदेव जी का अत्यंत विशाल भव्य मंदिर है, जिसमें बालभद्र जी की विशाल मूर्ति विराजमान है; एक ओर श्री रेवती जी पर्दे में हैं क्योंकि यहां उनकी ससुराल है। मंदिर में माखन–मिश्री का भोग लगाया जाता है। मंदिर के पास ही कुण्ड स्थित है जिसकी परिक्रमा कर यह भावभरी यात्रा आगे बढ़ी।

सभी यात्रीजन ११.५० पर ब्रह्माण्ड–घाट पहुंचे। श्री जमुना जी का दर्शन तथा आचमन किया। यहीं पर 'ब्रह्माण्ड–बिहारी' का मंदिर है जिसमें बाल–गोपाल रूप में श्री ठाकुरजी विराजमान हैं। श्रीठाकुरजी ने बाल गोपाल रूप में मिट्टी खाई थी। इसकी बलराम जी ने यशोदा मैय्या से शिकायत कर दी। इस पर ठाकुर जी ने कहा – "श्रीदामाजी सू पूंछ लो, मैंने नहीं खाई है।" बलराम जी ने कहा कि "बताओ खाई है कि नहीं?" श्रीदामा जी ने सोचा कि, कहता हूं कि खाई है तो ठाकुर जी रूठ जायेंगे और कहता हूं कि नहीं खाई है तो श्री बलराम जी की गदा मेरी अच्छी तरह खबर लेगी। अतः उन्होंने कहा कि "उस समय मेरी आंखे बन्द थीं।" ठाकुरजी ने मैय्या से कहा– "मेरा मुंह देख लो।" मैय्या ने देखा तो मुंह में उन्हें तीनों लोक दिखाई पड़े। यहां के मंदिर में ब्रज–रज का प्रसाद लगता है।

यहां से चलते हुए १२.१५ बजे महावन पहुंचे। दूर–दूर तक सुंदर वन का विस्तार है। सब लोग 'पंचायती मंदिर चौरासी खम्बा' पहुंचे जो पुरानी गोकुल में है। श्री वसुदेव जी मथुरा में जन्म होने के बाद श्री कृष्ण जी को यमुना पार करके यहीं पर लाये थे। यहां एक सुन्दर मंदिर है, जिसमें ८४ खम्भे हैं।

इस भव्य मंदिर में नन्दबाबा और यशोदा जी के मध्य बलभद्र जी के विशाल श्री–विग्रह हैं। इनके आगे छोटा–सा पालना है जिसमें छोटे से श्रीकृष्ण जी झूल रहे हैं। सभी यात्रियों ने क्रमशः

प्रभुजी का पालना झुलाकर अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति की और श्री ठाकुर जी का भो
लगवाया।

इसी मंदिर में अन्य छोटे मंदिर भी हैं। पास में स्थित 'सोवड' का दर्शन किया। जिसमें वसुदे जी और बलराम जी की मूर्तियां हैं। गोपियों के आये दिन के उलाहने से परेशान होकर मैय्या ज ने ठाकुरजी को ऊरवल से बांध दिया तो वह बहुत रोये और दोनों हाथों से नेत्रों के आंसू पौंछ लगे तब उनकी उसॉस से तीन रेखाओं से युक्त कण्ठ कॉपने लगा "मुहु : स्वास–कम्प त्रिरेखां कंठ स्थितं ग्रीवं।"

वसुदेव जी जिन बाल गोपाल को मथुरा से लाये थे, वही यशोदा मैय्या के झूला में झूल र थे और लौटते समय बेसुध पड़ीं यशोदा के आंचल में लिपटी बालिका को उठा ले गये थे। जिरे कंस ने पैर पकड़ कर पत्थर पर पछाड़ना चाहा तो उसके हाथ से छूटकर आकाश में दुर्गा स्वरु में स्थित होकर कह गईं कि– "कंस, तेरा मारने वाला तो पैदा हो चुका है।"

यह बालिका ही महामाया थीं जिनको ठाकुरजी ने आज्ञा दी थी कि "तुम यशोदा जी क यहां प्रगट होओ। तुम्हारे अनेक नाम संसार में प्रसिद्ध होंगे, जगदम्बा, कात्यायनी इत्यादि और तुम्हारी सदा ही पूजा होगी।" यही कात्यायनी देवी, जो वृन्दावन में–राधा बाग में विराज रही हैं। यही ब्रज की पूज्य देवी ब्रजेश्वरी हैं, जिनकी गोपियों ने एक मास निरन्तर सेवा करके श्री ठाकुरजी को प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त किया था।

यह पुण्यमय यात्रा एक बजे से लगभग रमण–रेती पहुंची। रमण–रेती एक रमणीक स्थल है। चारों ओर फैले हुए श्वेत–श्याम रेत कण वातावरण को एक भव्यता प्रदान कर रहे थे। रमणरेती में गुरु समाधि का दर्शन कर दण्डवत् की। 'श्री रमण बिहारी' जी के दर्शन बन्द हो चुके थे, अतः बाहर से ही सभी दण्डवत् प्रणाम् निवेदित किया और आश्रम का अवलोकर कर रावल की ओर प्रस्थान किया।

रावलग्राम और गोकुल धाम जमुना जी के किनारे लगभग सटे हुए हैं। श्री राधारानी का प्राकट्य रावल में भादों शुक्ल अष्टमी को हुआ और गोकुल में ठाकुरजी का प्राकट्य श्री राधारानी के प्राकट्य के साढ़े ग्यारह महीने बाद हुआ। यही महामाया यशोदा जी के प्रकट हुई थीं।

रावल–जन्मोत्सव आस–पास के गांव वाले दूध–दही–माखन लाकर बड़े प्रेम से मनाते हैं और उनका अभिषेक देखकर 'ब्रज–महिलायें' नृत्य करने लगती हैं। कुछ वर्षों से गोवर्धन में स्थित संत–निवास के परमपूज्य श्री संत जी महाराज अपने कृपापात्रों के साथ इस महोत्सव में केवल सम्मिलित ही नहीं होते हैं वरन् पूरा–पूरा सहयोग देते हैं

मध्यान्ह १.३० बजे यह यात्रा–समूह रावल ग्राम पहुंचा। सभी यात्रियों भक्तों ने शुद्ध अन्तःकरण व प्रभुल्लित मन से उत्साहपूर्वक 'श्री राधारानी एवं श्री ठाकुर जी' के दर्शन किए। जहां राधारानी का प्राकट्य हुआ था वह पवित्र स्थल 'गर्भ–ग्रह' देखा श्री युगल–सरकार के श्रीपाद–पद्मों की साष्टांग दण्डवत् कर मंदिर जी की परिक्रमा कर अपने–अपने जन्मान्तरों की पाप–राशि की विनष्ट कर "श्रीमद्भावगत का श्रवण करने के लिए प्रसन्नमना तत्पर हुऐ। श्री व्यास जी महाराज की अमृतवर्षिणी वाणी से निसृत श्री भगवत–लीलामृत कथा का रसास्वादन कर जीवन को कृतार्थ किया इसके उपरान्त सभी यात्रीगण अपने वाहनों में बैठकर निवास–स्थल की ओर लौटे।

यात्रा का पंचम दिवस

(२६ दिसम्बर १९६५)

श्रीहरि के श्रीचरण कमलों का चिंतन कर पांचवें दिन की यात्रा वृन्दावन स्थित श्री रंगजी के मंदिर से प्रारम्भ हुई। दर्शन बन्द थे, अतः बाहर से ही श्री रंगनाथ जी 'ठाकुरजी' को प्रणाम् किया और उनके सम्मुख स्थित 'हनुमान मंदिर' में श्री हनुमान जी का दर्शन एवं दण्डवत् प्रणाम् निवेदन किया। लाला बाबू के मंदिर में दर्शन किए तदुपरान्त श्री टाट बाबा के आश्रम की ओर चले। बीच में स्थित गोपेश्वर मंदिर के दर्शन कर गोपेश्वर महाराज को जल चढ़ा कर तथा दण्डवत् कर श्री टाटबाबा के आश्रम पहुंचे। वहां विराजमान 'श्री राधाकृष्ण' युगल–सरकार का दर्शन प्राप्त कर आनंद अनुभव किया। कुछ समय बाद टाटबाबा के दर्शनलाभ हुए। उन्होंने 'परिक्रमा' शब्द की व्याख्या करते हुए परिक्रमा की महत्ता पर प्रकाश डाला। सबने यहां छत के विशाल हॉल में स्वल्पाहार ग्रहण किया।

पूर्वान्ह ६.३० बजे सभी यात्रीगण 'वृन्दावन–परिक्रमा' के लिए प्रस्थित हुए। चलते हुए परिक्रमा मार्ग में ही स्थित श्री सेवकशरण जी के 'लता–कुंज' पर आयोजित गोष्ठी में १०.४५ पर पहुंच कर सम्मिलित हुए तथा वहां श्री ठाकुरजी के दर्शन किए। यहां पर चतुर्भज सखी के दर्शन किये। स्वल्पाहार लेकर ११.४५ पर अवशिष्ट परिक्रमा पूरी करने के लिए निकल पड़े। यह स्थल अटल–वन के नाम से विख्यात है।

एक बार इस वन में महान् पचण्ड अग्नि प्रकट हुई, तब सब भयभीत होकर प्रार्थना की कि –"हमें बचाओ, बचाओ।" ठाकुरजी ने कहा सब आंखें बन्द कर लो।" इसी बीच ठाकुर जी ने उस अग्नि का पान कर लिया और कुण्ड में स्नान किया, जो पास में ही है और दावानल–कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है। वृन्दावन की रेल–लाइन पार करके महात्माओं की पवित्र स्थलियों को दण्डवत करते हुए परिक्रमा–मार्ग के बायीं ओर "श्री संत–निवास" को दण्डवत् किया, जो कि एक महान् लीला–स्थली है।

छटीकरा रोड से शहर को जाते हुए 'अमेरिकन–मंदिर' है, वहां श्री ठाकुरजी को दण्डवत् और आगे चलकर श्री १०८ श्री बाबा गौरांगदास जी महाराज का समाधि–स्थल है को, बड़े प्रेम से दण्डवत् की पश्चात् पनुः लौटकर परिक्रमा–मार्ग ग्रहण कर लिया। आगे 'सत्तो बीबी' के मंदिर में दर्शन किए, जहां पर निभाई–निताई विराज रहे हैं। यहीं पर गंगा बीबी, चंदा बीबी और सत्तो बीबी की समाधियाँ हैं, जिनको दण्डवत् कर, पास में ही आगे स्थित रमण–रेती है – जो युगल–सरकार की नित्य लीलाभूमि है। उसकी पावन रज मुख में प्रसाद स्वरूप ग्रहण कर तथा मस्तक पर अतीत श्रद्धा सहित धारण की।

खेलते–खेलते जब प्रिया–प्रियतम थक जाते थे, तब वह 'वन–बिहार' में, जो कुछ पहिले ही छोड़ दिया थाः वहाँ विश्राम करते थे। मंदिर बड़ा ही सुन्दर और विशाल है, यहां के पूज्य महन्त जी 'सन्त–निवास' में कभी–कभी पधार कर कृपा करते रहते हैं। आगे चलकर बाबा चन्द्रशेखर जी को मार्ग से दण्डवत् कर निम्बार्क–स्थली को प्रणाम् किया, जहाँ समय–समय पर भागवत् हुआ करती है।

'टेर–कदम्ब' होते हुए 'कालीदह' पहुँचे। वहाँ पर कालिय नाग ने अपने शीशों पर नृत्य करते हुए श्री ठाकुरजी के दर्शन कर परम निर्भयता प्राप्त की। निकट ही 'आदित्य–टीला' है जहाँ श्री सूरनारायण जी को दण्डवत की। उसके पीछे की ओर श्रीसिद्ध पंडित जगदीश बाबा तथा श्री प्रबोधानन्द सरस्वती जी की समाधि है।

यह प्रबोधानन्द जी महाराज काशी में विराजते रहे और चैतन्य महाप्रभु को सन्यासरूप में नृत्य करते हुए सुनकर बहुत ही बुरा–भला कहते थे। लोगों के कहने पर भी महाप्रभुजी चुप हो जाते थे। तब सबने मिलकर एक गोष्ठी रची, जिसमें प्रबोधानन्दसरस्वती जी व महाप्रभुजी को बुलाने की महोत्सव रचा। श्री प्रबोधानन्द सरस्वती कई हजार शिष्यों के साथ आकर मुख्य आसन पर आ विराजे। जब महाप्रभुजी पधारे तो वे लोगों की जूतियों के पास बैठ गए, जब लोगों ने प्रबोधानन्द जी को बताया तो उन्होंने जबर दस्ती हाथ पकड़ कर अपने आसन के पास बिठाया और ताड़ना देते हुए कहा कि–"आप सन्यासी होते हुए क्यों उछल–कूद करते हो?"माहप्रभुजी ने कहा कि–"मैं तो कुछ नहीं जानत कि मुझसे कैसे अपराध होता रहता है।" प्रबोधानन्द जी ने कहा कि –"सुना है कि आप बड़ी संस्कृत पाठशाला चला रहे हैं और उसमें आप तरह–तरह की व्याख्या भी करते हैं, मैं एक श्लोक को सुना कर उसकी व्याख्या करता हूँ, आप बतायें कि क्या उसमें कहीं दोष है?'' तो महाप्रभु जी ने कहा–''आप जैसे महापुरुष की व्याख्या में दोष बतलाकर क्या अपराधी बनूँ?" तब सरस्वती जी के बहुत ही उकसाने पर कहा कि–" पहले आप मुझे क्षमा कर दें, तो मैं कुछ कहूँ।"फिर महाप्रभु जी ने उस श्लोक की विस्तृत व्याख्या की, इसी प्रकार तीन श्लोक और भी सरस्वती जी ने कहे तो महाप्रभुजी ने उनकी भी इसी प्रकार मंगल–व्याख्या कर दी। अन्तस्पर्शी अश्रुत तथा परम–सुंदर व्याख्या को सुनकर श्री प्रबोधानंद जी अपनी गद्दी से उतरकर श्री महाप्रभुजी के चरणों में गिर पड़े और बहुत–बहुत क्षमा–याचना की और कहा कि – ''प्रभुजी! अब तक का जीवन मैंने बेकार ही गँवाया है, अब आप कृपा करें।'' तो महाप्रभु जी ने उन्हें उठाकर गले लगाया उनके सभी सेवकों–शिष्यों ने महाप्रभुजी को दण्डवत की। श्री महाप्रभु जी ने उन्हें आज्ञा दी कि – ''तुम वृन्दावन जाओ और वहां युगल–सरकार की मन–वाणी से वन्दना करो। इन्होंने 'वृन्दावन–शतक', 'राधा–स्तोभ', 'राधा–सुधा–निधि' इत्यादि बहुत से गन्थ रचे। जिनका पठन–पाठन महात्मागण नित्य किया करते हैं और ठाकुर जी की प्रेम–लीला का रसास्वादन कर पर तृप्त रहते हैं।

आगे चलकर श्री बॉके बिहारी जी के अलभ्य दर्शन प्राप्त किये, जिनको जगत–प्रसिद्ध स्वामी श्री हरिदास जी महाराज ने प्रकट करके 'टट्टीस्थान' में पधराया, तदुपरान्त मंदिर बनने पर यहाँ विराजमान किया। यहाँ पर झाँकी के दर्शन बारम्बार परदा हटाकर ही होते हैं।

राधावल्लभ जी तथा आनंदीबाई के मंदिर के दूर से ही दर्शन करके परिक्रमा–मार्ग पर चल पड़े और चीर–घाट होते हुए सुदामा–कुटी पहुँचे। चीर–घाट से शाहजी के मंदिर के पिछाड़ी होकर मीराबाई के मंदिर को दंडवत की तथा श्री राधा–दामोदर मन्दिर पहुँचे। यहाँ पर श्री रूप गोस्वामी की समाधि है और श्री जीव गोस्वामी जी, जो उनके छोट भाई के पुत्र थे, सेवा में रहते थे, उन्हीं के द्वारा "गोपाल–चम्पू" बृहदग्रन्थ लिखा गया। मीराबाई ने भी इनसे मिलने के लिए पत्र भेजा था पर, उन्होंने स्त्रीरूप समझ कर अनिच्छा प्रकट कर दी, तो मीराबाई ने फिर लिख भेजा कि–"हम

तो समझते थे कि श्री वृन्दावन–धाम में पुरुष तो सिर्फ श्रीकृष्ण ही हैं और सब गोपियाँ हैं " यह पत्र पढ़कर श्री जीव गोस्वामी जी विह्वल हो गऐ और उनसे शीघ्र भेंट कर परमानंदित हुए।

बताया जाता है कि, एक बार श्री रूप गोस्वामी जी के पास श्री वल्लभाचार्य जी पधारे क्योंकि, महापुरुषों का आपस में मिलना सदा से होता आया है। गोस्वामी जी ने अपना लिखित ग्रंथ श्री रूप गोस्वामी जी को दिखाया और कहा कि इसमें यदि कोई त्रुटि हो तो आप ठीक कर दें। श्रीरूप गोस्वामी ने कहा कि आपके द्वारा लिखित ग्रंथ में त्रुटि कैसे हो सकती है, यह सुनकर गोस्वामी जी जब बाहर निकल रहे थे तो जीव गोस्वामी जी यमुना–स्नान करके आ रहे थे उन्होंने उनसे भी यही बात कही तो, जीवगोस्वामी जी ने बहुत–कुछ त्रुटियाँ निकाल दीं। तब तो गोस्वामी जी तुरन्त ही लौट पड़े और श्री रूप गोस्वामी जी से कहा कि–"आपके शिष्य ने तो इसमें बहुत–सी त्रुटियाँ बता दीं हैं।" यह सुनकर श्रीरूप गोस्वामी जी ने जीव गोस्वामी जी को बहुत–बहुत ताड़ना दी और तुरंत उनको अपने स्थान से भगा दिया। जीव गोस्वामी जी नन्दघाट पर यमुना किनारे टूटी–फूटी कुटिया बनाकर वास करने लगे। किसी ने श्री सनातन गोस्वामी जी से कहा कि एक महात्मा जमुना–किनारे बड़ी तपस्या कर रहे हैं, उनको देखकर लगतह हैकि व बहुत ही ऊँची पदवी के हैं। तो श्री सनातन गोस्वामी जी ने पता लगाया तब मालूम हुआ कि उन्हीं के भतीजे जीव गोस्वामी जी तपस्या कर रहे हैं, जिनको रूप गोस्वामी जी ने निकाल दिया है। उन्होंने श्री रूप गोस्वामी जी से कहकर क्षमा दिलवाई।

इस मंदिर में श्री महाप्रभुजी की दी हुई श्री गिर्राज–शिला विराज रही है जिसका दर्शन लोगों को वर्ष में एक बार ही श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी को कराया जाता है। जिन भक्तजनों को असके बारे में ज्ञात है वे तो नित्य–प्रति इसकी चार परिक्रमा देते ही रहते है।

थोड़ा आगे चलकर'सेवा कुज' है। जहाँ पर रात्रि में नित्य रास होता रहता है। सबसे विलक्षण बात तो यह है कि मनुष्यों की बात तो दूर, बन्दर तक भी वहाँ रात्रि में नहीं ठहरते। बताते हैं कि एक बंगाली महात्मा झाडियों में छिप गए और भरपूर रास–लीला के दर्शन किए। पातः किवाड़ खुलने पर गुसाई जी ने उन्हें अचेतन पाया और उनसे बार–बार पूछा पर वे कुछ भी न बता सके और लोगों ने भी उनको मंदिर से बाहर लाकर पूछा, फिर भी वे कुछ न बोल सके और शरीर त्याग दिया।

श्री चतुर्भुज दास जी, काठिया बाबा, की एक बार प्रबल इच्छा हुई कि ठाकुर जी की रास के दर्शन करुं। यह समझकर कि शरीर तो छूट ही जायेगा, उन्होंने दूसरे महात्मा से संध्या–सेवा करने की प्रार्थना की और फिर संध्या होते ही सेवा–कुँज में आ गए। शयन–आरती के दर्शन कर के वे एक घनी झाड़ी में छिप गए। रात्रि १२ बजे निकल कर सोचने लगे कि रास तो यहाँ हो नहीं रहा है। लोग कैसे कहते है कि "यहाँ नित्य–लीला होती है।" फिर भी जमे रहे तो क्या देखते हैं कि गोपियों ने वहाँ आकर झाडू लगाई और बड़े सुन्दर मखमली गद्दे बिछाये, रत्नजड़ित सिंहासन लगाया और रास से संबंधित सभी वस्तुएं लाकर रख दीं। थोड़ी देर पश्चात दो मूर्ति आकर विराज गई जिनका प्रकाश सहस्रों–सूर्यों जैसा था। उस प्रकाश से काठियाबाबा का सारा शरीर जलने लगा, आँखों पर खूब कसके हाथ भी लगा लिया पर आँखें जली जा रही थीं। तब घबराकर उन्होंने अपने गुरुजी महाराज का ध्यान किया, तो सब चीजें ओझल हो गई। उनको दुःख इस बात का

रहा कि–"प्रिया–प्रियतम जी के दर्शन इन नेत्रों से न कर सके।" शायद इस कारण कि गुरुज की आज्ञा के बिना यह सब प्रयत्न किया था।

वैसे तो, जिस मंदिर में ये सेवा करते थे, वहां स्थित प्रिया–प्रियतम इनसे बहुत प्रसन्न र थे। एब बार श्री जी की बहुत ही बहुमूल्य साड़ी चूहों ने कुतर दी। महाराज जी से जब कहा गय तो उन्होंने कहा–"भाई, जरा देखभाल रखा करो।" दूसरी बार जब दूसरी साड़ी कुतर गई तो बाब ने ठाकुर जी पर थप्पड़ मारने को हाथ उठाया तों ठाकुर जी हँस पड़े। फिर उसी दिन से साड़ीकिसी भी चूहे ने नही काटी। ऐसे ही एक बार ठाकुर जी को शयन करा कर किवाड़ बंद किए, फिर खिड़की के रास्ते आकर बरामदे में लेट गए। तो उनको इतनी ठण्ड लगी कि २–२ तथा ३–३ रजाइयां उढ़ाने पर भी ठण्ड नहीं गई। तो वे सोचने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि ठाकुर जी को रजाई न उढाई हो, पर मंदिर कैसे खोलूं? हिम्मत करके खिड़की को खोल कर क्या देखा कि ठाकुर जी कॉप रहे हैं, तो उन्होंने दौडकर ठाकुर जी को रजाई उढ़ाई और चुपके–से खिड़की बन्द करके लेट गए। फिर तो उनका भी उनका भी जाड़ा एक ही रजाई से ही भाग गया। उनके गुरुजी महारज ने एक बार उनसे कहा था कि "हमारे ठाकुरजी मूर्ति नहीं हैं,साक्षात् विराज रहे हैं।" अब वे वृंदावन में मस्ती से विचर रहे हैं।

एक बार सेवाकुंज में श्रीराधारानी का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था, उसमें राधावल्लभ जी के मंदिर के गोसाई व गोस्वामीनी लोग बड़े आनंद से गीत गा रही थीं और बरबस ही 'राधारानी की जय' बोल रही थीं, तो उसी समय नन्दगांव के गोस्वामी, जिन्हें आमंत्रित किया गया था, "श्री राधारानी की जै–जय" सुनकर उछल पड़े और बड़े जोर से कहा कि – "बोलो, राजा वृष–भानु के जुमाई की जय" – सब गोसाईं बहुत देर तक खिल–खिलाकर हंसते रहे।

आगे चलकर श्री शाहजी के मंदिर के ठाकुर के दर्शन किये। जिसको लखनऊ के शाह–भाइयों ने बहुत ही विस्तीर्ण–भव्य मंदिर बनवा कर श्री ठाकुर जी को प्रतिष्ठापित कर पधाराया था और सुचारु रूप से सेवा चलते रहने का समुचित प्रबन्ध कर दिया था। यहां पर प्रत्येक बसन्त–पंचमी पर विशाल मेला लगता है।

इस मंदिर से सटा हुआ ही "निधि–वन" है जहां श्री बांके बिहारी जी का प्राकट्य हुआ था और पास में ही युगल–सरकार की "रात्रि शयन–लीला होती रहती है। इस निधिवन में श्री जयदेव महाप्रभु जी ने रसभरे प्यार से प्यारे श्याम सुन्दर को बुला लिया था। वह पद, जिसके गाने से श्री श्यामसुन्दर जी सामेन आकर प्रकट हो गये थे वह, –"रातिसुखसारे, गतमभिसारे मदनमनोहर वेशम्" से प्रारम्भ होकर अंतिम पंक्ति "प्रभुदित हृदयं हरिमतिसदयं नमत सुकृतं कमनीयम्" पर समाप्त होता है। इन्होंने अपने ठाकुर श्री राधा माधव का प्राकट्य श्री रावल गांव से किया था। वह हमारी किशोरी जी की जन्मस्थली है तथा 'गीत–गोविन्द' की रचना तो ऐसी है जिसका पाठ तो सन्त–महात्मागण करते ही रहते हैं पर ठाकुर जी भी इस 'गीत–गोविन्द' की ललित रचनाओं के लालित्य पर सदा लट्टू बने ही रहते हैं। प्रसन्न होकर ठाकुर जी ने श्री जयदेव के लिए स्वयं अपने श्रीमुख से गाया हुआ (श्री जयदेव की रचित गुर्जरी राग में रचना का एक पद) निम्न है –

"श्रित् कमला मुख (कुच) मण्डल घृत कुण्डल ए,
कलित ललित बनमाल, जय जयदेव हरे।।".........

इन्हीं जयदेव जी की रचना में जो उन्होंने निधिवन में ठाकुर जी को सुनाई थी, उसमें आया है–"धीर समीरे यमुना तीरे, बसति वने वनमाली।" यह मंदिर यमुना जी के किनारे होने के कारण बाढ़ से बचाव के लिए बहुत सारी सीढ़ियां चढ़कर जाना होता है। इस गीत में आया है कि –"बसति वनें वनमाली" यहां 'बसति' शब्द यह प्रगट करता है कि ठाकुर जी यहां सदा बसते हैं। जब–जब समय मिले हम सभी को यहां के दर्शन अवश्य करना चाहिए। आगे चलकर जगन्नाथ जी का मंदिर बिल्कुल जमुना के किनारे है। इसकी सेवा सुचारुरूप से न चल पाने की सुनकर श्री सन्तजी महाराज ने मंदिर के प्रबन्ध की वार्ता चलाई परन्तु वहां के महन्त जी की पत्नी बड़े ही विचित्र स्वभाव की थीं, – जो, जो उसने चाहा, उसे श्री सन्त जी महाराज ने स्वीकार कर लिया, पर वह बराबर 'और भी', 'और भी' चाहती रही। इस पर सन्त जी ने खीझ कर वार्ता समाप्त कर दी। सुना है कि श्री रामबाबा ने इस मन्दिर का प्रबन्ध अब अपने हाथ में ले लिया है।

एक बार रमणरेती महावन के महाराज श्री श्री १०८ श्री हरिनाम दास जी ने मथुरा से अनुयायियों को लेकर इस मंदिर से कीर्तन उठाया था। उठाने से पहिले सुना था कि, एक छोटी–सी बालिका ने ऐसा सुंदर गीत गाया था, जो सब स्त्री समाज वहां उपस्थित था, आश्चर्य में पड़ गया था।

कीर्तन में सम्पूर्ण भक्त–समुदाय इतना भाव–विभोर होकर कीर्तन करते जाते थे कि कुछ लोग तो आनंदातिरेक में कीर्तन करते–करते ही गिर जाते थे, स्वाभाविक था कि अन्य वृन्दावनवासी इस अद्‌भुत कीर्तन में सम्मिलित हो गये। श्रीभगवान सहाय सक्सेना जी का गीत जो उन्होंने सन् ३४ में अन्य गीतों के साथ रचना कर मथुरा के अन्नापूर्णा–मंदिर में गाया था, उसको लोग सुन–सुनकर मस्त हो जाते थे। गीत की पंक्ति है –

"लताओं में ब्रज के गुजारा करेंगे,
कन्हैया, कन्हैया पुकारा करेंगे।
कहीं तो मिलेंगे वो बॉके बिहारी–
चरण पड़ हम उनको मनाया करेंगे।।"

पूरा गीत तो बहुत लम्बा है अतः इसके कीर्तन में समय लगना स्वाभाविक ही था। कीर्तन करते–करते आनंदी बाई के मंदिर में रात्र १० बजे पहुंचे। शयन हो चुका था, पर भक्तगण जगमोहन में उछल–कूद करते हुए जोर–जोर से कीर्तन कर रहे थे। माता आनंदीबाई जी ने चुपके से उठ कर, स्नानकर मंदिर में प्रवेश किया और घण्टी बजाकर श्रीठाकुर जी को जगा दिया। फिर क्या था, प्रभुजी के दर्शन पाते ही सभी भक्तों ने प्रेमानन्द में डूब कर खूब कीर्तन किया और समूचे वातावरण में प्रेम की धारा बहा दी, उन्होंने सब को प्रसाद बॉटा। सुनते हैं, 'राधावल्लभ' जी के गुसाईं–जन एवं कलकत्ते वाले मंदिर के पुजारी–गण आनन्दी बाई पर बरस पड़े कि, "तुमने सोये ठाकुर जी को कैसे जगा दिया। आनन्दीबाई जी ने कुछ संकुचित होकर कहा कि – "आप महापुरुष यह बतायें कि यदि आपके यहां रात्रि में कोई मेहमान आ जाये, तो आप सोते रहेंगे? हमने तो ठाकुर को यह कहकर जगा दिया कि, तेरे घर तेरे भक्त जन पधारे हैं और दर्शन के इच्छुक हैं, आप ही लोग बताइये कि हमने कौन–सा अपराध किया।" इस पर सब लोग चुप होकर शांत हो गये।

एक बार एक नायन–तहसीलदार अपने सहयोगी के साथ इस मंदिर में पधारे। आनन्दीबाई पूजा कर रहीं थीं। जैसे ही वह बाहर निकली, तो नायब तहसीलदार ने जो ठाकुर जी के भोग

के लिए फल–मिष्ठान लाये थे, आगे रख दिए, तो वह बड़े जोर से बरस पड़ीं कि – "तू ये क्य लाया है, आज तो मैं इसको खिला दूंगी पर कल जब ये मांगेगा तो कहां से लाऊंगी।" कहक हंस पड़ीं।

इस मंदिर में सब उत्सव मनाये जाते रहे हैं। एक बार होली की सवारी लेकर सेवा–कुंज जा रही थीं तो बाबा अवधदास जी महाराज के पास से होकर सवारी निकली। तब बाबा के कहने पर उनके सेवक ने सड़क के किनारे लाकर खड़ा कर दिया तो बाबा ने कहा – "दारी, तू ठाकुरजी को गली–गली नचाए फिरती है।" वे बोलीं "बाबा ! मैं का करूं, दारी को हमें खींच कै लै आयो है।" दोनों महानुभाव खुल कर निश्छल–हंसी हंस पड़े।

जगन्नाथ जी के मंदिर से चलकर 'सुदामा–कुटी' पहुंचे। यहां पर नित्य ब्रह्मचारी जी रामायण पर बड़ा सुन्दर–रसीला प्रवचन करते थे जिसको सुनने के लिए इतनी अपार भीड़ होती थी कि मंदिर में न समा सकने के कारण भक्तगण बाहर रेती पर बैठे रहते थे। उन्होंने हम सब पर कृपा करके इतनी विशाल 'भक्तमाल' ४ खण्डों में लिखी, जिसका पठन–पाठन कर रसास्वादन करना हम लोगों के भाग्य का आए दिन का अनूठा पुण्यमय कार्य हो गया। तत्पश्चात् पागल बाबा के मंदिर में ठाकुर जी को दण्डवत–प्रणाम् करते हुए वंशी–वट पर आ गए, यह वह स्थल है, जहां ठाकुर जी ने 'महारास' रचाया था। जिसमें महादेव बाबा ने गोपी–रूप में दर्शन किए थे।

वंशी के कारण इस स्थल का नाम 'वंशीवट' पड़ा। ठाकुरजी, जो वंशी धारण करते हैं, वह इस प्रकार की है –

"दस अंगुल परमान है महानन्द तेहि नाम।
एकादश अंगुल कहै, नन्द नाम सुखधाम।।
द्वादस अंगुल की विजय, चौदह को जय जान।
चार भेद या विधि कहै, राम–राम रस खान।।
पुनि इनके प्रत्येक के, तीन–तीन हैं भेद।
वेणु, मुरलिका, वंशीका कीचक कनक सुनेह।।
बांस पार सो वेणु है, मुरली सुवरन कीन्ह।
रत्नजटित वंशी प्रिया, प्रिय इच्छित फल दीन्ह।।
गौचारण में वेणु है, मुरली धुनि संकेत।
मनमानी जब करत हैं तब वंशी कर लेत।।"

जब वे मनमानी करते हैं तब वे चौथी प्रकार की वंशी बजाते हैं। इसी वंशी के स्वर ने महान आकर्षक गान किया जिससे कि गोपियां रात्रि के समय क्वार की शरद्–पूर्णिमा पर खिचीं चली आईं। इसमें इतना आकर्षण था कि वे जिस अवस्था में बैठी थीं, उसी हालत में चल दीं। अपने बड़े–बूढ़ों के मना करने पर भी। मधुर–मधुर वार्ता करने के पश्चात् गोपियों के मन में कुछ मान देखकर ठाकुर जी अदृश्य हो गए। सबने मिल कर उनकी समस्त लीलाओं का गान ही नहीं किया बल्कि उन्हीं की तरह लीलाओं की रचना की और अन्त में 'गोपी–गीत' का रो–रोकर मधुर गायन किया जिससे कि ठाकुरजी सामने प्रकट हो गए। वह दिव्यता से भरा दिवस कार्तिक–पूर्णिमा का था, इस लुका–छिपी में एक मास व्यतीय हो गया पर सबके देखते–देखते वह पूरा मास केवल

एक रात्रि में परिणित हो गया।

अगाध प्रेम देखकर ठाकुरजी ने अष्ट—सखियों, समस्त मंजरियों, ब्रज की असंख्य गोपिकाओं सहित महारास का संकल्प करते ही माया द्वारा महान् उत्सव रचा गया, जिसमें सब अपनी—अपनी सुध—बुध भूल गए। ऐसा दिव्य महारास न कभी रचा गया और न ही रचा जायेगा, जब तक कि श्रीठाकुर जी में इस प्रकार की प्रेरणा—स्फुरणा जाग्रत न हो। जब महारास रचा जा रहा था तब गोपी के रूप में भगवान् सदाशिव श्री वृन्दादेवी की आज्ञा से इस महारास के दर्शन कर सके। महारास की समाप्ति पर ललिता व विशाखा सखियों ने पान अर्पण करके भली—भांति पूजा की। उसके पश्चात् सदाशिव महादेव बाबा ने रासेश्वरी की सामवेदोक्त प्रार्थना—स्तुति की —

"राधा रासेश्वरी रम्या रामा च परमात्मन।
रासोद्भवा कृष्णकान्ता कृष्णवक्षः स्थल स्थिता।।
कृष्णप्राणाधिका देवी च महाविष्णोः प्रसूरपि।
सर्वदा विष्णुमाया च सत्या नित्या सनातनी।।
ब्रह्मस्वरूपा परमा निर्लिप्ता निर्गुणा परा।
वृन्दा वृन्दावने सा च विरजातट वासिनी।।
गोलोक वासिनी गोपी गोपीशा गोपमातृका।
सानंदा परमानन्दा नन्दनन्दन कामिनी।।
वृषभानुसुता शान्ता कान्ता पूर्णतमा च सा।
काम्या कलावती कन्या तीर्थपूजा सती शुभा।।
सप्तत्रिशंच्च नामानि वेदोक्तानि शुभानि च।
सारभूतानि पुण्यानि सर्वनामसु नारदः।।
यः पठेत् सयतो शुद्धो विष्णुभक्तोजितेन्द्रिय।
इहैव निश्चलां लक्ष्मी लब्धायाति हरेः परम्।।
हरिभक्तिं हरेर्दास्यं लभते नात्र संशयः।"

यह स्तोत्र श्री भोले बाबा ने नादरजी को भी बतलाया था।

"धन्यं वृन्दावने तेन, भक्ति नृर्त्यति यत्र चः।।"

जब श्री ठाकुर जी ने परम ऐश्वर्य्यमयी रासेश्वरी जी की श्री भोले बाबा द्वारा कल्पवृक्ष—फलदायी प्रार्थना सुनी तो बहुत प्रसन्न होकर भोले बाबा को अलबेली सरकार का वह मंत्र प्रदान किया जो उन्होंने अब तक किसी को नहीं दिया था। यह षट्अक्षरी विद्या है, जिसको ठाकुरजी ताबीज के रूप में अपने गले में सदा लटकाये रखते हैं और जिसका सदा जाप करते रहते हैं। वह विद्या निम्नलिखत है।

"रां ओं आं यं स्वाहा।।"

केवल यही नहीं उन्होंने "परमानन्द—सन्दोहकवच" (सामवेदोक्त) प्रदान किया, जिसको श्री ठाकुरजी स्वयं अपने कण्ठ देश में धारण करते हैं।" कार्तिकी पूर्णिमा प्राप्तं, नराणां जन्मखण्डनम्।" षट्—अक्षरी विद्या तथा कवच कार्तिकी—पूर्णिमा को अगर प्राप्त किया जाये तो मनुष्य के जन्म का खण्डन करने वाला होता है।

चौदह अक्षरों वाला भी मंत्र – "ऊं ह्रीं रां श्रीं ऐं कृष्ण–प्राणाधिकायै स्वाहा" भी दिया, जिसके बल पर मनुष्य दूसरे व्यक्ति को 'कुमार' की पदवी देने वाला हो जात है।

ग्यारह अक्षरों का मंत्र –'ऊं रां ह्रीं ऐं कृष्णप्रियायै स्वाहा।।' भी शंकरजी को प्रदान किया जिसकी शक्ति से मनुष्य मन की गति के समान सर्वत्र जा सकता है और अन्त में परमगति प्राप्त करता है।

दस अक्षर का महामंत्र –"ॐ रां श्रीं ऐं सर्वाद्यायै स्वाहा।।" इसके बल पर साधक योगीन्द्र बन जाता है, यह सब मंत्रों में मंत्र–राज है। यह सब मंत्र रासमण्डल में ही दिए थे–"राधिका सद्विधाने च शोभने रासमण्डले।"

प्रथम पूजन श्री किशोरीजी का श्रीठाकुरजी ने षट–अक्षरी विद्या से किया था। दूसरी बार रासमण्डल में महादेव बाबा ने सप्त–अक्षरी विद्या से किया था : "द्वितीये पूजिता देवी शंभुना रासमण्डले।

सप्ताक्षर्या विद्यया च पूज्या प्रण वाद्ययः।।"

तीसरी बार श्री ब्रह्माजी ने 'श्रीं' बीज युक्त अष्टाक्षरी विद्या से पूजन किया थाः –

"तृतीये पूजिता देवी, ब्रह्मणा परमादरम्।
श्रीं बीच युक्तया भक्त्या चाष्टाक्षर्या च विद्ययाः।।"

चौथी बार श्रीशेष भगवान् ने नव–अक्षरी विद्या से पूजन किया था। श्री ठाकुरजी ने महादेव बाबा को षोडशी महाविद्या भी प्रदान किया। यह मंत्र "ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं रां रासेश्वरी स्वाहा" है, इसे वेदों में परिपूर्णतमा कहा गया है और यह कामधेनुरूपा और सर्वसिद्धि प्रदायिनी है। इस मंत्र की सेवा व्यास जी तथा अगस्त्य जी ने की थी।

और द्वादशाक्षरी मंत्र "ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं रां राधिकायै स्वाहा" प्रदान किया, जिसकी पूजा दधीचि ऋषि ने की, उनकी अस्थियां अव्यर्थ मंत्र–पूत हो गई थीं, तदुपरान्त अपने मंत्र प्रदान किए–

"श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय स्वाहा।" – (अष्टाक्षरी)
"गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।।"–(दशाक्षरी)
"क्लीं ह्रीं स्वाहा।।"–(चतुर्थाक्षरी)

"ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।।" अष्टादशाक्षरी)–'श्री' और'ह्रीं' लगा देने से यह २० अक्षर का यंत्र बन जाता है। इस मंत्र से श्रेष्ठ तीनों लोकों में अन्य में अन्य मंत्र नहीं है। 'मंत्रोऽनेन सदृशोऽन्यो मनुर्नहि जगत्त्रये।" साथ और भी मंत्रों का भी उपदेश दिया –

"क्लीं कृष्णाय नमः" (षड्अक्षरों का मंत्र) व "ह्रीं श्रीं रक्षण कृष्णाय नमः" तथा "ह्रीं श्रीं क्लीं रक्ष कृष्णाय नमः "(दशाक्षरी मंत्र)

श्री किशोरी जी के तीन बीच मंत्र हैं – "रां" व "श्रीं" तथा "क्लीं"। श्री राधारानी जी का एक और मंत्रराज है :–"रां ह्रीं क्लीं राधायै स्वाहा" इन्हीं मंत्रों को भोले बाबा ने नारदजी को उनकी प्रार्थना पर बताये थे। अच्छा हो, कोई इन पावन् मंत्रों को धारण करना चाहे तो अपने गुरु देव जी की आज्ञा से उनकी सन्निधि में ही करै।

श्री महादेव बाबा ने नारद जी को श्री कृष्ण मंत्र प्रदान किया, जो स्वयं सिद्धि–प्रद और

कल्पतरु–स्वरूप है, वह मंत्र इस प्रकार है–"श्रीं ह्रीं कृष्णाय स्वाहाः।" यह कृष्ण मंत्रराज है।

साथ ही भोले बाबा ने नारदजी को यह भी बताया कि जो कोई द्विज, गुरु से दीक्षा लेता है वह कोई भी जाति का क्यों न हो स्वयं द्विज बन जाता है और इस प्रकार उसका दूसरा जन्म हो जाता है। यहां तक कि : 'मंत्र ग्रहणमात्रेण नरो नारायणो भवेत्।'

वैसे तो कहा है–

'जीव उधारन कारने नन्द नन्दन हरि राय।
भुवन मॉहि प्रकटत सदा गुरुरूप धरि आय।।'

और भी आगे देखिए –

'मानस कर गुरुदेव को कबहुं न मन में जान।'

सच पूछो तो, कृष्ण भगवान से बढ़कर शक्ति गुरु में है–

'कृष्ण रुष्ट होंय, तो गुरु राखें सटे;
गुरु रुष्ट होंय तो राख न सकें क्षण एक।"

अतः गुरु के चरणों में जिसकी पूर्ण निष्ठा है, वह सारे जगत को तार सकता है क्योंकि, वह साक्षात् भगवान है।–

'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुदेव नमः।'

प्रत्येक प्राणी को नित्य प्रातःकाल शैय्या से उठते समय सद्गुरुदेव को प्रणाम करना चाहिए तथा परमगुरु, परात्परगुरु और अरमेष्ठी गुरु अर्थात् सम्पूर्ण गुरु–परम्परा को भी नित्य प्रणाम् करना चाहिए।

एक बार नारदजी ने श्री ब्रह्माजी से राधारानी का गुह्यतर–स्तोत्र जानने की प्रार्थना की, तब उन्होंने कहा कि – 'अरे तात ! गुह्यतर नहीं, गुह्यतम–स्तोत्र जो मैंने स्वयं श्री नाराण के श्री मुख से सुना था, वह तुम्हें बताऊंगा"–

"श्री नारद उवाच।

किं तत् गुह्यतरं ब्रह्मन् यं चिन्तयमखिलेश्वरैः।।

श्री ब्रह्मोवाच–

श्रृणु गुह्यतमं तात नारायणमुखाच्छ्रुतम्।
सर्वदा पूजिता देवी राधा वृन्दा वने–वने।।
राधा विश्लेषतः कृष्णो, ध्येकदा प्रेमविह्वलः।
राधामंत्रं जपन् ध्यानम् राधा सर्वत्र पश्यति।।

ॐ अस्य श्री राधास्तोत्रमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री राधा देवता, क्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, राधा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

गृहे राधा बने राधा पृष्ठे राधा पुरः स्थिता।
यत्र तत्र स्थिता राधा राधैवाराध्यते मया।।
जिह्वा राधा श्रुतौ राधा नेत्रे राधा हृदिस्थिता।
सर्वांगव्यापिनी राधा राधैवाराध्यते मया।।

पूजा राधा जपे राधा राधिक भोजने गतौ।
रात्रौ राधा दिवा राधा राधैवाराध्यते मया।।
माधुर्य्यै मधुरा राधा महत्वे राधिका गुरुः।
सौन्दर्य्यै सुन्दरी राधा राधैवाराध्यते मया।।
राधा रससुधासिन्धु राधा सौभाग्य मंज्जरी।
राधा ब्रजांगना मुख्या राधैवाराध्यते मया।।
राधा पद्मानना पद्मा पद्मोभ्दवसमुभ्दवा।
पद्म विम्बार्चिता मुख्या राधैवाराध्यते मया।।
राधा कृष्णात्मिका नित्यं कृष्णोराधात्मिको ध्रुवम्।
वृन्दावनेश्वरी राधा राधैवाराध्यते मया।।
जिह्वाग्रे राधिका नाम नेत्राग्रे राधिका तनुः।
कर्णाग्रे राधिकाकीर्ति मनोग्रे राधिका मनुः।।
कृष्णेन पीत्तं स्तोत्रं राधिका प्रीतये परम्।
यः पठेत् प्रयतो नित्यं राधाकृष्ण प्रियो भवेत्।।''

ब्रह्माजी ने कहा—''नारद! इसका पाठ नित्य भगवान नारायण स्वयं अपने श्रीमुख से क हैं। इसकी महानता कहां तक आंकी जाये, जब श्री राधारानी को गुरु माना है।''

शरद्—पूर्णिमा (क्वार मास की पूर्णमासी) को जब थोड़ी देर ब्रज—गोपियों से मिलकर उ कुछ मान को देखकर श्री ठाकुरजी उस समय अदृश्य हो गए थे तब उनके विरह से प्रेमाकुल हो गोपियों ने कार्तिकी—पूर्णिमा तक भगवान की विविध लीलाओं स्मरण कर भाव—विह्वलता से गा किया। परात्पर परब्रह्म श्रीकृष्ण जी उनके दिव्य व पुनीत प्रेम से विवश होकर करुणासागर प्र हो गए। इस तरह संपूर्ण कार्तिक मास ठाकुरजी की विविध लीलाओं से ओत—प्रोत है। इस का इसका अत्यन्त महत्व है। यह पूरा मास एक दिवस के रूप में परवर्तित होकर व्यतीत हुआ, ठा जी ने ऐसी ही विचित्र पावनतम लीला रची।

इस पुनीत मास में जो भी कार्य किया जाये, वह परम मंगलदायक होता है। ''श्र गोपालसहस्रनाम'' का पाठ तथा 'श्री राधासहस्रनाम' का पाठ तो हर समय ही मंगलदायक है परं कार्तिक महीने में रात्रि को पाठ करने से अधिक फलदायक होता है और किसी—किसी को साक्षात्क भी प्राप्त होता है। इस महीने श्री किशोरी जी का ध्यान—पूजन कहीं भी किया जोय परम मंगलदाय है और अगर ब्रज—मण्डल में करें तो उसकी महिमा अपार है। इतना ही नहीं श्री राधारानी जी स्व कार्तिक—व्रत करती हैं। इसीलिए राधारानी को 'कार्तिक व्रतकर्त्री' कहकर सम्बोधित किया गय है। संपूर्ण उत्तर—भारत में अधिकांश महिलाएं पूरे महीने स्नान—ध्यान कर पूजन करती हैं। कार्तिक की अमावस्या, पूर्णमासी, एकादशी तथा अष्टमी की अधिक से अधिक महिमा शास्त्रों में गाई ग है।

जब महादेव बाबा (गोपेश्वर) जी को राधा—मंत्र प्रदान किया गया तो उसी समय रास—मण्डल में परम तेजोमय श्री दुर्वासा ऋषि जी पधारे। वहां यह सब देखकर आश्चर्य में पड़ गए और श्री लाड़िली जी से पूछा कि, यह सब क्या घटित हुआ —

'दुर्वासा मुनिर्मोहे कार्तिकयां रासमण्डले।'

श्री जी ने क्या बताया, यह तो वही जानें पर ऐसा इंगित अवश्य हुआ दिखता है कि "मेरे पास गोपी रूप में ही मेरी प्राप्ति होती है।" तपोमूर्ति दुर्वासा जी ने कोसी के पास 'कामर' गांव में स्थित होकर कई वर्ष उत्कट तपस्या की थी। वहां उनके नाम से एक कुण्ड है।

अब वह विश्रामघाट मथुरा के सामने यमुना पार विराज रहे हैं। एक बार गोपियों ने विविध प्रकार के पकवान बनाये और इच्छा की कि महर्षि दुर्वासाजी को यह संपूर्ण भोजन–सामग्री अर्पित कर कृतार्थ हों।

"घृतलिप्ता तक्तयुक्ता यमुनापार कौतुका
विचित्र कथका कृष्ण हास्य भाषण तत्परा।।"

गोपियों ने अपनी इच्छा श्री ठाकुरजी के सम्मुख प्रकट की तो ठाकुरजी ने कहा "यह बहुत ही उत्तम बात है, यमुना के उस पार जाकर मुनि जी की बहुत–बहुत सेवा करो।" इस पर गोपियों ने श्री ब्रजराम से कहा कि –'श्री यमुनाजी में जल का प्रवाह बहुत ही भयंकर चढ़ाव पर है, हम कैसे उस पार जायें।" इस पर ठाकुरजी ने कहा कि, तुम लोग जाकर यमुनाजी से कहना कि –'यदि हमारे ठाकुरजी आदि–ब्रह्मचारी हों तो हमें उस पार जाने के लिए मार्ग प्रदान करें।' इस पर सभी गोपियां खिल–खिलाकर हंस पड़ीं, तो ठाकुरजी ने कहा "इसमें हंसने की कोई बात नहीं है, तुम जाओ तो और कहो।" गोपियों ने कालिन्दी तट पर जाकर यमुनाजी से ठाकुरजी की कही हुई बात कही तो श्री यमुनाजी ने उन्हें रास्ता दे दिया। गोपियां यमुनापार कर महर्षि के पास पहुंची और उन्होंने बनाये हुए समस्त पक्वान अति श्रद्धाभाव से अर्पित किए, महर्षि तृप्त हुए। चलते समय गोपियों ने दुर्वासाजी से यमुनापार कराने की प्रार्थना की, इस पर दुर्वासाजी ने कहा कि तुम उधर से कैसे आईं। इस पर सबने ठाकुरजी की बात मुनिवर को बता दी। यह सुनकर दुर्वासाजी ने कहा कि –"यमुनाजी से जाकर कहना कि, अगर दुर्वासाजी केवल हवि का ही भक्षण करते हैं, तो हमको रास्ता दे देना।" इस पर गोपियों ने कहा कि "महाराज हम ऐसी बात कैसे कहें जबकि आपने हमारा निवेदित सम्पूर्ण भोजन स्वीकार कर पा लिया है" तो उन्होंने कहा कि, जाओ तुम ऐसे ही कहो, जैसा हमने बताया है। तब गोपियों ने इसी प्रकार कहा और यमुनाजी ने उन्हें वापिसी में फिर मार्ग दे दिया। यमुनापार करके गोपियां आपस में कहने लगीं कि –"देखो तो! हमारा ठाकुर भी झूठा और ऋषिराज भी झूठे" इस पर दूसरी सखी बोली–"अरी दारी! तूं जानें नॉय कि हमारो ठाकुर सारे काम करते हुए भी मन से कछु नॉय करै और सन्त–महात्मा लोग भी ऐसोई करैं हैं।"

ब्रज की सेवा–रीति महान् विलक्षण है, यह लोक–रीति तथा वेद–रीति से सर्वथा भिन्न अगोचर है। यहां पर हर लीला विचित्र ही नहीं, समझ से भी परे है, देखो न! महारास की समाप्ति पर ठाकुरजी का ताम्बूल–प्रसाद राधारानी ने पाया और राधारानी का चर्वित ताम्बूल कृष्ण भगवान् ने पाया –

"रासमंडलमध्ये च रासक्रीडांचकार सा।
कृष्ण चर्वित ताम्बूलं चरवाद राधिका सती।।
राधा चर्वित ताम्बूलं चरवाद मधुसूदनः।"

श्री कृष्णजी जिनके पाद–पद्मो में भक्तिपूर्वक नित्य अर्घ्य देते हैं –"यत्पाद पद्मे भतयार्दध्य

नित्यं कृष्णे ददाति च।।''

पुण्यप्रद परमपावन वृन्दावन के वनों में श्री कृष्ण ने भक्तिपूर्वक श्री राधाजी के श्री चरण-के नखों में अलकतक (महावर) लगाया था, उन मधुसून ने श्री राधा द्वारा चर्वित ताम्बूल था :– ''यदि पद्म नरवरे पुण्ये वृन्दावन वने।

सुस्निग्धालक्तक रस प्रेम्मा भक्त्या ददौ परा।
राधा चर्वित ताम्बूलं, चरवाद मधुसूदनः।।''

दीर्घकाल तक श्री कृष्ण की आराधना करने से मनुष्यों के जो मनोरथ सिद्ध होते है मनोरथ श्रीराधाजी की उपासना से अल्पकाल में ही सिद्ध हो जाते हैं।

'आराध्यं सुचिरं कृष्णं, यद्यत्कार्य भवेन्नृणाम्।
राधोपासनया तच्च भवेतु स्वल्पेन कालतः।।''

श्री ठाकुरजी सदा यही चाहते हैं कि हमारी शक्ति श्री राधारानी का नाम पहले लिया हमारा बाद में–'आदौ समुच्चरेराधा कृष्णं च माधवम्।।''

हे श्री गिर्राजजी महाराज आपका ही पावन सान्निध्य और सेवन परम पुण्यप्रद और फल है क्योंकि, श्री युगल–सरकार सदा ही यहां पर विविध प्रकार की लीलाएं करते हुए यहां रात्रि–श करते हैं। ''गोवर्धन गिरिवर परम निर्जन स्थल, राधाकांत करिवे शयन।'' श्री गिरिराजजी से प्रार्थना करनी चाहिए–''निज निकट निवासं देहि गोवर्धन त्वम्।'' और भी :

''श्री राधे वृषभानुजा पुरबहु मो अभिलाष्थ।
जनम–जनम मोहि दीजियो, गिरि गोवर्धन वास।''

श्री वंशीवट–बिहारीजी का दर्शन करके सभी भक्तजन–यात्रियों ने गोपेश्वर महादेवजी दर्शन गिए। आगे, ग्वालियर मंदिरजी के श्री ठाकुरजी का शयन हो चुका था, अतः बाहर से दण्डवत–प्रणाम किया तदुपरान्त श्री टाटबाबा के आश्रम पहुंचे वहां महाप्रसाद ग्रहण किया जो सुस्व एवं रसपूर्ण था।

प्रसाद पाकर सभी ने ''श्रीमद्भागवत कथा'' के लीलामृत का पान किया था कि इसी बी श्री टाट बाबाजी पधारे और संतजी तथा निर्वाण बाबाजी के मध्य आकर विराजे। उन तीनों मूर्ति के स्वरूपों के दर्शन कर समझ नहीं आता था कि क्या उपमा दें? मन करता था कि इस 'त्रिमूर् को बस देखते ही रहें। मोदीनगर के व्यासजी ने प्रवचन किया तथा एक भजन गाया।

श्री टाट बाबा ने भक्तजनों को संसार से विलग होकर प्रभु–चरणों में समर्पित होने का उपदे दिया। उन्होंने कहा कि 'वृन्दावन' भाव–जगत है जिसे स्थूल नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। य (अयं) शब्द जिसके लिए प्रयुक्त होता है वह 'जीवात्मा' नहीं है। प्रभु निरन्तर मौजूद हैं, पर प्राप नहीं है, संसार का पर्दा हटते ही परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। संसार से भागना नहीं, जागन है। कुछ देर अक्रिय, मौन, ध्यान की स्थिति में रहो अर्थात् इंद्रिय और मन द्वारा भी कुछ मत कर तभी परमात्मा की प्राप्ति होती है। परिक्रमा का अर्थ भगवान् के सान्निध्य में जाना, पास जान है। कलयुग में भगवान् भक्त की प्रतीक्षा करते हैं कि कब भक्त उनका स्मरण करें और वह उसक पास पहुंचे। लेकिन मनुष्य तो इन्द्रियों के पीछे घसिटता जाता है। संसार के अन्दर तैरना सीखो भोगों में लिप्त न हो, इंद्रिय–आसक्ति से अलग होकर प्रभु के निकट पहुंचो। ब्रज में सम्बन्ध क

महत्त्व है। गोपिकाएं क्या थी? प्रभु के साथ उनका अपनत्व का सम्बन्ध बन गया था। संत–महात्माओं के द्वारा रस उड़ेला गया–जीव मात्र के लिए। सावधान होकर गागर सम्हालो। निश्चय करो कि इन कानों से किसी की बुराई नहीं सुनागे, वाणी से निन्दा नहीं करोगे और इन आंखों से दूसरों के दोष नहीं देखोगे। प्रभु का सतत् नाम स्मरण तथा सन्त–दर्शन से मनुष्य पूर्ण पवित्र होता है। सन्त साबुन लगाते हैं लेकिन मनुष्य फिर धूल उड़ाकर अपने को गन्दा कर लेता है जैसे कि बालक नहाने के बाद साफ कपड़े पहिनता है और फिर धूल–धूसरित कर लेता है। संसार की बुराइयों को मन में नहीं आने देना। इंद्रियों और मन को अपवित्र नहीं होने देना। इस प्रकार जीने से भाव उत्पन्न होगा और श्री राधारानी की कृपा होगी, अब इस महान धन को सम्हालो।''

इस सारगर्भित संक्षिप्त प्रवचन को सुनकर मन आनंदित हुआ। सभी भावपूरित यात्री यहां से चलकर श्री रंगजी के मंदिर में श्री ठाकुरजी के दर्शन करके अपने वाहनों के द्वारा अपने विश्राम–स्थल के लिए लौट पड़े।

जब ठाकुरजी देवताओं का कार्य करके गौलोक धाम को पधारे तो वज्रनाभ, जो ठाकुरजी के पन्ती (प्रपौत्र) थे; अपनी माताओं सहित (पटरानियों को छोड़कर) अर्जुन के साथ हस्तिनापुर आ गए।

जब युधिष्ठिरजी ने ठाकुरजी के अदृश्य होने की बात सुनी तो, माता कुन्ती सहित सभी भाइयों को अपार दुःख हुआ। उन्होंने तुरन्त ही परीक्षित का राज्याभिषेक कर स्वर्गलोक की यात्रा की। साथ ही साथ वज्रनाभ को मथुरा राज्य का अधिकारी नियुक्त कर दिया। कुछ समय पश्चात् वज्रनाभजी राजा परीक्षित के पास पहुंचे और कहा कि–"तात्, हम ब्रज–मण्डल के राजा तो हो गए परन्तु प्रजा के बिना राजा का कोई अस्तित्व नहीं, वहां सब सूना–सूना पड़ा हुआ है; मैं राज्य किस पर करूं?'' यह सुनकर राजा परीक्षित ने श्री शांडिल्यजी को, जो नंदबाबा के पुरोहित थे; बुलवाया और वज्रनाभजी का कथन सुनाया। यह सुनकर शांडिल्यजी ने वज्रनाभ से कहा–"ये ठीक है कि इस समय मथुरा मण्डल सूना लगा रहा है पर, इसके अन्तर्गत समस्त ब्रजभूमि सच्चिदानन्दमयी है। यहां के लता–पत्र, वृक्ष आदि तथा गऊऐं, गोपी–ग्वाल सब चिन्मय हैं, इस ब्रजभूमि में सदा ही लीला होती है।

भगवान् की नित्य–लीला दो प्रकार की है। एक वास्तविक, दूसरी व्यावहारिक। वास्तविक–लीला केवल उनके नित्य परिकर, जो उनके अन्तरंग भक्त हैं, देख सकते हैं। व्यावहारिक–लीला केवल पृथ्वी पर होती है, उसे हम सभी देखते हैं। वास्तविक–लीला अदृश्य हो जाती है जब ठाकुर जी इस लोक को छोड़ जाते हैं। इसी कारण सब ओर सूना ही सूना दीख पड़ता है क्योंकि, व्यवहार में जो लीला–रस बरसा था, वह भी अदृश्य लगने लगता है। यह परम सत्य है कि 'जो रस ब्रजमंडल में बरसे वह रस तीन लोक में नहीं है और न ही सत्यलोक में है।"

"अतः बज्रनाभ! अब तुम जहां–जहा ठाकुर जी के समय में वन–उपवन, कुण्ड, सरोवर तथा जो लीला–स्थल रहे हैं, उनकी स्थापना करो और जो गांव उस समय स्थित थे उनका वही नामकरण करके उनको बसाओ। रहा उनकी लीलाओं का ज्ञान,वह तुमको उद्धवजी ही,जोकि ठाकुरजी के अंतरंग हैः बता सकते हैं। उद्धव जी गिरिराज जी की तलहटी में कुसुम–सरोवर के पास लता–पत्ता के रूप में विराजते हैं। वह साक्षात रूप में प्रकट हो सकते हैं यदि तुम सब मिलकर प्रेम–पूर्वक

कीर्तन करो। ये स्थल कहते हैं। यहीं पर श्रीनारदजी ने वृन्दा देवी की आज्ञा से सरोवर में स्नान करके गोजीरूप पाया था तथा रासलीला में प्रवेश पाकर श्री युगल–सरकार के दर्शन किए उनकी आज्ञा से वह बहुत पहिले से ही यहां पर भजन कर रहे हैं।" इतना कहकर शंडिल्य अपने आश्रम पधारे गये।

सम्पूर्ण वृतान्त जानकर महाराज परीक्षित ने इन्द्रप्रथ (दिल्ली) से बड़े–बड़े सेठों को बुला हजारों की संख्या में लोगों को मथुरा में रहने को जगह दी तथा ब्राह्मणों और वानरों को भी म नगरी में बसाया। इस प्रकार राजा परीक्षित की सहयाता और महर्षि शांडिल्य की कृपा से उन स्थानों की खोज की गई, जहाँ–जहाँ श्रीभगवान जी श्रीकृष्ण महाराज जी अपने प्रेमी गोपं–गो के साथ नाना प्रकार की लीलाएं किया करते थे। वहां की लीला के अनुसार ही उस स्थान नामकरण किया। उन स्थानों पर अनेकों गाँव बसाये, कुऐं खुदवाये, कुन्ज और बगीचों का निर्माण किया गया। महादेव बाबा की प्रमुख–स्थलों पर स्थापना की तथा हरि–देव आदि नामों से भगवत् विग्रह स्थाापित किए।

एक दिन श्रीकृष्ण की विरह–वेदना से व्याकुल सोलह हजार रानियों ने अपने प्रियतम पति की पटरानी कांलिन्दी जी को आनंदित देखकर उनसे कहने लगीं–'हम तो उनकी विरह–अ में जले जा रहे हैं और तुम प्रसन्न हो? इसका क्या कारण है?' तब यमुनाजी ने कहा कि,–"तुम ले का अभी सर्वाश में नहीं जानती हों, इसलिए इतनी व्याकुल हो रही हो। यदि तुम्हें उद्धवजी का सत्स प्राप्त हो जाय तो तुम सब अपने प्रियतम श्रीकृष्ण के साथ नित्य–विहार का सुख प्राप्त कर लोगी तब रानियों ने उनसे पूछा कि' कोई ऐसा उपाय बताओं जिससे उद्धव जी शीघ्र मिल जायें।'

यमुना जी ने बताया कि–'जब श्रीकृष्ण अपने रामधाम को पधारने लगे तब उन्होंने उद्धव से कहा था कि, साधन करने की भूमि है बद्रिकाश्रम। अतः तुम वहीं जाओ–अपनी साधना पू करने के लिए। उद्धवजी इस समय साक्षात् स्वरूप से बद्रिकाश्रम में पधारते हैं पर साधन व फल–स्वरूप भूमि है–'ब्रजभूमि। जिसको रहस्यों सहित भगवान् ने पहिले ही उद्धवजी को बता दि था किन्तु, यह फलभूमि भगवान के अन्तर्ध्यान होने के बाद ही दृष्टि से परे जा चुकी है। जो लो व्यावहारकि लीला में स्थित हैं, वे नित्यलीला का दर्शन पाने के अधिकारी नहीं हैं। इसलिए यह आने वालों को सभी ओर निर्जन वन सूना ही सूना दिखाई देता है क्योंकि, वे वास्तविक लील में स्थित भक्तजनों को नहीं देख सकते। फिर भी एक स्थान है जहां उद्धवजी का दर्शन हो सकत है। गोवर्धन पर्वत के निकट भगवान, की लीला–सहचरी गोपियों की विहार स्थली है। वहां व लता–अंकुर और बेलों के रूप में उद्धवजी अवश्य निवास करते हैं। तुम सभी लोग वज्रनाभ क लेकर वहां पर जाओ और कुसुम–सरोवर के पास ठहरो और भगवान् के नाम तथा लीलाओं क कीर्तन का महान्–यज्ञ आरंभ करो, तब निश्चय है वहां उद्धवजी का दर्शन अवश्य मिलेगा। साथ तुम्हारा मोह भी समूल नष्ट हो जायेगा।।"

वज्रनाभ जी ने सभी एकत्रित कर संकीर्तन का महायज्ञ रचा। उसे देख कर, श्रीउद्धवजी जिनको कि भगवान ने अपना 'उत्सव–स्वरूप' प्रदान किया है:–सबके देखते–देखते तृण, गुल्म और लताओं के समूह से प्रगट होकर सबके सामने आ गए। उनका शरीर श्याम–वर्ण था, उस पर पीताम्बर शोभित हो रहा था। गले में वनमाला और गुंजा की माला धराण किए हुए थे तथा उनके श्रीमुख

से बारम्बार गोजीवल्लभ श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान हो रहा था। उन्होंने सभी लोगों को इंगित करते हुए कहा—"देखो, साधिका भूमि बद्रिकाश्रम है पर साधना की फल—श्रुति यह ब्रज की भूमि है। भगवान् श्रीकृष्ण इस ब्रजभूमि में सदा विद्यमान रहते हैं, इस भूमि में एवं उनके स्वरूप में कुछ भी अन्तर नहीं है। सभी चर—अचर ब्रजवासी भगवान के अंग में स्थित हैं यदि तुम लोग भी श्री कृष्ण—तत्त्व का प्रकाश पाना चहते हो तो वह 'श्रीमद्भागवत' से ही प्राप्त होता है। भगवान के भक्त जहां जब कभी श्रीमद्भागवत—शास्त्र का श्रवण व कीर्तन रहते हैं, वहां उस समय भगवान् श्री कृष्ण साक्षात् रूप से विद्यमान रहते हैं। वहां—वहां भी श्रीकृष्ण गोपी—प्रियतमाओं के साथ विद्यमान रहते हैं। इस पवित्र भारतवर्ष में जन्म पाकर, जिन्होंने श्रीमद्भागवत नहीं सुना, उन्होंने अपने हाथों अपनी ही हत्या कर ली। जिन बड़भागियों ने प्रतिदिन श्रीमद्भागवत का सेवन किया, उन्होंने अपने माता—पिता व पत्नी तीनों ही कुल का उद्धार कर दिया।" उन्होंने यह भी बताया कि "भगवान् ने मुझे बृज में अपनी प्रियतमाओं—गोपियों की सेवाओं में नियुक्त किया है, इसी के बल पर यहां नारद—कुण्ड पर सदा स्वेच्छा से विद्यमान रहता हूं।"

श्री उद्धवजी ने एक महीने तक श्रीमद्भागवत् की रस—धारा बहायी। जिससे भगवान् की लीलाऐं प्रकाशित हो गई और सर्वत्र श्री कृष्ण चन्द जी का साक्षात्कार होने लगा। जो लोग इस भगवत्—प्राप्ति की कथा को सुनेंगे अथवा कहेंगे, उन्हें भगवान् कभी न कभी अवश्य अपनायेंगे।

श्री ब्रह्माजी श्रीमद्भागवत का सप्ताह—पारायण सदा करते रहते हैं।

जब भगवान विष्णु स्वयं कहते हैं और लक्ष्मीजी उसे प्रेम से श्रवण करती हैं, उस समय प्रत्येक बार श्रीमद्भागवत—कथा का श्रवण एक मास में समाप्त होता है।

जब लक्ष्मीजी स्वयं वक्ता होती हैं और विष्णु भगवान् श्रोता बनकर सुनते हैं तब भागवत्—कथा रसास्वादन दो मास तक होता रहता है।

श्री सदाशिव रुद्रजी ने भी परायण क्रम से भागवतजी का सेवन किया।

जब ब्रह्मा आदि देवता भगवान से अपने परमधाम में पधारने की प्रार्थना करके चले गए तब उस पीपल की जड़ के पास खड़े होकर मुझे श्रीमद्भागवत का उपदेश स्वयं किया और मुझे उसका, दृढ़ निश्चय करा दिया, जिसके प्रभाव से नारद—कुण्ड पर लताओं और बेलों में निवास करता हूं।

श्री उद्धवजी ने सभी को भली—भांति समझा कर कहा कि ब्रज—भूमि के समस्त चर—अचर प्राणी, गोप—गोपी, सन्त—महात्मा, गौए—बछड़े इत्यादि तथा गिरि—पर्वत, कुण्ड—सरोवर और वन—उपवन सभी ठाकुरजी के अंग हैं।

पर अत्यन्त खेद है कि हम सभी इस बात को बिल्कुल भूल रहे हैं। ब्रज—वास का मुख्य ध्येय यही है कि, हम अपनी शक्ति के अनुसार यह प्रयत्न करें कि इनका स्वरूप पहले जैसा ही हो जाये। हम लोग यदि १८ पुराणों में से किसी एक का भी भली—भांति अध्ययन नहीं कर सकते तो इस मथुरा जिले के परम भागवत अंग्रेज कलक्टर का, स्वयं मौके पर जाकर देख—देख कर जिला गजेटियर में जो कुछ लिखा है; उसको हृदयंगम किया जा सकता है। संक्षेप में उनका स्वयं का अनुभव, स्वयं के विचार इस पावन ब्रज—भूमि के विषय में हैं (जो कि, कोकिला के दर्शन के साथ—साथ लिखा जा चुका है।)

श्री शांडिल्यजी ने परीक्षित से कहा—'परीक्षित! अभी—अभी जो अवतार प्रकट हुआ है, वह इस

अड़तीसवें कल्प के द्वापर के अन्त में हुआ है। ठाकुरजी अब देव–कार्य सम्पन्न कर अप धाम पधार गऐ। ठाकुरजी का यह अवतार, जो साढ़े पांच हजार वर्ष पहले हुआ था; वह २८ अवतार था।

प्रत्येक कल्प में ४ युग होते हैं जिनकी आयु निम्न है–सतयुग ३४,५६,००० वर्ष, त्रेतायु १७,२८,००० द्वापर युग ८,६४,००० वर्ष तथा कलियुग ४,३२,००० वर्ष इस प्रकार कुल ६४,८०,००० व हुए। इस कुल योग ६४,८०,००० वर्ष में २८ का गुणित–१८,१४,४०,००० अट्ठारह करोड़ चौदह लार चालीस हजार वर्ष पहिले प्रथम कल्प का प्रारंभ हुआ था।

इससे सुस्पष्ट है कि अब जो अवतार हुआ है, वह प्रारम्भिक कल्प के उपरान्त हुआ अर्थ चौकड़ी की आयु से २७ गुना तथा सतयुग, त्रेतायुग व द्वापर युग की २०० वर्ष को छोड़कर हुअ था जो इस प्रकार गणित होता है क्योंकि ठाकुरजी १२५ वर्ष की आयु पार करके गौलोक क पधार गऐ थे। यह सर्वविदित है कि यह परम पावन लोक, स्वर्ण तथा वैकुण्ठ से ऊपर से स्थित है और वहीं पर प्रिया–प्रियतम अपनी नित्य–लीला भूमि ब्रज–भूमि में सदा विहार करते रहते हैं

ठाकुरजी का प्राकट्य प्रथम कल्प में ६०,४६,८०० वर्ष पश्चात् हुआ था। उनके श्रीमुख की वाणी है–'संभवामि युगे–युगे'।

उससे कुछ पहिले श्री गिरिराजजी, यमुनाजी तथा निज वृन्दावन धाम का भी प्राकट्य हो युका था और ग्वाल–बाल, गोपिकाएं अन्य गिरि, पावन कदम्ब इत्यादि भांति–भांति के वृक्ष, लता–तृण के रूप में सन्त–महात्मा तथा देवी–देवताओं ने ठाकुरजी के आदेश से इस ब्रज में जन्म लिय था।

श्री गिरिराज जी का प्राकट्य ५,५०० वर्ष पहिले नहीं, वरन् करोड़ों वर्ष पहिले का है। जो केवल ब्रजमण्डल या भारतवर्ष की ही नहीं वरन् तीनों लोकों की शोभा बढ़ाये हुए है।

किसी युग की यह घटना सत्य है कि श्री हनुमानजी श्री गिरि राज पर्वत को लेकर आकशमार्ग से लंका जाने हेतु पुल बांधने के लिए जा रहे थे कि तभी आकाशवाणी हुई कि "समुद्र पर पुल बंध गया है और गिरि–पर्वत वृक्षादि अब लाने की आवशकता नहीं है" तो, गिरि–पर्वत ने हनुमानजी से कहा कि आप तो मुझे अपने प्रभु के दर्शन कराने के लिए लाये थे, अब क्या होगा? तब हनुमानजी ने विश्वास दिलाया और कहा कि, तुम यशोदानन्दन की साक्षात् कृपा के अधिकारी होगे और वे तुम्हारे ऊपर विचित्र लीलाएं समय–समय पर करते रहेंगे, अब तुम इस ब्रजभूमि पर स्थित हो जाओ औरसमय की प्रतीक्षा करो।

दूसरी गाथा है कि एक बार पुलस्त्य ऋषि काशी से विचरण करते हुए द्रोण–पर्वत पर पहुंचे और वहां गिरिराज की शोभा देखकर ललचाया कि इन्हें किसी प्रकार काशी जी ले चलूं ताकि इनकी छत्र–छाया में बैठकर भजन कर सकूं। उन्होंने द्रोण–पर्वत से गिरिराजजी मांगने की प्रार्थना की तो उन्होंने बहुत गिड़गिड़ाकर अपनी अनिच्छा प्रदर्शित की परन्तु, कहीं ऋषि श्राप न दे दें यह विचार कर अपनी सहमति दे दी। श्रीगिरिराज जी ने कहा कि मैं ८ योजन लम्बा पॉच योजन चौड़ा और २ योजन ऊंचा हूं, आप मुझे कैसे ले जा सकेंगे? तब ऋषि ने कहा कि 'मैं अपनी तपस्या के प्रभाव से अपनी हथेली पर ले चलूंगा।' इस पर गिरिराजजी ने कहा –'आप जहां मुझे धरातल पर रख देंगे, मैं वहीं स्थित हो जाऊंगा।' ऋषि ने कहा कि, 'ऐसा अवसर नहीं आयेगा।' जब ऋषि चलते

ए ब्रजभूमिं पर आऐ तो उन्हें लघुशंका का आवेग हुआ और गिरिराज को स्थिर कर लघुशंका को ले गए। स्नान–पूजा के बाद जब गिरिराज को उठाने लगे तो वह इतने भारी हो गए कि ऋषि के सभी प्रयत्न निष्फल हो गये और वे डिगा भी न सके। पुलस्त्य ने कहा कि "तुम इतने गरिष्ठ क्यों हो गए हो?"

"मैंने पहले ही आपसे वचन ले लिया था कि, जहां पर आप मुझे स्थिर कर दोगे; मैं वहीं पर स्थापित हो जाऊंगा।" ऋषि को अब सब याद आ गया परन्तु उन्होंने क्रोधित होगर गिरिराज को शाप दे दिया–"तुम तिल–तिल घटते जाओगे।"

एक तिल १ इंच का दसवॉ हिस्सा है, उस प्रकार १ इन्च १० दिन के बराबर हुआ यानी कि गिरिराज जी की ऊंचाई १०० फुट है तो ह्रास गणना के द्वारा १२ वर्ष २ दिन में धॅस जायेंगे जो अपने आप में अनहोनी–सा लगता है। हां, यह सत्य है कि गिरिराज जी का ह्रास प्रतिदिन होता आ रहा है परन्तु, यह भी ध्रुव सत्य है कि गिरिराज जी श्रीठाकुरजी के निज अंग हैं और सदा अपनी अनूठी अवस्था में ही विराजते रहेंगे। आप सब अपनी श्रद्धा व भाव के अनुसार विचार करें।

एक अन्य महत्वपूर्ण उल्लेख 'श्रीनारद पुराण' में इस प्रकार है। प्राचीन कल्प की बात है। वृन्दावन में गोवर्धन नाम के एक ब्राह्मण ने बड़ी भारी तपस्या की। वह समस्त संसार से विरक्त हो गया था। देवताओं के स्वामी अविनाशी भगवान विष्णु अपनी लीलाभूमि में उस ब्राह्मण को वर देने गए। ब्राह्मण ने देखा देवदेवेश्वर श्रीहरि ने अपने हाथों में शंख–चक्र–गदा–पद्म धारण कर रखें हैं, उनका वक्षस्थल कौस्तुभमणि से सुशोभित है, कानों में मकराकृति कुण्डल झिलमिला रहे हैं। माथे पर सुन्दर किरीट–चमक रहा है, हाथों में कड़े शोभा पा रहे हैं। पैरों में मधुर रुनझुन करने वाले नूरपुर शोभित हैं, उनके आगे का पूरा अंग वनमाला से घिर गया है, वक्षस्थल पर श्रीवत्सचिन्ह सुशोभित हो रहा है। नूतन मेघ के समान श्याम वर्ण शरीर पर विद्युत–की–सी कांति वाला रेशमी पीताम्बर प्रकाशित हो रहा है। नाभि और ग्रीवा सुन्दर है। कपोल और नासिका सुघर हैं। मोती के समान दंतपक्ति के साथ मुख पर मनोहर मुस्कान की छटा–छा रही है। जानु, उरु, भुजाऐं तथा शरीर का मध्य भाग अति सुन्दर है। कृपा के तो वे महासागर ही हैं सदा आनंद में डूबे हुए इनके मुखारविन्द से सदा प्रसन्नता बरसती रहती है।

इस प्रकार श्री भगवान की झांकी देखकर ब्राह्मण सहसा उठ खड़े हुए और पृथ्वी पर दण्ड की भांति लेटकर उन्होंने भगवान् को साष्टांग प्रणाम किया। फिर भगवान् के द्वारा वर मांगने की आज्ञा मिलने पर गोवर्धन ब्राह्मण श्री हरि से बोले–'प्रभो! आप मुझे दोनों चरणों से दबाकर मेरी पीठ पर खड़े रहें, यही मेरे लिए वर है।"

गोवर्धन का यह वचन सुनकर भक्तवत्सल भगवान ने बार–बार इस पर विचार किया; फिर वे उसकी पीठ पर चढ़कर खड़े हो गऐ। तब ब्राह्मण ने कहा–'हे देव ! जगत्पते ! मेरी पीठ पर खड़े हुए आपको अब मैं उतार नहीं सकता; इसलिए इसी रूप में स्थित हो जाइये।'

तभी से विश्वात्मा भगवान् पर्वतरूपधारी गोवर्धन ब्राह्मण का त्याग न करके प्रतिदिन योगीवन में जाते हैं।

कृष्णावतार में भगवान ने गोवर्धन ब्राह्मण को अपने सारूप–भाव को प्राप्त हुआ जान कर उसे

नन्द आदि के द्वारा गिरिराज पूजन के बाद भोजन कराया। अन्नकूट तथा दुग्ध आदि के द्व पर्वतरूप–धारी ब्राह्मण को तृप्त करने के पश्चात् उसे प्यासा जानकर भगवान् ने नूतन मेघों जल पिलाया। इस कार्य से भगवान् वासुदेव कावह मित्र हो गया। जो मनुष्य भक्तिपूर्वक विभि उपचारों से गोवर्धन पर्वत की पूजा और प्रदाक्षिणाभाव से परिक्रमा करता है, उसका फिर इस संस में जन्म नहीं होता। भगवान् के निवास से गोवर्धन पर्वत परम पवित्र हो गया है। यमुना जैसी पु दायिनी नदी नहीं है। गिरिराज गोवर्धन जैसा पुण्यमय पर्वत नहीं है। भगवान् गोपीनाथ पग– पर प्रेम से द्रवित–चित्त हो ऊंच–नीच का विचार नहीं करते; अपने सब भक्तों का उद्धार कर देते हैं। जो मनुष्य पवित्र भाव से इस ब्रज–महामात्य्न का श्रवण करता है; वह भी निस्संदेह साक्ष विष्णु रूप ही है। भगवान की भक्ति मनुष्यों को भगवत्–स्वरूप की प्राप्ति कराने वाली है।

बृज–महिमा

"जयति तेऽधिकं जन्मना ब्राज।"

ये थे उद्गार ब्रज की गोपिकाओं के, जो उन्होंने अपने गोपी–गीत के प्रथम श्लोक के प्रथ चरण में प्रगट किए थे।

श्री ठाकुरजी का ब्रज में प्रगट होना अति अनुपम तथा दिव्यतम लीला है, जिसको ये गोपि ही भली भांति जानती थीं। उनका कहना था कि ठाकुरजी के प्राकट्य से ब्रज की शोभा अन सब लोकों से अधिक बढ़ गई है। यही कारण है कि बड़े–बड़े देवतागण, ऋषि–मुनि और प्रेम सन्त–जनों ने श्रीठाकुरजी के अवतार ग्रहण करने से पहिले ही ब्रज की शोभा गोप–गोपियों के रू में, किसी–किसी ने लता–पत्र व वृक्ष के रूप में, ब्रज की छोटी–छोटी पहाड़ियों में या ऊंचे–नी स्थानों में अपना–अपना स्थान ग्रहण कर अवतार ले लिया था।

श्रीठाकुरजी के अवतार लेने पर उनकी विविध परमानंद प्रदान करने वाली लीलाओं के दर्श के लिए और पश्चात् विविध पुण्यप्रद लीला–स्थलों के दर्शन हेतु श्री महादेव बाबा, जगत्सृष्टा श्र ब्रह्माजी, अन्यान्य देवगण, भक्तशिरोमणि नारदजी, श्रीहरि के परिकर, पुराणों के रचियिता व्यास जी तथा ब्रह्मभाव में स्थित परमभागवत् श्री शुकदेव जी आदि अन्य अनेकों सिद्ध औ ऋषि–महर्षिगण आये–दिन श्री गिरिराजजी की केवल परिक्रमा ही नहीं करते हैं बल्कि ब्रज के अन्य पवित्र स्थलों के दर्शनों के लिए सदा ही आते रहते हैं, जिनका दर्शन किसी–किसी महाभाग्यशाली को होता ही रहता है।

भगवति लक्ष्मी मैयाजी बैकुण्ठ–धाम छोड़कर श्री वृन्दावन धाम के पल्लीपार बेल वन में आकर निवास करने लगी हैं और वहीं से ब्रज–वासियों को सेवा करती हैं। उनका वृन्दावन धाम में प्रवेश श्रीठाकुरजी ने रोक दिया था।

ब्रज की अपार महिमा का वर्णन पंचमुखी भगवान सदाशिव भोले बाबा, चतुर्मुख ब्रह्माजी, श्री नारदजी, उद्धवजी, व्यासजी, शुकदेवजी और सहस्रमुखी श्री शेषजी भी पूर्ण रूप से वर्णन करने में अपने को असमर्थ पाते हैं तो, हम जैसे प्राणियों की गणना किसी प्रकार भी सोच–समझ में नहीं आ पाती।

श्री प्रबोधानन्दजी सरस्वती ने श्रीधाम तथा ब्रजमण्डल का कुछ गुण–गान किया है, जो 'वृन्दावन शतकम्' सबके के मनन करने के योग्य है। जो नित्य भागवत्जी का पाठ श्री धाम या ब्रज

किसी स्थल में करते हैं, उनका जन्म–बन्धन से छुटकारा मिल जाना तो एक सहज बात है।

यात्रा का छटवां दिवस

(२७ दिसम्बर १९९५)

यात्री समाज ने अतीव भक्ति से मां ब्रजेश्वरी को प्रणाम् निवेदन किया और परमपूज्य श्री तजी महाराज को दण्डवत् कर संत–निवास से श्री सन्तजी के पवित्र–सान्निध्य में चलकर भूतेश्वर हादेवजी के मंदिर पहुंचे। वहीं पर मथुरा व वृन्दावन के यात्री पहिले ही आ चुके थे। प्रथम नन्दीश्वर ी (नांदिया बाबा) को दण्डवत् करके श्री भोले बाबा जी तथा मां पार्वती जी के दर्शन किए और ण्डवत् प्रणाम् निवेदित किया, पास में पाताल देवी की कई सीढ़ियां नीचे उतरकर श्री पाताल देवी ी के दर्शन किए। पश्चात् सबने बाल–भोग लिया।

श्री भोले बाबा सदा ब्रजमण्डल की रक्षा में लगे रहते हैं। इन्हीं की कृपा से समस्त ब्रजवासी गवत्–भजन में तल्लीन रहे आते हैं। ब्रजमण्डल में (ब्रज ८४ कोस में) जो भी कोई अपराध करके त, प्रेत व पिशाच बनता है, वह ब्रज–मण्डल में ही रोक लिया जाता है, ऐसे प्राणियों की तारना तु भूतेश्वर बाबा रात्रि को ठीक ९ बजे सबकी हाजिरी लेते हैं और जो ठीक समय पर नहीं पहुंचता ; उसकी बांसों से पिटाई होती है।

एक बार परमहंसजी रात्रि में वृन्दावन की परिक्रमा दे रहे थे, एक और साथी मिल गया। ब वृन्दावन की ओर मुड़ने लगे, उस समय रात्रि के ८.३० बजे थे; तो यह साथी मथुरा की रिक्रमा–मार्ग पर चलने लगा। तब परमहंसजी ने कहा –"वृन्दावन की परिक्रमा तो इधर है?" इस र वह हाथ जोड़कर बोला–'क्षमा करें, बाबा! मैं प्रेत हूं, मेरी हाजिरी भूतेश्वर महादेवजी के सामने ीक नौ बजे होती है। ब्रज के सारे भूत–प्रेत ९ बजे बुलाऐ जाते हैं और सबका लेखा–जोखा लिया ाता है, इसी कारण समय पर पहुंचने के लिए भाग रहा हूं, अतः क्षमा करें।" और वह चला गया।

भोले बाबा की ऐसी और भी अन्य घटनाओं की गाथाऐं हैं जो पुजारीजी सुनाया करते हैं। रन्तु इस समय पुजारीजी शहर चले गए थे। सामने नृसिंह भगवान् के दर्शन कर पूर्वान्ह ६.२५ र आगे के लिए प्रस्थान किया।

शीघ्र ही ६.४५ पर मधुवन पहुंच गए। यहां पर श्री हनुमानजी की बड़ी मूर्ति है तथा पास में ी माता अंजनिजी विराजमान हैं, के मंगलमय दर्शन करते हुए ध्रुव–टीला पर सीढ़ियां चढ़ते हुए हुंचे। यहां श्री ध्रुवजी के दर्शन तथा श्री नारद भगवान् के दर्शनों का आनंद लिया। वन के अन्दर धुवन–बिहारीजी के दर्शन कर नेत्रों को सफल बनाया और बाणासुर–गुफा के अन्दर प्रवेश करके ी हनुमानजी के दर्शन कर भक्ति–लाभ लिया।

यहां पर ग्वालियर के भागवताचार्य ने कविता के रूप में अब तक की यात्रा का वर्णन सुनाया, हां से १०.३० बजे प्रस्थान किया।

सतोहा पर हम लोग १०.४५ पर पहुंच गए। शांतनु–कुण्ड के मध्य बने रास्ते पर ५७ सीढ़ियां ढ़कर शान्तनु–विहारीजी के दर्शन किए। यहां पर राजा शान्तनु ने मनौती मानी, उसी मनोरथ फल से गंगापुत्र देवव्रत 'भीष्म' का जन्म हुआ था, जो कि आठवें वसु के अवतार थे। श्री अखंडानन्द रस्वती जी (वृन्दावन वालों) का जन्म भी यहां मनौती मानने के फलस्वरूप हुआ था। उनका घर

का नाम श्री देवकीनन्दन है। यह गोरखपुर के (गीता प्रेस) 'कल्याण' की देखभाल करते रहे
इन्हीं की देख–भाल में मथुराजी के चौबे श्री ब्रजलालजी द्वारा 'श्रीमद्भागवत्' दो खण्डों में लिख
छापी गई। जोकि सबके लिए उपलब्ध है।

'श्री राधाकृपा–कटाक्ष' का पाठ और वह भी राधा–कुण्ड में बैठ कर पाठ करें, तो उसके
प्रकार के कर्म–समूह का नाश हो जाता है, जो कि भव–बन्धन का कारण है।

"भवे–तदैव संचित, त्रिरूप कर्म नाशनम्।
भवे तदः बृजेन्द्र स्न, मंडल प्रवेशनम्।।"

और प्राणी ठाकुरजी के मण्डल में प्रवेश पा जाता है जहां से फिर जीव की इस संसा
पुनरावृत्ति नहीं होती है।

इसी प्रकार "राधा–सहस्रनाम", "गोपाल–सहस्रनाम" और कवच महान् शक्ति–सम्पन्न है,
पाठ का श्री युगल–सरकार को सुनाकर सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे प्राणियों
रक्षा के लिए महादेव बाबा ने पार्वतीजी से कहा था कि "देवी, तुम नहीं जानतीं कि मैं त्रिशूल
धारण करता हूं, इसे मैं केवल वैष्णवों की रक्षा के लिए ही धारण करता हूं क्योंकि वह
अधिक प्रिय हैं।" 'गोपाल सहस्रनाम' के पाठ से पहले शाप–मोचन 'वामदेव–स्तोत्र' अवश्य प

इस स्थान से बस द्वारा चलकर ११.४५ पर पैंठा ग्राम पहुंचे। श्रुति–सम्मत बताया गया
चतुर्भुज–स्वरूप का प्राकट्य निकट के नाराण–सरोवर में हुआ था। इन्द्र कूप से पहले श्री गिरिर
जी के पूजन के लिए सब ब्रजवासी यहीं से फैंट बांधकर चले थे, तभी इसे इस गांव का नाम फै
(पैंठा) पड़ गया। इस गांव में पहिले सात ऐंठा कदम्ब थे। सबसे बड़ा ऐंठा कदम्ब सरोवर के किन
था। संसार में ऐसे कदम्ब–वृक्ष कहीं भी नहीं हैं। ठाकुरजी की इतनी बड़ी देन प्राप्त करने पर
यहां के निवासियों ने कोई ध्यान नहीं दिया, इस कारण उपेक्षा से सभी वृक्ष नष्ट हो गए। हालां
१०–१२ वर्ष पहले यहां का सर्वे करते समय परमपूज्य श्री संतजी को ग्राम–प्रधान तथा अन्य निवासि
ने वचन दिया था कि वह इनकी केवल रक्षा ही नहीं करेंगे वरन् और भी ऐंठा कदम्ब वृक्ष उगायें
जिसके लिए भूमि भी अलग छोड़ दी जायेगी।

यहीं पर पास में 'लक्ष्मी–कूप' है। श्री नारायण ने (पीछे) बताया कि जब यहां श्री लक्ष्मी
पधारीं तो श्रीहरि की आज्ञा हुई कि यहां ब्रज–गोपियों का राज्य है, आप वापस पधारो, तो वह पा
के कुंए में पधार कर अन्तर्ध्यान हो गईं। नारायण–मन्दिर की दीवारों पर 'गोपी–गीत' अंकित है
मोदीनगर के श्री देवकीनन्दन शास्त्री जी ने इस गीत का, तन्मयता के साथ प्रभु–भक्ति में डू
कर; सस्वर सुमधुर पाठ किया, जिसके दिव्य–भाव के रसावस्वादन से सभी यात्रीजन ठाकुरज
की कृपा के सागर में निमग्न हो गए।

यहां से चलकर यात्रा पारसौली पहुंची। यहां स्थित चन्द्र सरोवर पर आचमन कर सूरदासज
के दर्शन किए। मंदिर के अन्दर वल्लभाचार्यजी महाराज गोकुल नाथजी की बैठकों के दर्शन किए
श्री सूरदासजी की समाधि को दण्डवत करके चन्द्रसरोवर पर श्री ठाकुर दास बाबाजी महाराज
से परमपूज्य श्री सन्तजी महाराज की वार्ता बहुत देर हुई, जिसका आनन्द सभी ने लूटा। सभ
ने ठाकुरजी का भोग प्राप्त किया।

यह सब क्षेत्र मधुवन कहा जाता है। यहां पर मधु राक्षस राज्य करता था। वह अत्यन्त क्रू

आततायी था। संत–महात्मा दुखी रहते थे। श्री च्यवन ऋषि, जो मथुरा में कृष्ण–गंगा पर विराजते थे, अयोध्या पहुंच कर श्री राघवेन्द्र सरकार से अपनी दुख भरी व्यथा बताई। तब श्री ठाकुर जी ने शत्रुघ्न को सेना सहित भेजा। श्री शत्रुघ्नजी ने मधु का वध कर दिया और सभी को निर्भय किया। श्री राघवेन्द्र सरकार दो बार मथुरा पधारे थे तथा मुख्य–मुख्य स्थलों का दर्शन किया था।

सभी यात्रियों ने १.५० अपरान्ह पर सन्त–निवास के लिए प्रस्थान किया। वहां पर व्यासजी द्वारा श्रीमद्भागवत् का प्रवचन श्रवण कर भक्तजनों ने अपने कर्ण–विवरों के द्वारा हृदय में प्रभु–लीलामृत को परिपूर्ण किया और कथा के उपरान्त महा प्रसाद पाकर अपने जीवन को कृतार्थ कर अपने स्थान पर विश्राम हेतु प्रस्थान किया।

ब्रजमण्डल की ८४ कोसीय-यात्रा का समापन

सप्तम दिवस

(२८ दिसम्बर १९८५)

इस पावन ब्रज–यात्रा का आयोजन ही श्री युगल–सरकार की साक्षात्–कृपा है, जिस पर हमारी लाड़िली जू का करुणामय आशीष छाय की कृपा–कटाक्ष हुआ। जिसके परमपुण्य फल स्वरूप श्री संतजी महाराज का सान्निध्य–संरक्षण इस यात्रा पर सर्वत्र स्थित रहा है। भव–बन्धन को काटने वाली यह यात्रा अब अपने अन्तिम चरण की ओर मां ब्रजेश्वरी को दण्डवत कर आगे पूर्णता की ओर निर्विघ्नरुप से गतिशील हुई।

श्री सन्त निवास से यात्रा का कार्यक्रूम–श्री गिरिराज जी महाराज की परिक्रमा प्रारम्भ हुई। कुछ यात्रियों ने बड़ी परिक्रमा को प्रारम्भ किया तो कुछ ने लोगों ने छोटी परिक्रमा लगाना शुरू किया। सबसे प्रथम ग्वाल–पोखरा के दर्शन किए। यहाँ पर ठाकुर जी अपने सखओं के साथ कलेऊ किया करते थे। इसी स्थल पर श्री श्री १०८ श्री गौरांग दास जी महाराज, सिद्धबाबा श्री जगदीश बाबा जी की आज्ञा से यहाँ पर श्री श्याम–कुटी पर सिद्धबाबा श्री राम कृष्णदास जी महाराज से सम्प्रदाय के ग्रन्थों के अध्ययन के लिए, तथा श्रीमद्भागवत और अन्य ग्रंथों के रसास्वादन के लिए, कई वर्षो यहाँ पर निवास किया था। उनके साथ कुछ समय बाद श्री बाबा प्रियाशरण दास जी महाराज भी रहने लगे थे। वे भी श्याम कुटी पर जाया करते थे।

एक बार बाबाजी महाराज को स्वप्न में आदेश हुआ कि 'हमें' पास में पृथ्वी से निकाल लो और हमारी सेवा करो।' दूसरे दिन जहाँ कुछ खुदाई हो रही थी वहाँ पर बाबा पहँचे और क्या देखते हैं। कि श्री गिरिराज जी दबे पड़े हैं। उनको निकाल कर सादरस्नान कराया गया और भोग, राग,लगाया। अब गिरिराज जी को खेल खेलने की सूझी, तो कभी बाबा से इत्र–फुलेल माँगते तो कभी भाँति–भाँति की मिठाईयां। इसी प्रकार धारण करने के लिए विविध प्रकार के वस्त्रों की माँग तो कभी श्रृंगार हेतु कंकण–नूपुर आदि के लिए मचलने लगते। श्री ठाकुर जी के लिए बाबा लोगों से माँगते, लेकिन उनकी नित नई माँगों के लिए बाबा जी किससे और कहाँ तक माँगते जबकि, वे स्वयं मधुकरी–भिक्षा मांग कर अपना पेट भरते थे। यह सब लीलाएं देखकर बाबाजी, वृन्दावन में श्री जगदीश बाबाजी महाराज के पास पहँचे और सारी कथा सुना डाली। तब उन्होंने आज्ञा

दी कि मूर्ति को प्रणाम् करके श्री गिरिराज जी पर पधरा दो । उन्होंने ऐसा ही किया।

इनका स्वरूप बड़ा ही विचित्र था जो देखते ही वनता था, बाबाजी महाराज का स्वरूप
प्रकार का था :—

"आजानुलम्बित भुजयुगल,
आकर्णविस्तृत नेत्रकमल।
बने–बने फिरें उन्मत्त सम,
नेत्रे बहे सदा प्रेमाषुधार।
बृजरण शोभे सर्वागे भाल,
कण्ढे मनोहर तुलसी माल।
महत्कृपामूर्ति अद्भुत–स्फुर्ति,
सुतीव्र वैराग्य भजनव्रती।
करुआ, कौपीन, मात्र सम्बल,
जयति गौरांग प्राण अधार।
कभु कूंजे पड़े हये मूर्छित,
दिगम्बर कभु वाध्यरहित।"

जब इनकी कथा होती थी श्रीगिरिराज जी की तलहटी के तथा वृन्दावन के महात्मा ब
प्रेम से ठाकुरजी की कथा सुनते थे। एक बार तो ऊपर आकाश से फुलों की वर्षा हुई तो सिद्धबा
श्रीरामकृष्णदास जी महाराज ने सबसे कहा था कि "देखते क्या हो, आकाश से देवता लोग फू
बरसा रहे हैं।"

ये सिद्धबाबा जी महाराज पहिले बरसाने में विराजते रहे । श्रीजी के आदेश से पूंछरी पर राघ
पंडित जी की गुफा के पास भजन करने लगे, उन्हीं के आदेश से यह श्यामकुटी पर आ विराजे
जहाँ पर सभी सम्प्रदाय के महात्मा–गण उनके पास विचार–विमर्श के लिए आते रहते थे। को
अपना गुरु–मंत्र भूल जाता तो उनसे पूंछने लगता तो सिद्धबाबाजी महाराज कहने लगते कि मैं आप
गुरुमंत्र को कैसे बताऊँ। अच्छी प्रारम्भिक–शब्द तो कहो। तब प्रारंभिक शब्द करने पर बाबाजी कु
और शब्द कहकर कह देते कि 'ये तो नहीं है? तब पूछने वाला तुरन्त ही कह देता कि "हां बा
! याद आ गई।" ऐसा था उनका सहज स्वभाव, जो मान–मर्यादा का सदा विचार रखते थे
गिरिराजजी की तलहटी के गांव वाले समस्त जन उनका बड़ा ही आदर करते थे।

दोनों स्थलों को दण्डवत कर पहले छोटी यात्रा आरंभ की, जो हमारी लाड़िली जू के राज
में पड़ती है। आगे चलकर उद्धव–कुण्ड पर आचमन किया और उद्धव भगवान के दर्शन किए
हनुमानजी व महादेव बाबा को दण्डवत–प्रणाम करते हुए प्याऊ पर श्री गिरिराज जी को साष्टां
दण्डवत की और आगे बढ़ते हुए महाप्रभुजी बंगाली महात्मा के मंदिर को दण्डवत् करे हुए श्री रघुना
दास गोस्वामी जी महाराज की समाधि को दण्डवत् किया, ये ब्रज में षट् गोस्वामी–स्वरूपों में
थे; जो केवल एक चुल्लू मट्ठा दिन–रात में लेते थे। "षठ गोस्वामी" वन्दे रूप सनातनौ रघुयुग
श्री जीव गोपालकौ।"

एक बार इन्होंने श्री राधारानी जी को खीर खिलाने का विचार किया क्योंकि, खीर राधारा

सबसे अधिक प्रिय है। तब उन्होंने मानसी–सेवा (मानसिक संकल्प) में खीर पका कर उसका नसिक रूप से ही श्री जी का भोग लगाया और उसी मानसिक अवस्था में महाप्रसाद के रूप ग्रहण कर लिया।

दूसरे दिन उनके पेट में दर्द होने लगा, यह सुनकर श्री वल्लभाचार्यजी के बड़े पुत्र तथा अन्य जवासीजन आ गए और वैद्यजी को बुलाया। वैद्यजी ने भलीभांति नाड़ी–परीक्षा की और कहा कोई भारी वस्तु इन्होंने खा ली है, हो सकता है कि खीर खाई हो।' यह सुनकर सभी लोग हंस ड़े और बौले–'वैद्यजी, ये तो २४ घण्टे में सिर्फ एक चुल्लू मट्ठा लेते हैं।' वैद्यजी ने कहा कि "हम छ नहीं जानते हैं परन्तु इनकी नाड़ी ऐसा ही बोल रही है।" तब गोस्वामी ने पूछा 'क्या वैद्यजी च कर हरे हैं?" तो सिद्धबाबा हंस पड़े और कहा कि –"मैंने मानसिक रूप से श्री जी के लिए र रॉधी थी, वही प्रसाद रूप में लेने पर मेरे पेट में दर्द होने लगा।" तब यह सुनकर कि मानसी–सेवा सच्ची होती है यदि सच्चे भाव से की जाय।

एक बार इन्होंने मन में यह विचार किया कि 'श्री राधाकुण्ड' जो कच्चे रूप में था, अच्छा कि यह पक्का हो जाये। जब महाराजजी यहां पधारे थे तब राधाकुण्ड व कृष्ण–कुण्ड धान के त बने हुए थे। उनके आचमन करने पर लोगों ने पूछा कि, आप क्या कर रहे हैं? तब महाराजजी बताया कि यही राधाकुण्ड, कृष्ण–कुण्ड है।

जब इनके पक्का करने का विचार आया तो एक सेठ बद्रीनाथजी के दर्शन को गया और पुल राशि भेंट की तो उसे आज्ञा दी कि "तुम राधा–कुण्ड जाकर बाबा की सेवा में इसे भेंट रो।" वह सेठ यह आज्ञा मानकर इनके पास आया और श्री बद्रीनाथजी का आदेश सुनाया, तो बड़े विचलित हुए और बोले–"मैं तो रुपया छूता नहीं, तू ही देखभाल कर; राधा–कुण्ड, कृष्ण–कुण्ड निर्माण करा दे।"

इस पर उस सेठ ने राधाकुण्ड के चारों ओर सीढ़ियां बनवा दीं पर जब कृष्ण–कुण्ड को कोर करने के लिए वहां की भूमि तथा वृक्ष आदि काटने की सोची, तो पांचों पाण्डव जो वहां न के रूप में विराज रहे थे, ने सिद्धबाबा से कहा कि बाबा तुम ये क्या कर रहे हो। उस पर बाबा आदेश दिया कि जैसा स्वरूप इस समय है, उसी पर जहां ठीक समझो सीढ़ियां बना दो। इस रण कृष्ण–कुण्ड चौकोर न हो सका।

बाबाजी महाराज की समाधि को दण्डवत करके आगे श्री गिरिराजजी की जिह्वा के दर्शन आगे बढ़े तो श्री युगल–सरकार के श्री दर्शन करते हुए जिह्वा की झाँकी ली तदुपरान्त कविराज स्वामी आदि तीनों महात्माओं की समाधि स्थलों को दण्डवत की और जहां कवि जी ने 'श्री तन्य चरितामृत' लिखी थी–उस स्थल की भी दण्डवत की फिर कृष्ण–कुण्ड' में आचमन कर, हां पर वृक्ष के रूप में पांचों पाण्डव विराजते थे, दण्डवत् की। जबकि इस समय वृक्ष नष्ट हो के थे।

यात्रीगणों ने आनंद लेते हुए आगे स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर में ठाकुर–स्वरूपों की दण्डवत् । जब जगन्नाथ जी में नये स्वरूप में पधारते हैं तब उनका चोला या तो समुद्र में विसर्जित र बहा दिया जाता है या किसी सिद्ध–पुरुष को प्रदान कर दिया जाता है। वही चोला (श्री विग्रह) हाँ पर विराज रहा है।

इस मंदिर में बृज–चौरासी कोस की परिक्रमा का विस्तार के रूप में एक ग्रन्थ में वर्णित जिसको विविध–स्थलों पर जा–जाकर श्री बाबा स्वरूपदास ब्रह्मचारी जी ने शुद्ध और सच्चे में वर्णन किया है। कुछ यात्रियों ने इस ग्रंथ को, जो ३५/– रू० में उपलब्ध है, प्राप्त किया। प में स्थित श्री राधा वल्लभ–मंदिर (जो यात्रा से हटकर थोड़ी दूर है) को सड़क से ही नमस्कार फिर तराश के राजा द्वारा बनवाया गया था। यहां बड़े ही सुचारु रूप से, लगन से श्री ठाकुर की सेवा होती है। सिद्धबाबा श्री राधाचरणजी महाराज, जिनको सब लोग बड़े बाबा कहा करते समय–समय पर नव–द्वीप–धाम से यहां पधारते थे और इस मंदिर में राजा साहब से गोष्ठी हु करती थी और अन्य महात्माओं के साथ महाप्रसाद पाया जाता था। सन्त बाबा ने इनकी बीस कापि चरित्र की उद्दण्ड बच्चों को बांटी, जिसको पढ़कर उनका जीवन सदा के लि सुधर गया।

इन महापुरुषों ने राजा साहब को सुझाव दिया कि राधाकुण्ड–स्थल महात्माओं के भजन कर की स्थली है। यहां पर ठाठ–बाट के साथ ठाकुरजी की सेवा करना उचित नहीं है क्योंकि स महात्मा घर–घर टुकड़ा मांग कर भजन करते हुए जीवन–धारण करते हैं। इस पर राजा साहब वृन्दावन में एक विशाल मंदिर बनवाया जो जमाई ठाकुर के नाम से प्रसिद्ध है। वहां पर ठाकुर ज प्रसाद अरोगने के बाद हुक्का पीते हैं, जो अब भी उनके समक्ष रखा जाता है।

यहां से यात्रा आगे चलकर जीव गोस्वामीजी महाराज की समाधि को भाव से पूरित दण्डव करते हुए ललिता–कुण्ड में आचमन कर, अष्ट–सखियों के सरोवर के श्री–दर्शन करते हुए, जो स मिलकर एक हो गये हैं, स्वामी हरिदासजी महाराज के ठाकुर–स्वरूपों की दण्डवत की। यहीं प गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज, स्वामी हरिदासजी महाराज, ओरछा के ब्यासजी महाराज तथा र ाकुण्ड की तलहटी के एवं गिरिराजजी की तलहटी के गोस्वामी स्वरूप तथा अन्यान्य महात्मा जन ने गोष्ठी की थी और अपनी–अपनी सेवाकी रीति का विशद् वर्णन किया था। इस यात्रा के यात्रीग मार्ग में स्थित अन्य मंदिरों को दण्डवत अर्पित करते हुए थोड़ा–सा हट कर प्राचीन महादेव की दण्डव की। पास में कृष्ण–कुण्ड पर श्री चैतन्य महाप्रभुजी जब राधा–कुण्ड पर पधारे थे, तब यहां कदम के नीचे विराजा करते थे। नीचे लिखे स्तव से प्रार्थना की :–

"उज्ज्वल वरण मौर वर देहम, बिलसति निर्वधि भाव विदेहम्।
त्रिभुवन पावन कृपया लेशम्, तम प्रणयामि च श्री शचि तनयम्।।"

पास में ही श्री वल्लभाचार्य जी की बैठक है वहां दण्डवत् प्रणाम करते हुए, श्री मदनमोहन–मंदि में युगल–स्वरूपों को, श्री सनातन गोस्वामीजी तथा ब्रह्मचारीजी को दण्डवत की।

श्री नारायण भट्टजी महाराज को दक्षिण से श्री लाड़लेजी के स्वरूप ने कहा था कि –'तुम राधाकुण्ड चलकर साक्षात् दर्शन दूंगा।' तो जब वे इस मंदिर में आए तब ठाकुरजी की शयन ह चुकी थी, भट्टजी दुखी हुए तो एक साथ क्या देखते हैं कि मंदिर के कपाट खुलकर युगल–सरका सामने खड़े हैं। यह दशा देखकर श्री सनातन गोस्वामीजी तथा ब्रह्मचारीजी दौड़े आए तो ठाकुरज ने आदेश दिया कि 'इस नारायण भट्ट को ब्रह्मचारीजी द्वारा मंत्र दिखलाओ। यह ब्रज–स्थलों की

ाज करेगा।'' यह कहकर ठाकुरजी शयनागार में चले गए। यहीं रहकर श्री नारायण भट्ट ने ज–भक्ति विलास', 'श्री ब्रजोत्सव–चंद्रिका इत्यादि कई ग्रन्थ लिखे और ब्रज के तीर्थों को प्रकट या। श्री भट्टजी ने कई प्रमुख देवालयों की स्थापना की तथा कई सरोवरों एवं कुण्डों की स्थापना ी। इस पावन कार्य में अकबर के कोषाध्यक्ष राजा टोडरमल ने प्रचुर मात्रा में धन लगाया। इन बका विशद् वर्णन है, जिसका अवलोकन ग्रन्थों के अध्ययन करने पर किया जा सकता है।

इसके बाद सभी ने संगम पर राधा–कुण्ड–कृष्ण कुण्ड में आचमन किया और श्री चैतन्य हाप्रभुजी, श्री नित्यानन्द महाप्रभुजी के दर्शन करते हुए श्री ब्रह्मचारीजी की समाधि के दर्शन किए। रमपुनीत परिक्रमा–मार्ग में बम्वा के किनारे स्थित जगदम्बाजी के दर्शन करते हुए ग्वालियर मंदिर प्रवेश किया। इस मंदिर में श्री युगल–सरकार तथा निमाई–निताई विराज रहे हैं। ग्वालियर नरेश भाई महान् भक्त थे, उनकी इच्छा हुई कि ठाकुरजी का मंदिर निर्माण हो। इस हेतु उन्होंने विपुल नराशि सिद्धबाबा श्री रामकृष्ण जी बाबाजी महाराज के सामने रखी और प्रार्थना की कि, आप मंदिर नवाने की कृपा करें: तब उन्होंने कहा कि "मंदिर बनवाकर श्री बाबा हरिचरण दास जीको भेंट र देना,–वही इसे सँभालेंगे।" राजा साहब ने ऐसा ही किया। उनके लिखे हुए कुछ भक्ति–ग्रंथ ंदिर जी में मौजूद हैं। आगे चलकर सड़क के किनारे श्री हनुमान जी का मंदिर है वहाँ दण्डवत् र कुसुम–सरोवर पर आचमन कर, दाई तरफ भरतपुर नरेश की समाधि को दण्डवत की। राजा साहब जानते थे कि यह स्थल 'सखी–स्थल' है। इसकारण इन्होंने दिल्ली की लूट का धन यहाँ प्रचुर मात्रा में व्यय करके, ठीक सरोवर के सामने जो ऊँचा टीला था और वहाँ श्री युगल–सरकार नित नई–नई लीलाऐं किया करते थे: उसे पक्का करवाया–यह देखते ही बनता है। उन्होंने ही कुसुम–सरोवर को विशाल एवं भव्य स्वरूप देकर सीढ़ियॉ बनवाई जोकि शिल्प एवं स्थापत्य–कला का सुन्दररूप हैं।

यह सखी–स्थल महान से महान पवित्र–स्थल है और इस दिव्य स्थल पर व इसके चारों ओर आस–पास श्री युगल–सरकार आये दिन विविध मनोहारी दिव्य लीलाऐं किया करते थे। सड़क के दोनों ओर कुसुम–वन है जिसमें भाँति–भाँति के वृक्ष शोभा पाया करते थे जिनमें अधिकतर कदम्ब–वृक्ष थे। श्रीठाकुर जी यहाँ से भाँति–भाँति के बहुत से कुसुम एकत्रित करते हैं और उनसे अपनी प्रियाजू का श्रृंगार करते हैं। प्राचीन समय की बात है, जब ललिता, विशाखा आदि सखियों ने श्रीलाड़िली जी को स्वर्ण–जटित–मणिमय दिव्य–आभूषणों से सज्जित कर उनके नेत्र–कमलों में अंजन औजा। तो श्रीठाकुर जी ने अपनी प्रियाजी का बड़े प्रेम से नाना प्रकार के सुन्दर–सुगंधित पुष्पों से,अपने करकमलों द्वारा अत्यन्त रुचिर श्रृंगार किया।इसके पश्चात् उनके सामने दर्पण प्रस्तुत कर रखा तो उस दर्पण में अपना श्रृंगारिक स्वरूप की छवि देखकर श्री किशोरी जी दिव्य व शाश्वत–प्रेम भाव से अत्यन्त विह्वल हो गई और उनका अश्रु–प्रवाह चलने लगा। उसे देखकर श्रीठाकुर जी अपने को न रोक सके और उनके तथा अन्य सखियों के नेत्रों से विपुल मात्रा में अश्रु–प्रवाह होने लगा। इस प्रेमाश्रु–प्रवाह से कुसुम–सरोवर का छोटे आकार में निर्माण हो गया।

यह है यहां सम्पन्न हुई मुख्य लीला, जिसका स्मरण (सुमरन) करके कौन ऐसा प्राणी है जो भाव–विह्वल होकर अपने अश्रु–प्रवाह को रोक सके। इस स्थल पर कुसुम–सरोवर के बायीं ओर

श्री उद्धव भगवान् विराजते हैं और उसके पास ही उद्धवकुण्ड है। घनी झाड़ियों के बची श्री न स्वामी जी की समाधि है, जिसकी रचना उन्होंने 'वृज–विहार' के रूप में की थी जिसका मान रासधारी स्वामी करता है। इस सरोवर में उत्तर–पश्चिम के कौने की ओर स्नान करने से गोपी–स्व हो जाता है।

एक बार श्री नारदजी के मन में इच्छा हुई कि यहां पर श्री ठाकुरजी के रास–विलास के द किए जायें। तब वृन्दादेवी ने उनसे कहा कि "यह तो सखी–स्थल है और यहां पर केवल गोपि का ही प्रवेश है, तुम प्रवेश नहीं कर सकते हो।" नारदजी की प्रार्थना पर वृन्दा देवी ने इस सरो के उत्तर–पश्चिम की ओर स्नान करने को कहा। इस पर स्नान करने पर नारदजी को गोपी स्व प्राप्त हो गया तब श्री वृन्दा देवीजी ने उनको श्री ठाकुरजी की रास–लीला के दर्शन छककर करा इस लीला में नारदजी ने देखा कि युगल–सरकारजी अष्ट–सखियों व षोडश–सखियों तथा असं गोपियों के समूह से घिरे हुए परम शोभायमान हो रहे हैं। इस दिव्यतम लीला के स्वरूप की हल्की– झांकी इस रूप में देखी (निम्न है) –

"प्रधानाष्टदलेष्वेवमष्टौ श्री ललितादयः।
राधाकृष्ण सुखमोदाः सेनेपायनपाणयः।।
सवृन्दा यत्नतो ध्येयास्तत्रादौ ललितोत्तरे।
ऐशान्ये तु विशाखैन्दे चित्रेन्दुलेखिकाग्न ये।।"

मज्जरियों का स्वरूप इस तरह देखा –

"अथाटोपदलेष्वेवमनग्ड. मज्जरी मुखाः।
सय्था यलतो ध्येयास्तत्रेत्तरदलेद्भयो।।
अनंगगंजरी तस्या वामे मधुमती मता।
पूव्वयो विमला वामे शयमलता दक्षिणे द्वयोः।।
पालिका मंगले वारुणयोर्धन्या च तारका।
अथकिंजलक पार्श्वस्थाः सर्व्वदा सेवनोत्सुकाः।।
प्रियनर्म्मसखीर्ध्यायेत कृष्ण दक्षिणतः क्रमात्।
लवंगमंजरी रूपमंजरी रसमंजरीभ!।।
गुणवत्युत्तरे नाम मंजर्य्यौ रसमंरीम्।
लीलामंजरी काञ्चैव विलासमंजरीं तथा।।
विलासमंजरीञ्चान्यां मंजर्य्यौ केलिकन्दयो।
मदनाशोकमंजर्य्यौ मंजुलालीं सुधामुखीम्।।
पद्मंजरिकामे ताः षोडशप्रवरा मता।
एतासां संगिनी भूत्वा श्री गुर्व्वज्ञानानुसारतः।।
राधामाध्वयोः सेवां कुर्य्यान्नित्यं प्रयत्नतः।
ताम्बुले ललिता देवी कर्पूरादौ विशाखिका।।
चामरे चम्पकलता चित्रा वसनसेवने।
रागे तु तुंगदेवी सा सुदेवी जलसेवने।।

नानावाद्ये तुंगविद्या चेन्दुलेखा च नर्तने।
दर्पणे शशिरेखा च विमला पादसेवने।।
पाली कुसुमशय्यायां वेशे चानंगमंजरी।
श्यामला चन्दन्नादौ च गाने मधुमती तथा।।
धन्या रत्नविभूषायां मंगला माल्यसेवने।
इत्याद्याः कोटिशो गोप्यो नानासेवां प्रकुर्व्वते।।
जवा नित्र दुकूलाख्यां तऽद्यति तनुद्वकिम्।
कृष्णा मोद कृतपेक्षां भजेऽहं गुणमंजरीम्।।
बन्धूकवर्ण वसनं वसानां तडित्प्रभादिग्धतनुच्छविंच।
श्री राधिकाया निकटे बसन्तीं, भजे सुरूपां रतिमंजरीम्।।
विशुद्ध हेमांच कलेवरायां तारावती चारु मनोज्ञ चलोम्।
श्री राधिकाया निकटे वसन्तीं भद्राख्यकां मंजरीकां भजेऽहम्।।
विशुद्ध हेमावु कलेवरामां सुवस्त्र रत्नादि विभूषितांगीम्।
श्री राधिकाया निकटे वसन्तीं लीलाख्यां मंजरी कां भजेऽहम्।।"

कभी विस्मरण न होने वाली और परमरम्य भागवती लीला के दर्शन करके श्री नारदजी परम–विह्वल हो गऐ और श्रीयुगल–सरकार को साष्टांग दण्डवत प्रणाम् किया। श्री अलबेली सरकार की श्री ललिताजी को आज्ञा हुई कि नारद को उठाकरके कहो कि वह इसी स्थल पर भजन करे और श्रीभागवत्‌जी का पाठ करता रहे।

नारदजी ने हाथ जोड़कर मनौती मानते हुए इस प्रकार से प्रार्थना की –

"नवीनां हेमगौरांगीं पूर्णानन्दवतीं सतीम्।
वृषभानुसुतां देवीं वन्दे राधां जगत्प्रसूम्।।
राधां रासेश्वरीं रम्यां स्वर्णकुण्डलभूषितम्।
वृषभानुसुतां देवीं तां नमामि हरिप्रियाम्।।
महाभावस्वरूपा त्वं कृष्ण प्रियावरीयसी।
प्रेमभक्तिप्रदे देवी राधिके त्वां नमाम्यहम्।।
रासोत्सवविलासिन्यै नमस्ते परमेश्वरी।
कृष्ण प्राणाधिके राधे परमानन्दविग्रहे।।

श्री गोपीरूपधारी नारदजी से ललिताजी ने कहा कि –"अब आप सरोवर के दक्षिण–पूर्व कौने की ओर–परिक्रमा मार्ग के किनारे सरोवर में स्नान करो।" स्नान करने के बाद, नारदजी पुनः अपने पूर्ववत् स्वाभाविक स्वरूप में स्थित हो गए और पास में ही वह भजन करने लगे। वहीं पर मन्दिर का निर्माण हुआ और महन्तजी तथा भरतपुर नरेश वहीं पर विराजने लगे। इस कुण्ड में 'ब्रज–भक्ति–विलास' में लिखित औषधि का प्रयोग करें तो उसका मन निर्मल हो जाता है।

एक बार कुसुम–सरोवर के सम्मुख स्थित श्री हनुमानजी के मंदिर के सामने राधाकुण्ड के डाक्टर व अन्य लोग पूजनीय श्री सन्तजी के साथ बैठे थे। रात्रि का समय था तो वहां स्थित सभी ने देखा कि परिक्रमा करते हुए एक बालक जा रहा है, उसके पीछे–पीछे एक सर्प सिर उठाये चल

रहा है। इस अद्भुत दृश्य को देखकर सब लोग बालक के पास जाने को दौड़ पड़े, तब तो वह दि बालक बहुत–ही तेजी से आगे–आगे बढ़ता ही गया और दान–घाटी से आगे पहुंच गया। यह र लोग उसके पीछे चलते हुए देखते गए कि वह यकायक अदृश्य हो गया।

श्री संतजी ने लक्ष्मी–मंदिर में जाकर पंडित बाबा जी से कहा, तो उन्होंने कहा कि –'तुम ब भाग्यवान हो, श्री शुकदेवजी महाराजजी परिक्रमा कर रहे हैं।'

श्यामकुटी के पास एक बंगाली महात्मा रहते थे, वह श्री सन्तजी से 'माइली' कहकर बोल थे। उनको कोढ़ हो गया था। एक दिन उन्होंने श्री सन्तजी को दिखाया। सन्तजी ने २–३ दि बाद भण्डारा किया और इन्हें ग्वालियर–मंदिर पर बुलाया। वहां उपस्थित अनेकों ब्रजवासियों कहा कि 'इस कोढ़ी को हटाओ' तो श्री सन्तजी ने कहा कि 'यह नहीं हटेंगे।' इस परसबने प्रसा पा ही लिया। दूसरी ही दिन बंगाली बाबा दौड़े–दौड़े आए और बोले–"देखो, हमारो कोढ़ चल गयौ; बहुत रोकने पर भी श्री ठाकुरजी हमसे लिपट ही गये।"

एक बार श्री हनुमानजी के मंदिर पर श्री कठिया बाबाजी श्री अखण्ड–रामायण जी का पा कर रहे थे, रात्रि का समय हो रहा था। एक महात्माजी आकर वहां पर बिल्कुल नंग–धडंग होक खड़े हो गये और श्री हनुमानजी की तरफ पीठ करके बैठ गए। इस पर कठिया बाबा ने निर्वा बाबा को इशारा किया कि इन्हें श्री सन्तजी के पास ले जाओ। जो सामने कुटी पर विराज र थे। श्री सन्तजी ने उन्हें लॅगोटी पहना दी व सिर पर अॅगौछा बॉध दिया ओर प्रसाद ग्रहण करव दिया ताथा भेज दिया। यह महापुरुषजी फिर श्री काठिया के पास वापिस आऐ और अपना पहन हुआ अंगौछा व लंगोटी उतार कर फेंक दिया, इस पर काठिया बाबा ने निर्वाण बाबा को उन्हें हटा का इशारा कर दिया तो निर्वाण बाबा उन्हें बहुत दूर छोड़ आए।

रात्रि में पाठ कर निर्वाण बाबा को बिठाल कर, सोते समय बहुत दुख माना कि उन्होंने एक महापुरुष का अनादर कर दिया और वे सो गऐ। तब स्वप्न में उन्हीं महापुरुष ने दर्शन देकर कह कि 'तुम बुरा मत मानो, मुझे कुछ बुरा नहीं लगा।' दोनों महापुरुष अलक्ष्य–रूप से वहीं विराज र हैं। नारद कुण्ड पर काठिया बाबा से भरतपुर नरेश की बात हुई व श्री सन्तजी को कुसुम सरोव पर सीढ़ियां उतरते हुए प्रातः ३ बजे उनके दर्शन हुए।

सभी भाव व भक्ति से परिपूर्ण यात्री जन छोटी–परिक्रमा पूर्ण संत–निवास पहुंचे पतित–पावनी 'श्री मद्भागवत' की कथा को सबने दत्त–चित्त होकर सुना और आनंद में लीन ह गए। तदुपरान्त सबने महाप्रसाद का सेवन किया।

सबने थोड़ा देर विश्राम करके यात्रियों ने बड़ी परिक्रमा प्रारम्भ कर दी तिराहे पर बाब प्रियाशरणदास जी की समाधि को दण्डवत् करते हुए सड़क के दोनों तरफ महात्माओं को, श्री निर्वाण बाबा के आश्रम को तथा श्री गिरिराजजी को दण्डवत् करते हुए मुखारविन्द पर पहुंचे। श्री मानसी गंगा के जल का आचमन करके श्रीगिरिराजजी को दण्डवत् की। अभी कुछ महीना पहिले ही मानसी–गंगा का उद्धार हुआ था, उस समय गिरिराजजी के बड़े रूप में लोगों को दर्शन हुए और पास में घी–दूध की धारा निकलते हुए के दर्शन किए एवं दूध का पान किया। महावन के रमण–रेती के बाबा की देखभाल में मानसी–गंगा का उद्धार हुआ था। मुखारविन्द के मंदिर के शिखर पर दिल्ली–वासियों ने सोने का एक विशाल–कलश चढ़ाया था। वह बहुत ही धूम–धाम

से कई दिन होता रहा। उसके पास ही चकलेश्वर महादेवजी विराजते हैं, वहां निमाई—निताई तथा सनातन गोस्वामीजी की भजन—स्थली को दण्डवत् की और महादेव बाबा को जल चढ़ाकर खूब सेवा की।

मुखारविन्द के सामने भरतपुर नरेश की छतरियों के बीच एक विशाल—सरोवर है, जिसका जल सदा निर्मल बना रहता है, यह चहार दिवारी से घिरा हुआ है। ठीक उसके सामने दूसरी तरफ बस स्टेशन की सड़क पर किलोल कुण्ड और श्री किलोरबिहारी विराजते हैं, उनको यहीं से सबने दण्डवत् अर्पित की। आगे चलकर स्वामी हरिदेवजी के दर्शन किये। वहां से दानघाटी पर पहुंचकर श्री गिरिराजजी के दर्शन किए और दण्डवत् की। पास में लक्ष्मी—नारायण के दर्शन किए, जो नित्य—प्रति बाबा प्रियाशरणदासजी के पास सत्संग हेतु जाते रहते थे (बस स्टेशन के सामने वाली धर्मशाला के ऊपर के हिस्से में)।

आन्यौर गांव पहुंचकर श्री गिरिराजजी के ऊपर शिखर पर स्थित श्री ढूंका—महादेव जी को दण्डवत् प्रणाम् किया। यह स्थल अति सिद्ध स्थान है। यहां पर स्थित भोले बाबा अत्यन्त ही करुणामय हैं। एक बार मथुरा बस—स्टेशन पर श्री शर्मा जी सुपरिन्टेंडेंट थे, एक बार वह रात्रि में परिक्रमा कर रहे थे। तब एक महात्मा ने गोविन्द कुण्ड के पास ही उनसे कहा था कि ढूंका महादेवजी के दर्शन कर आ। केवल अगरबत्ती से ही आरती कर देना। जब शर्मा जी ऊपर पहुंचे तो थोड़ी देर बाद ही वहां पर ब्रज की बहुत—सी गोपियां आईं और शर्मा जी से दियासलाई मांगी। आरती करके जब वह जाने लगीं तो शर्मा जी ने उनका बहुत सुन्दर स्वरूप देखकर पूछा कि आप कहां रहती हैं? तो उन्होंने कहा कि हम पास के ही गांव में रहते हैं, ये महादेव बाबा बहुत ही कृपालु हैं और थोड़ी सी सेवा पर बरस पड़ते हैं।

गोविन्द कुण्ड पर आचमन करके दोनों तरफ स्थित श्री सिद्ध बाबा की समाधि को दण्डवत की और सामने ही नागा—बाबाजी की समाधि को दण्डवत् की, इनके बनाये हुए गक्कड़ श्री श्रीनाथजी भी बड़ी ही रुचि के साथ ऑरोगे थे।

गिरिराज जी के दूसरी तरफ जतीपुरा (यतिपुरा) गांव है, इसका नाम इस कारण पड़ा कि एक यति महात्मा ने श्रीनाथजी को प्रगट करके उनकी सेवा की थी और उनके लिए चन्दन लेने बंगाल की ओर चले गये थे। लौटते वक्त श्री ठाकुरजी ने बीच में ही उनका चन्दन स्वीकार कर लिया था। यतिजी ने श्री ठाकुरजी का दर्शनकर वहीं पर अपना नश्वर शरीर त्याग दिया था। तब महाप्रभुजी के आग्रह पर श्री श्रीनाथजी की सेवा श्री गोस्वामी वल्लभाचार्यजी ने स्वीकार कर ली। कुछ समय पश्चात् उनके अधिकारी जी ने बंगाली महात्माओं को हटाकर (जो पहले से ही सेवा कर रहे थे) ब्रजवासी को सेवा में लगाये।

आगे चलकर यात्रियों ने पूछड़ी के लौटा पर अप्सरा—कुण्ड और नवल कुण्ड में आचमन किया और वहां पर स्थित मंदिरों के ठाकुर—स्वरूपों के दर्शन किए और महात्माओं को दण्डवत् की। श्री राघव पंडित की गुफा पर दण्डवत् की जहां पर श्री श्रीजी की आज्ञा पंडित बाबा श्री रामकृष्णादास जी महाराजजी भजन करते रहे।

सुरभि—कुण्ड पहुंचकर आचमन किया और आगे हरिजी—कुण्ड पहुंचे व आचमन किया तथा श्री गिरिराजजी के मुखारविन्द पर सबने दूध चढ़ाया तथा भोग निवेदित किया।

समस्त यात्रीजन–तलहटी में ही चलते हुए जान–अनजान वृक्षों के स्वरूप में स्थित महात्म की तथा अन्य भक्तजनों की समाधियों की दण्डवत् करते हुए गोवर्धन पहुंचे। वहां श्री गिरिराज को दण्डवत् कर गोवर्धन के सिद्धबाबा के स्थल पर पहुंचे। यह मानसी–गंगा के बिल्कुल कि पर स्थित है।

एक बार स्नान करते समय श्री सिद्धबाबा को यह दिखा कि श्री राधारानी के नूपुर कुण्ड गिर गये हैं, तो वह उन्हों निकालने को कुण्ड में कूद पड़े, और सात दिन तक डूबे रहे। लोगों सात दिन तक बाबा की कुण्ड में बहुत ढूंढा–ढांढी की। जब वह कुण्ड से ऊपर निकले तो उन हाथों में श्रीजी के नूपुर और बहुत से ग्रन्थ सम्हाले हुए थे, यह देखकर लोगों के पूछने पर "आप सात दिन कहां रहे?" तो बाबा ने कहा कि –"अभी–अभी तो कुण्ड में स्नान करने च गया था।

इनके कृपापात्र रनवारी के सिद्धबाबा तथा वृन्दावन के लाला बाबू और अन्य महात्मागण कृपा–पात्र रहे। श्री राम बाबा के मंदिर में दण्डवत् करते हुए चूतड़–टेका पर विश्राम किया।

यहां पर श्री राम बाबा ने कई साल पहले श्रीमद्भागवत का विशाल मायज्ञ किया था। आ श्री सिद्धबाबा की समाधि को दण्डवत् करते हुए श्री उद्धव–कुण्ड पहुंचे, वहां आचमन करके दण्डव करते हुए; श्री गिरिराज जी के मंदिर जो बम्बा के पा है–दण्डवत् की।

यहां पे मुड़कर सन्त–निवास आ गये और प्रसाद पाया। वृन्दावन के सेवक जी तथा अन् कई यात्री देर से आए, जब तक वृन्दावन जाने वाली बस जा चुकी थी। उन सबको गोवर्धन मथुरा होकर वृन्दावन जाना पड़ा।

परमपूजनीय श्री सन्तजी महाराज के कृपापात्र बाबा रामजीदास ने 'ब्रज–चौरासी कोस क दण्डवती परिक्रमा दी।' ब्रजवासियों ने बहुत ही उल्लसित होकर उनकी अभ्यर्थना और सादर पूर्वक सेवा की, क्योंकि उनकी समझ में यही एक महात्मा थे उन्होंने पहली बार चौरासी कोस की दण्डवती परिक्रमा उठाई। उनका सामान एक ठहराव से दूसरे ठहराव तक उठाकर भी पहुंचा देते थे। जिस दिन हम लोगों ने यात्रा उठाई थी उस ही दिन इन महात्मा ने 'ब्रज–चौरासी कोस की दण्डवती परिक्रमा' फिर से प्रारम्भ की। यह तीन–चार मास में पूरी हो जायेगी। पर केवल ७१ दिन मैं ह पूरी कर की, फिर खड़े खड़े ३१ में दिन में ८४ कोस की पैदल चल कर परिक्रमा की।

अतिभक्तिमती पूज्या महिला श्री द्रोपदी देवी ने तो २८ वर्ष तक लगातार दण्डवती की। श्री गिरिराजजी महाराज की कृपा से उनकी दोनों टांगें ठीक हो गई। भक्तवत्सल भगवान श्रीगिरिराजजी उनसे स्वयं वार्ता करते थे। वह गिरिराजजी आजकल गुप्त–कुंज, डेम्पियर नगर मथुरा में विराजते हैं।

एक बार उन्होंने श्रीगिरिराजजी के भोग लगाने के लिए रोटियां बनाईं, तो एक बालक पास में आकर रोटियों को निहारने लगा। द्रोपदी मैय्या ने उससे पूछा कि –"लाला! क्या तू रोटी खायेगा?" उसने कहा "हां।" एक–एक करके वह बालक सातों रोटियां खा गया गया और कहा कि –"मैय्या, अब तूं क्या खायेगी?" मैय्या ने कहा–"मैं स्नान करके फिर गिरिराजजी को भोग बनाऊंगी।" यह सुनकर वह बालक चला गया और थोड़ी देर बाद एक पत्तल भर भोज्य–सामग्री लाया और बोला–"मैय्या, अब तू गिरिराजजी को इसी का भोग लगा दे।" मैय्या ने यह सुनकर कहा कि–"तू

तनी जल्दी इतना भोज्य–पदार्थ कहां से लै आयौ है?" मैय्या ने उससे बहुत–से सवाल किए तो लक घबरा गया। अब तो मैय्या बोल ही पड़ीं कि –"अब तुम हमसे अपना छिपाव मत करो और पना असली स्वरूप दिखाओ।"

ऐसी बहुत–सी गाथायें हैं उन पर भक्ति पूरितजनों की, जोकि श्रद्धा–विश्वास और भाव के ाथ श्री गिरिराज जी की परिक्रमा करते हैं।

श्रीगिरिराजजी की परिक्रमा करते समय भक्तजन प्रेमपूर्ण भाव और आल्हाद के साथ अक्सर ह गीत गाते सुनाई देते हैं –

"तू एक बार आजा, गिरिराज की शरण में,
तू रंक हो या राजा, गिरिराज की शरण में,
परिकम्मा एक लगा जा, गिरिराज की शरण में।"

और बहुत–सी ग्राम बधुऐं परिक्रमा के समय निम्न गीत गाती चलती हैं –

"मैं तो गोवर्धन को जाऊं मेरो वीर।
नॉय मानें मनवा, नॉय मानें मेरो मनवा।।
सात कोस की दऊँ परिकम्मा,
मानसी–गंगा नहाऊं मेरो वीर।
नॉय माने मेरो मनवा नॉय माने मेरो मनवा।।"

एक बार जयपुर हत्याकाण्ड का एक अपराधी गोवर्धन आया। जब उसने देखा कि कुछ लोग रिक्रमा दे रहे हैं तथा कुछ लोग दण्डवती–परिक्रमा कर रहे हैं। तब उसने लोगों से पूछा कि 'दण्डवती कतने दिन में समाप्त होती है?' लोगों ने कहा –'सात से दस दिन में।' उसने यह सोचकर कि, स दिन के अन्दर तो हमारे मुकदमें की पेशी ही है और फांसी का हुकुम तो होना सुनितश्चत ही। तब तक इस अंतिम समय में दण्डवती मैं दण्डवती ले लूं। उसके दण्डवती–परिक्रमा के र होने में मुकदमें के फैसले की तारीख बीच में ही बीत गई थी। दण्डवती कर जब वह जयपुर दालत में निग्रय जानने के लिए पहुंचा और अपने वकील साहब से पूछा–"क्या फैसला रहा?" वकील साहब उसे मारने को झपटे–"शुकराना नहीं देता तो महनताता तो देता–जब हुकुम बरी ने का सुना, तो तूं भाग लिया।" उसने कहा कि "वकील साहब, मैं तो गोवर्धन में दण्डवती–परिक्रमा रहा था और वहां से अब अभी–अभी आया हूं, आपसे पूछने।" वकील साहब ने कहा कि –"झूठ लता है, तूं मेरे पास अदालत में खड़ा हुआ था, बरी का हुकुम सुनकर तुरन्त ही भाग लिया।" ब उसने बार–बार कहा कि "मैं तो उस समय दण्डवती दे रहा था।" तब वकील साहब ने जज हब को जाकर सारा किस्सा सुनाया। सभी लोग यह जानकर आश्चर्य और भगवत्–कृपा का रण कर आनंद में डूब गए। तब जज साहब तथा वकील साहब दोनों लोगों ने बच्चों सहित आकर र्धनजी की परिक्रमा दी।

श्री गिरिराज महाराजजी की साक्षात्–कृपा की न जानें कितनीं गाथाऐं हैं, जिनको अनेकों ाभाग्यवानों ने बताना उचित नहीं समझा।

श्री राधारानीजी का प्राकट्य रावल ग्राम में तथा ठाकुरजी का ....व उनकी अनुजा जगदम्बा महामाया का प्राकट्य पास में ही स्थित गोकुल में हुआ था। इस कारण ब्रज की

महिमा अपार—अगाध है। जिसके दर्शन—परसन के लिए सर्वदेवस्वरूप सिद्ध महापुरुष तथा अन्य महात्भाजन आऐ—दिन यहां प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विचरण करते रहते हैं तथा यहां की परम—पावन ब्रज—रज का केवल आरोगन ही नहीं करते हैं वरन् उसको मस्तक तथा शरीर पर धारण किए रहते हैं।

श्री ठाकुरजी ने उद्धवजी से कहा था कि— "मोहि ब्रज बिसरत नाहीं।"

महारास के बाद उन्होंने कहा था कि "यद्यपि मेरी विभिन्न सभी लीलाऐं महत्वपूर्ण एवं मनोहर हैं तथापि न जाने रास का स्मरण होते ही मेरा मन न जाने कैसा हो जाता है :—

"सन्ति यद्यपि में प्राज्या लीलास्तास्ता मनोहराः।
नहि जाने स्मृते रासे मनो में कीदृशं भवेत्।।"

यह महारासलीला ऐसे ही महान् उन्मादकारी गुणों से परिपूर्ण है, यही कारण है कि भगवान को भी मोह लेती है।

'कुसुम सरोवर' की छतरी जहां पर बनी है वहां पर रत्न—सिंहासन पर श्री युगल—सरकार जी विराजते हैं और रात्रि में शयन करते हैं, यहीं पर श्रीनारद भगवान् तथा श्री उद्धव भगवान, श्री नारायण स्वामी तथा गुप्तरूपेण कुछ महात्मा सर्वत्र विराजते रहते हैं। कहा भी है —

"ब्रज—मण्डल को हृदय यहीं, है योगपीठ ललाम,
यहीं कुसुम—बन, कुसुम सरोवर, ग्वाल पोरवरा जान।
श्याम कुटी, निसिवासर बिलसत दोऊ भिन्न श्यामा—श्याम,
अनुजा उनकी यहीं बिराजे, मां जगदम्बा जान।
लता—पता से प्रकट होम कें श्री ऊधो भगवान,
श्रवण कराई परम भागवत, एक मास अनुमान।
नारदजी ने यांहीं कीनो, रास दर्श भर प्राण,
आज्ञा पाय दोऊ जन स्थित करत दोऊ जन गान।
मैय्या माथा टेकत जइयो।।"

और भी प्रार्थना की—

"राधा नाम लेय जो कोई, सहजहि दामोदर बस होई,
राधा नाम परम सुखदाई, भजतहिं कृपा करहिं यदुराई।
यशुमति नन्दन पीछे फिरिहैं, जो कोऊ राधा नाम सुमिर हैं,
स्वयं कृष्ण नहिं पावें पारा और तुम्हें को जानन हारा।
श्री राधा रासेश्वरी, रसिकेश्वर घनश्याम,
करहु निरन्तर बास मैं श्री वृन्दावन—धाम।"

श्री भागवत जी के रचयिता श्री वेदव्यासजी महाराज, श्री ठाकुरजी के १७ वें अंशावतार हैं। उनके गुरुजी महाराज नारद भगवान ठाकुरजी के तीसरे अंशावतार हैं। श्री व्यासजी का अवतार श्री राघवेन्द्र सरकार से पहले हुआ था।

'श्रीमद्भागवत् जी' का पूरा पाठ कोई नहीं कर सकता या सुन सकता है तो वह प्राणी 'श्रीमद्भागवत—सप्ताह' तो सुनने का या पढ़ने का तो प्रयत्न कर ही सकता है। अगर यह भी न

सके तो चतुष्पदी भागवतजी का पाठ कर ले या सुन ले। इन सब के होते हुए—संसार से लिपटे ए कोई एक या दो श्लोक तो पढ़ ही सकता है,—उसके सुनने के लिए श्रीठाकुरजी अपने समस्त रिकर सहित, श्री उद्धव भगवानजी, श्री नारदजी, श्री प्रह्लादजी, श्री ध्रुवजी और चतुष्व्यूह सहित धारते हैं। यह भाव लेकर श्रीमद्भागवतजी का सेवन करना चाहिए।

कुछ यात्री सन्त निवास पहले ही पहुंच चुके थे। तथा कुछ उस समय पहुंचे जब ीमद्भागवत्—प्रवचन हो रहा था।

यह जानकर कि श्रीमद्भागवत् जी में श्री ठाकुरजी का स्वरूप स्थित हैं, हम सबने ीतिपूर्वक—भक्तिभाव से कथा सुनी क्योंकि, श्रीमद्भावगत् जी की कथा में श्री ठाकुरजी अपने ब परिकरों के साथ सुनने को आ विराजते हैं। इसी प्रकार जब—जब जहां भी रानायण होती तो श्री हनुमान जी हाथ जोड़े विराजे रहते हैं।

परमपुनीत कथा को श्रवण कर सभी यात्रीगणों भक्तों एवं उपस्थित भगवत्—प्रेमियों ने अत्यन्त ादरपूर्वक प्रसाद पाया और सभी उपस्थित जन एकत्रित होकर श्रीभगवती जगदम्बा ब्रजेश्वरी जू े सम्मुख प्रणत् हुए और मन ही मन गाया :—

"देवि प्रपन्नार्ति हरेःप्रसीद प्रसीदमातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भव मुक्तिहेतुः।।
दुर्गे स्मृता हरषि भीतमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रयदुःखमयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।"

मां जगदम्बा सर्वशक्तिमान हैं, वह तीनों लोकों के प्राणियों के दुख हरती रहती हैं, उन्हें सबकी ावना का पता रहता है। वैसे तो सबने मन ही मन अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना ी। मां जगदम्बा सबको सब कुछ देने में पूर्ण समर्थ हैं पर, हमें तो यही मांगना चाहिए —

"अब मां कृपा करहु एहि भांति,
सब तज भजन करहुं दिन—रीति।"

मां ब्रजेश्वरी जू को प्रार्थना निवेदित करने के उपरान्त सभी यात्रियों ने परपूज्य श्री श्रीसन्तजी हाराज तथा पधारे हुए अन्य आदरणीय महात्माओं के श्री—चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया तथा ुभाशीष शिरोधार्य कर और उनकी पूजनीय आज्ञा लेकर सन्त—निवास के मुख्य द्वार पर आये ेखा कि एक बड़ी अच्छी प्याऊ, श्री महेन्द्रा कुमार सुशीला रानी ने अपनी बिटिया संध्या अग्रवाल म०ए० की स्मृति में बनवायी है।

यह सुन्दर दृश्य देखकर हम सबने यही प्रार्थना की की कि भक्त—प्रवर श्री महेन्द्रा कुमार ुशीला रानी भविष्य में ऐसी ही भक्तिभरी सेवा करते रहें और हम लोग भी इस योग्य हो जायें ो हम लोग भी इसी प्रकार ब्रज की सेवा कर अपना जीवन धन्य करें।

श्री ब्रज चौरासी कोस की परिक्रया के समापन पर गाते हुए विदाई हुई –

राधानारी की जय, महारानी की जय।
बोलो बरसाने वाली की जय जय जय।।
राधारानी की जय, महारानी की जय।
बोलो गह्वर–वन वासिनी की जय जय जय।।
राधारानी की जय, महारानी की जय।
बोलो राधाकुण्ड वारी की जय जय जय।।
राधारानी की जय, महारानी की जय।
बोलो कुसुम वन विहारिणी की जय जय जय।।
राधारानी की जय, महारानी की जय।
बोलो वृन्दावन–विलासिनी की जय जय जय।।
राधारानी की जय, महारानी की जय।
बोलो सेवा–कुंज वाली की जय जय जय।
राधारानी की जय, महारानी की जय।
बोलो निधिवन–विहारिणी की जय जय जय।।
राधारानी की जय, महारानी की जय।
बोलो मान–सरोवर वाली की जय जय जय।।
बोलो रावल ग्राम वाली की जय जय जय।।

हम सभी ने चलते समय परमपूज्य श्री सन्त जी महाराज की प्रार्थना की –

वानाद्रियोगिपदपंकज चंचरीकन्,
श्री श्रीनिवास गुरुवर्यपदाब्ज सक्तम्।
गोवर्द्धनस्थ प्रभुसन्तमनन्तकीर्तिम्
के०पी० मुनिं गुरुवरं सततं स्मरामि।।

इसके पश्चात् श्री सन्तजी ने, व्यवस्थापक श्री दीक्षितजी, भगवताचार्य व्यासजी, डाक्टर लोग, शेखर, रवि शर्मा, कृष्णकुमार, मित्तलजी तथा अन्य जिन महानुभावों, ने यात्रा को ठीक से चलाने में सहयोग दिया उनको भी अपना प्रेम–पूर्ण शुभाशीर्वाद दिया और कहा कि जिन लोगों ने परिक्रमा मार्ग में जो थोड़ा–बहुत वर्णन लिखा है, वह जल्दी से आ जाये, ताकि वह एक ग्रन्थ कारूप ले सके।

।।श्रीऽस्तु।।



बाबा रामजीदास